महा
वासिष्ठे रामायणे निर्वाणप्रकरणं
हिन्दीभाषाटीकासहितम्

२०३४

2034

27
F complete

निर्वाण भाषा प्र० १

श्रीगणेशायनमः श्रीमद्गुरुपदाम्भोजद्वन्द्वमानन्दमन्दिरम् वन्देसन्देहसंदोहध्वंस
द्वन्द्वभ्रमापहम् १ यन्निर्वाणप्रकरणंतद्भाषामातनुषीमया गोपालरामकविनाक्रि
यतेपुरमण्डले २ श्रीमद्गुलाबसिंहस्यभूपालस्यमहामुदे देवभाषाऽनभिज्ञानांसुख
हृदगंहितावह ३ श्रीवाल्मीकिरुवाच उपशमप्रकरणादनन्तरमिदंशृणु त्वं
निर्वाणप्रकरणंज्ञातंनिर्वाणदायियत् १ वाल्मीकिमुनि कहते भए हे भरद्वाज उ
पशमप्रकरणकेउपरंत अबतूंमें निर्वाणप्रकरण एक सुण जो जांन्याहुवा निर्वाण
पदकों अवश्य देताहै १ कथयत्येवमुद्दामवचनेमुनिनायके अवलोकरसेमौन
उदार
स्थितेराजकुमारके २ हे भरद्वाज श्रीवसिष्ठमुनीश्वर उपशमप्रकरणकि अंतके वच

कैवल्य

न कहते होए राजकुमार श्रीरामजी श्रवणके रसविखें मौन कर स्थित होतसंते भेरी प

भारों के बाजे

प्रथम
टह शंखोंका शब्द होताभया एह सोंलमे श्लोक विखें कहेगा इसके साथ इस श्लोकका
सो हेतु से
संबंधहै तैसे आगे कहने जो चौदा श्लोक तिनोंका संबंधभी इसीकेसाथ जानना २
मुनिवागर्थनिहितमनस्यस्ततपःक्रिये राजलोकेगतस्पन्दे चित्रार्पितइवस्थिते ३ ।
वसिष्ठमुनीके वचनोंके अर्थ विखें स्थापित कियाहै मन जिसने त्यागिआहै तप अरु आ

तपस्या

चितनकरण
रीरक्रिया जिसने तप करिए मन करके बाह्य पदार्थोंका [illegible] ऐसा राजलोक होतसंते मा
नो निश्चल चित्रलिखित स्थितहै ३ वसिष्ठवचसामर्थं विचारयतिसादरम् लसदङ्गुलि
भङ्गेनमुनिसार्थेस्फुरद्भुवि ४ मुनिगणजोहै सो श्रीवसिष्ठवचनोंके अर्थकों आदरसं

हित विचार करते होत संते अंतर के यथार्थ निश्चय कों तर्जनी अंगुली के चेष्टा विलास कर तथा
भ्रुवों के स्फुरण कर बाहर प्रकट करते होत संते ४ विस्मयालोकनोल्लाससोत्फुल्लनयना
लिनि प्रत्यन्चिवर्णगम्भीरतरमज्जरि लीनगते ५ पतिव्रता स्त्रीगण जो है सो परम आश्चर्यरूप
अंतरात्मा के दर्शनानंद कर प्रफुल्लित नेत्ररूप भ्रमरों कर युक्त होत संते जैसे पुष्परस के आस्वा
दन के आनंद कर निश्चल निःशब्द भ्रमरों कर युक्त वृक्ष की पुष्पमंजरी होवै तैसे शोभा कों प्रा
प्त होते संते स्त्रीगण ५ खेवासरचतुर्भागदेशेदिनकरे स्थिते किंचिज्ज्ञानोदयात्सोम्ये किं
चिज्जुमसृपेयुषि ६ दिन का प्रहरमात्र शेष रहता है जिस ठौर तिस ठौर आकाश विषें मा
नो कथाश्रवण निमित्त सूर्य स्थित होत संते इस कारण तें किंचित् ज्ञान के उदय तें सौम्य हुवा
है फिर वियह हुवा किंचित् संताप पणे की कों प्राप्त होय ६ श्रवणायैव संश्रान्ते वितानस्यन्दमालि
ते मौनमरुति मन्दारमधुरामोददायिनि ७ पवन भी मानो मौन कर श्रवण निमित्त भली प्र
कार थांभ्या होत संते कैसा है पवन पुष्पों का जो है चंदुआ तिस के हिलने कर मानो मालाधा
री है मंदार पुष्पों की मधुर सुगंध दाई है ७ पुष्पदामस्तसुप्तास्तु महाभ्रमरपङ्क्तिषु ।
ज्ञातज्ञेयतयान्तः सम्यग्ध्यानवतीष्विव ८ पुष्पमालों विषें महाभ्रमर पंगतिआं सु
प्त होत संते मानों आत्मतत्त्व के अनुभव कर निश्चय कर दृढ ध्यान वतीआं होइआं ८ ।
मुक्ताजालकलापोन्तर्गतास्वन्तरभूमिषु कचत्पपगतस्पन्दं तोयेप्रोतमिवास्थिते ९ ब
हुत मोती लगे होए हैं जिनों विषें ऐसे जो जालाकार भूषणरूप वाई के चारों ओर आ
छादन वस्त्र हैं तिनहों के मध्य विषें जो वाई का स्थान तिस विषें श्रवण निमित्त जल स्थि
त हुआ मानो बडी इच्छा कर निश्चल मुक्तादिकों कि आ प्रभा करके चमकते होत संते ९

निर्वाण
भाषा
२

✓ तेजन

चिरकालदूरमार्ग

गृहान्तरं प्रविष्टेषु गवाक्षैर्दूरमंशुषु । विश्रामार्थमिवार्ऽद्रीर्णं नभःपान्थेषु शीतलम् १० सूर्य
किरण चिरकाल दूर आकाश मार्ग विषें जाइकर थके होए झरोखें के मार्ग कर विश्राम ।
निमित्त मानो शीतल अवणशाला मध्य प्रवेश किए होत संते १० मुक्ताजालप्रभाजाल
भस्मनोद्धूलितात्मनि । धांसती वशामं प्राप्य द्विनदेहे दिवातपे ११ शांतल गाजो है दिन तिस
का देहरूप जो है धुप तिसने सभा विषें मोतीजालकों के जो है प्रभाजालरूप भस्म सो था
री है आप विषें तिसकर मानो शांति का सूचन करती है ११ करे लीलासरोजेषु शिखरेषु
च भूभृताम् । अलासरसमामोदाद् वृत्तिष्विव मनःस्विव १२ राजां के हाथों विषें तथा सिरों ।
विषें स्थित जो हैं लीलाकमल सो मधुर रसवाला श्रीवसिष्ठ का उपदेश सुनकर आनंद के
प्रकटता तें मानो बाहर विकास वृत्ती तें रहित होए जैसा राजां के मन बाहर वृत्ती तें रहित हो
ए तैसें १२ बालकेषु ऽन्तलोकेषु लीलापक्षिषु सादरम् । भोजनार्थं वधूलोक प्रेषयन्त्यऽनार
तम् १३ बालक तथा अन्तनीलोक तथा पंजरों विषें स्थित शुक आदिक लीला पक्षी ए
ह सिताबी भोजनार्थ स्त्रीजनों को आदर करके वारंवार प्रेरण करते होए १३ भ्रमद्भ्रमरपक्षो
त्थवातधूतरजस्थुलम् । कौमुदेपरि विश्रान्तेचामरेष्विति पल्मसु १४ किंचित् फूल्ले जो नाये ।
तिनकी रज भ्रमते भ्रमरों के परों के पवन ते उडकर चामरों विषें तथा नेत्रों के रोमों विषें
विश्राम करती होई १४ रश्मिषु ऽन्गृहोन्मुक्त छायाजालभयादिव । गवाक्षादिविवेशुर्यप्रवि
ष्टेषु गृहान्तरम् १५ परवर्तों की गुफाओं तें छूटे जो छाया समूहरूप अंधकार तिसके भय तें भा
जकर झरोखादि मार्ग करके छुपने निमित्त सूर्यकिरणं घर के मध्य प्रवेश करते होत सं
ते १५ आसीद्दिनचतुर्भागसज्जावेदनतत्परः । भेरीपटहशङ्खानां दिक्कुञ्जोदरको ध्वनिः १६

सोवने

दिनका चतुर्थ प्रहर शेषहै पटह जनाउने विखें तात्पर्य जिसका ऐसाशब्द भेरी पटह शंखोंका
हुआ दिशांके मुखोंको पूरण करणे वाला शब्द हुआ १६ तेनतत्तारमव्याप्त वचोन्तर्धानमाय
यौ मौनंजलदनादेनमायूरइवनिस्वनः १७ तिसशब्दकर वसिष्ठ मुनीका अति हुआभी वच
न लुप्त गयाहै जैसे मेघ शब्दकर मोरका शब्द लुप्त जावे १७ आतवातवपत्तालिः पञ्जरस्था
खगावली भूकम्पेतरसा ताली पल्लवेववनावली १८ पंजरांविखें पक्षिओंकीपंगति पूर्वशब्दकरके
संचलितहोई तिनोंकी पक्षोंकी पंगत बहुत चलितहोई जैसे भूकंप कर वनपंगति कंपित होवे तब
कंप कर तालीवृक्षकेपत्र बहुत कंपित होवें १८ आययुर्भयविव्रस्ता बालाधात्रीकुचान्तरम् सार
वंश्रावृषीवाहाः शान्तंमन्दकोटरम् १९ शब्दके भयकर कंपित होए बालक करतके होए दाईयों रते
के स्तनोंके मध्यविखें प्रापत होतेभए जैसे वर्षा ऋतु विखें मेघ शब्द करते होए ऊंचे दो अंगोंके म
ध्यविखें प्रापत होवें १९ उत्तस्थुरवतंसेभ्यो भूभृतांभ्रमरस्रजः ईषत्करालवाहाम्भः सरिद्भ्यस्तुकणा
इव २० राजोंके सिरों विखें जो कमलभूषणहैं तिनोंते भ्रमरमाला उठतीयां होइयां जैसे स्व
ल्पक्षोभवालाहै प्रवाह जिनका तिनतों नदीयोंते जलकण उठें २० एवंप्रवृत्ते तस्मिन्त
हे दाशरथेजदा प्राप्ते वासरवृद्धत्वे शान्ते शङ्खस्वनेशनैः २१ संहरन्नस्तुतंवस्तु वचोमधुरवृत्तिम
त् उवाचमुनिशार्दूलः सभामध्येरघूद्वहम् २२ इसप्रकार दशरथका सभामंदिर क्षोभकों प्राप
तहोतसंते चतुर्थ प्रहररूप जोहै वृद्धदशा तिसकों दिनप्राप्तहोतसंते शंखादिकोंका शब्द ।
शनैःशनैः शांत होतसंते २१ मुनिशार्दूलश्रीवसिष्ठ कहना योग्य जोहै ग्रंथ तिसकों समेटताहु
आ सभामध्यविखें मधुरवचन रघुकुलका उद्धार करणेवाला जोहै श्रीराम तिसकों कहता ।
भया २२ राघवाऽनघवाजालं मयैतन्नृलिसारितम् तेनचित्तखगं बद्धाकोडीकृत्यात्मलोनय २३

निर्वाण
भाग २
3

दूषापवर्हित राम मैंने वाणीरूपजाल पसारिआ है इसजालकर चित्तरूप पक्षीकों हृदयविखें रो
ककर आत्मस्वरूपकों प्रापतकरो २३ कश्चिद्दहीतोभवता मद्गिरामर्थईदृशः त्यक्त्वाद्वैधमतीएो
हंसेनेवाम्भसः पयः २४ मेरिआं वाणीआं आत्तय अर्थ हेराम भ्रमत्यागकर तैंनें ग्रहण
किआहै क्या जैसेहंस जलत्यागकर दुग्ध ग्रहण करताहै तैसे २४ विचार्यैतद्दशोवेलास्वधियैवंपु
नःपुनः अनेनैवप्रयासाथोगंतव्यंभवताधुना २५ हेराम मेरे वचनांकों अपनी बुद्धिकर वारंवार ।
भलीप्रकार विचारकरके वासनाक्षय मनोनाश प्राणायाम ज्ञानाभ्यास इसमार्ग करके तैंमैंने चल
णा २५ अनयैवधियाराम विहरन्नेवबध्यसे अनयापान्थःपतस्याशु विन्ध्यखातेयथागजः २६ हेरा
म इसविचार बुद्धिकर वर्तदे क्या तूंम वंधनकों न प्रापत होवेंगा औरप्रकार वर्तेंगा तूंम अंध वि
डोंगाजन्ममरण खोईविखें जैसे विंध्यपर्वतकी खोईविखें हाथी गिडताहै २६ त्यज्यहीतधियारा
म मद्वचोनकरोषिचेत तदनस्यवटेपतस्यदीपोवान्धोनिशास्विव २७ हेरामबुद्धिकर भलीप्र
कार निश्चयकर मेरावचन नकरेंगाजब तबतूंम संसार गर्तविखें गिडेंगा जैसे अंधा गर्तवि
खें गिडताहै अथवा रात्रविखें दीपकविना पुरुष गर्तविखें जैसे गिडताहै तैसे २७ असंगे
नयथाप्राप्तो व्यवहारोऽस्यसिद्धये इत्येवंशास्त्रसिद्धान्त मादायोदारवान्भव २८ मैंने जो अर्थ कहिआ
है तिसके सिद्धि निमित्त जो प्रारब्धकर प्राप्तहोवे व्यवहार सो असंगकैर करणा एहु सर्वशास्त्रों
का सिद्धांत मनविखें धारके एणें आत्मज्ञानवान् होगे २८ हेसभ्या हेमहाराज रामलक्ष्मणभूमिपाः
सर्वएवभवन्तोद्य तावद्यापारमाह्निकम् २९ कुर्वन्त्वस्यहिदिवसःप्रायःपरिणतःकलिः शेषंविचारयिष्या
मोविचारंप्रातरागताः ३० हेसभाकेलोको हेमहाराजदशरथ हेराम हेलक्ष्मण हे राजेंद्र अवतुम
सब दिनकाकार्य स्नान पूजादिक करो २९ एहदिनबहुत वितीत हुआहै तुम प्रभात आवोगे शेष
हमं विचारकरेंगे ३० श्रीवाल्मीकिरुवाच इत्युक्तवतिमुनिनातेनसासर्वैवतदासभा प्रोत्तस्थोपसवर्नात

सविकासेवपद्मिनी २१ वाल्मीकिरुवाच हेभरद्वाजश्रीवसिष्ठमुनिने ऐसी आज्ञा जबकिदी
तब सो सारीही सभा कमलसरखी शीघ्र उठीहै जैसे प्रफुल्लित कमलों वाली सरसी उठे २१
राजानः स्तुतराजानः कृतराघववन्दनाः परिकृतवसिष्ठेते जग्मुरात्मनिवेशनम् २२ राजोंने राजा
दशरथकी स्तुतिकरीहै श्रीरामको वंदना करीहै सबनो श्रीवसिष्ठको प्रणाम करस्तुतिकरी स-
ब अपने स्थानोंको गए हैं २२ विश्वामित्रेणसहितो वसिष्ठोगान्नमाश्रमम् अस्थावासनाकुसुमा
न्नमस्कृतनभश्चरः २३ शोभावान् वसिष्ठमुनी ब्रह्मादिक देवोंको नमस्कारकर विश्वामित्रके सहि-
त अपने आश्रमको जाउने निमित्त आसनते उठतेभए २३ दशरथप्रमुखयो राजानोमुनयस्तथा ।
यथानुरूपंवकारमनुगम्यमुनिंचिरम् २४ दशरथादिकराजे तथामुनी यथायोग्य उपदेशाकन्हा जो
है वसिष्ठमुनी तिसके पीछे गमन करते भए आश्रमपर्यंत २४ आपृष्ट्याके विदग्राने यथुः के
चिद्धनान्तरम् केचिद्राजगृहं सद्मो भृङ्गाःपद्मोच्चिताइव २५ वसिष्ठमुनीको पूछकर कोई आ
काशकोंगए कोईवनमध्यगए कोई राजमंदिर गए जैसे भ्रमर कमलोंते उठकर अपने अपने स्था
नों विषें जावें २५ वसिष्ठपादयोस्त्यक्त्वा पुष्पाञ्जलिमनाविलम् दारैरनुगतोराजा प्रविवेशगृहान्तर
म् २६ श्रीवसिष्ठजीके चरणों विषें निर्मलपुष्पांजलि समर्पणकर पिछे चलतिआं स्त्रियोंसहि
त राजादशरथ अपने गृहमध्य प्रवेश करताभया २६ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नाः प्राप्तस्याश्रमंगुरोः
अभ्यर्च्यचरणौभक्त्याराजमुर्व्यमन्दिरम् २७ अपने आश्रमको प्राप्त हुवा जो वसिष्ठमुनि ति-
सके चरणोंको भक्तिकर पूजकर राम लक्ष्मण शत्रुघ्न राजमंदिरको आउतेभए २७ सदनानि समा
साद्य श्रोतारः सर्वएवते सस्नुरानर्चुरभ्येत्य देवान्विप्रान्पितॄंस्तथा २८ सबहीश्रोता घरोंको आ-
इकर स्नानकरतेभए देवपितरोंको पूजतेभए ब्राह्मण अतिथीको सन्मुख आइकर पूजते-
भए २८ यथाक्रमंस्वमन्यानेविप्राद्यैश्चपरिकृतैः समंबुभुजिरेभोज्यं वर्णधर्मक्रमोदितम् २९
ब्राह्मणादिकोंसाथ तथा कुटुंबसाथ चाकरोंसाथ वर्णधर्मक्रमकर शास्त्रने कहिआ जो भोज-

महासरः

नयोग्य अन्नादिक सो भोजन करते भए ३९ अस्तं गते दिनकरे समं दिवसकर्म्मभिः अभ्यागते रात्रि
करे समं रजनिकर्मभिः ४० दिनके करणेवाला सूर्य दिनके कर्मोंके सहित अस्त हुआ रात्रके कर
णेवाला चंद्रमा रात्रके कर्म्मोंके सहित आया जब ४० स्थिता तत्तल्पकुशाशेषशयनेष्वासनेषु च।
भूचरा मुनिराजानो राजपुत्रा महर्षयः ४१ तब पट्टवस्त्र युक्त शय्या विषें आसनों विषें भूमि
विषें विचरणेवाले राजे राजपुत्र तथा मुनी महर्षी कुशाशय्यां विषें कुशाऽऽसनों विषें स्थित होते
२ ४१ संसारोत्तरणोपायं वसिष्ठवदनेरितम् यथावदेकाग्रधियश्चिन्तयामासुराहताः ४२ संसा
रतें उतरणेका उपाय श्रीवसिष्ठजीके मुखतें जो प्रकट हुआ तिसकों एकाग्र बुद्धि कर आदर सहि
त यथावत् चिंतन करते भए ४२ ततः प्रहरमात्रेण निद्रामामुद्रितेक्षणाः यत्नस्वमुन्दरीमीयुः पद्मा
इव दिनार्थिनः ४३ रात्रका प्रहरमात्र जब गयाहै तब मुखकमल मुंदेगए प्रेरहस्सों कर सुंदर निद्रा
कों प्राप्त भए जैसे कमल दिनकों चाहते हैं ते से दिनकों चाहते भए ४३ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नाः प्र
हरत्रयमेव तत् वासिष्ठमुपदेशं ते चिन्तयामासुराहताः ४४ राम लक्ष्मण शत्रुघ्न रात्रके प्रहरत्र
यपर्यंत वसिष्ठमुनीके उपदेश वचन सब चिंतन करते भए ४४ प्रहरस्यार्द्धमात्रं ते ततश्चामुद्रिते
क्षणाः अनुभूतवन्तो निद्रां तत्क्षणविद्राविनश्रमम् ४५ तीन प्रहरोंके उपरंत अर्थप्रहरमात्र किंचित्
मुंदे गए नेत्र तिन्होंके उत्तम स्वप्नोंकर युक्त निद्राकों प्राप्त भए क्षण विषें श्रम दूर किया ४५ इ
ति शुभमनसां विवेकभाजां मधिगततत्त्वसारतयोदिताशयानाम् अभजत विरतिं तदा त्रियामा मलिनति
शाकरवक्रतां जगाम ४६ इति श्रीमोक्षोपाये निर्वाणप्रकरणे दिवसव्यवहारवर्णनं सर्गः १।
इति चलदेशांदिनम् १ ए ऐसे शुभ मन सहित विवेक सहित सार आत्मतत्वके ज्ञान कर प्रफु
ल्लित हुआ हृदय जिनका ऐसे जो रामादिक हैं तिनोंकी रात्रि निवृत्त होती भई अरुणोद
य कर रात्रका मुख चंद्रमा मलिनताकों प्राप्त होता भया ४६ इति निर्वाणप्रकरणभाषायां १
श्रीवाल्मीकिरुवाच ततः क्षिप्रेन्दुवदना पर्याकुलतमःपटा हीयमानाबभोद्यमा विवेकस्ववासना।

श्रीवाल्मीकिरुवाच हे भारद्वाज मलिन चंद्रमा है मुख जिसका जीर्ण ग्रंथकार है वस्त्र जिसका ऐ
सी रात्रि क्षीण होती शोभती भई जैसे विवेक होने सें ते वासना क्षीण होती शोभती है १ सर्वेषस्तन
याला के हृदय मानौ परेऽचले श्यामालीकावतंसाभ तापकानिकरोदधौ २ निकसे हैं किरण
जिसके ऐसा जो है उष्ण स्वभाव सूर्य सो ऐसे प्रकाश कों धारता भया कैसे पूर्व दिशा विषे है मुख जिनका
ऐसे जो लोक हैं तिन्हों ने देखिआ जो पूर्व दिशा विषे पर्वत तिसके शृंगों ने रोकिआ जो प्रकाश सो ही तिं
शृंगों के मध्य से प्रकट भया लंबा किया हाथ जैसा पश्चिम मुख लोकों ने देखिआ जो पश्चिम पर्वत ति
सके सिर विषे शुक्रादिक भूषण जैसा प्रकाश ऐसा लोकों ने कल्पना कर देखिआ २ अवश्यायक
णकर्षी पराम्रष्टेन्दुमण्डलः ज्योत्स्नाकवलनालोको बभौ प्राभातिकोऽनिलः ३ प्रभात का पवन ऐसा शो
भता भया कैसा चंद्रमंडल का स्पर्श किया जिसके बिंबकों खेंचता भया सूर्यप्रकाशरूप जो नेत्र प्रका
श तिसकरके ग्रास निमित्त चंद्रिका कों देखता है जैसे नेत्रों करके देखकर भोजन करीता है तैसें ही चंद्रि
का कों देखकर भोजन करता भया मानो क्षुधा लगा कर आता है पवन ३ रामलक्ष्मणशत्रुघ्ना स्त्यायाया
नुचरैः सह ययुर्वन्दितसंध्यास्ते पुण्यं वासिष्ठमाश्रमम् ४ राम लक्ष्मण शत्रुघ्न आसन तें उठकरके स्ना
न संध्या करके अनुचरों सहित श्रीवसिष्ठजी के पुण्य आश्रम कों गए ४ तत्र वन्दितसन्ध्यस्य निर्गतस्यापि स
द्मतः मुनेर्ववन्दिरे पादौ पदोर्दत्तार्घ्यसन्ततिम् ५ तिस आश्रम विषे संध्या वंदन करके आश्रम सें बाहर आ
ए जो वसिष्ठ मुनि तिनों के चरणों कों वार वार अर्घ्य देकर चरण वंदन करते भए ५ क्षणेन सदनं मौने मु
निब्राह्मणराजभिः हस्त्यश्वरथयानैश्च पूर्णमेनीरन्ध्रतां ययौ ६ वसिष्ठ मुनि का आश्रम क्षणमात्र में मु
नि ब्राह्मण राजों कर हाथी घोड़े रथ सवारिआं कर शनैः शनैः पूर्ण होता भया ६ अथासौ मुनिशार्दूल
स्तैर्वसहसेनया श्रृंदाशरथंकाले रामाद्यैरनुगतो ययौ ७ इसउपरांत वसिष्ठ मुनीश्वर तिस सेना
सहित ही रामादिक पीछें चलते हैं राजा दशरथ के मंदिर कों समय विषे जाते भए ७ तत्रैनं एवं संब
न्धः कृतसन्ध्यो महीपतिः दूरमार्गं विनिर्गत्य प्रजयामास सादरम् ८ तिस मंदिर विषे राजा दशरथ सं
ध्या वंदन कर वसिष्ठ मुनि के आगमन के प्रथम ही मुनी के मिलने निमित्त शीघ्र उत्साह युक्त होए दूर

मार्ग जाइकर मुनीकों आदरसहित ८ पुष्पमुक्तामणिव्रातैर्भूयो ऽधिकभूषितम् सभां प्रवि
विशुस्ते सर्वे विविक्षुर्विहरालिषु ९ पुष्प मोती मणि समूहोंकर महापूजा करते भए वसिष्ठमु
नि विशेषकर अधिक भूषित होए सो सब सभाविषें प्रवेशकर आसन पंगतिओं विषें बैठते भए
९ अथ तस्मिन्नवसरे ह्यललनाः सर्व एव ते ओताः समुपाजग्मुर्नभसश्च महीतलात् १० उपरंत तिस
समयविषे सर्व दिनके नबही सो श्रोता आकाशचर पृथिवीचर आउते भए १० विवेश सा सभा सौ
म्या कमलाम्भोज्याभिवन्दना बभौ राजसभा भोगशान्ताऽलातेव पद्मिनी ११ सो सभा परस्पर वंदना करके ।
वेवली भई जैसे राजा दशरथ वालीं शरीरकी चेष्टाकों त्यागता भया तैसेही सो सभा निश्चल शांत सौ
म्य निर्वात कमलिनी जैसी शोभती भई ११ यथाप्रदेशमेवाशु निविष्टेषु यथासुखम् तेषु तद्देशयो
गेषु विश्रान्तिमितराजसु १२ सभास्थानविषें आए जो ऋषि मुनि ब्राह्मण राजे सो प्रतिदिनके
जो अपने अपने स्थान हैं तिनों विषें यथासुख बैठते भए १२ मडुनिस्वागतरवे शनैः शममु
पागते सभाकोणे प्रविष्टेषु शान्तशब्देषु बन्दिषु १३ परस्पर कुशलप्रश्नका कोमल शब्द शनैः
शांत होतसंते सभाके कोण विषें बैठे जो भाट तिनोंका शब्द भी शांत होतसंते १३ तरसैवादिनेषा
सुश्रोतमभ्यागतेष्विव गवाक्षादिव जालेषु प्रविष्टेष्वर्करश्मिषु १४ उदय होइआं जो सूर्यकिरणां सो
शीघ्रही मानो कथाश्रवण निमित्त आउतीआं भइआं ऐसे रविआंके छिद्रों विषें प्रवेश किए होतसंते १४
सत्वरप्रविशच्छ्रोतृ हस्तस्पर्शघटोद्भवे मुक्ताजालझणत्कारे निद्रायामिव शाम्यति १५ सभाविषें शी
घ्र प्रवेश करते जो श्रोता हैं तिन्होंके हाथोंके परस्पर स्पर्शकर तथा अंगोंके टकरोंण कर उतपत हु
आ जो मुक्ताजालक भूषणोंका झणत्कारशब्द सो निद्रा विषें जैसे शब्द शांत होता है तैसे शांत भया जब
१५ कुमारः शंकरस्येव कचो देवगुरोरिव प्रह्लादस्येव शुक्रस्य सुपर्णस्येव शार्ङ्गिणः १६ वसिष्ठस्याननेरामः
शनैर्दृष्टिं न्यवेशयत् भ्रमन्ती भ्रमरी यद्वत्फुल्लपद्मे कलिनीम् १७ तब जैसे स्वामिकार्तिकेय शंकरके मु
खविषें दृष्टिकों स्थापित करे कच बृहस्पतिके मुखविषें प्रह्लाद शुक्रके मुखविषें गरुड विष्णुके मुख वि
षें तैसे श्रीरामजी वसिष्ठके मुख विषें शनैः दृष्टिकों स्थापित करते भए जैसे अंबर विषें भ्रमती भ्रमरीकों

प्रफुल्लितंकमल विषें इत्यादि समय विषें स्थापित करे तैसे १७ मुनिस्त्वंग्रुजितेनायतेनैवरघुनं
दनम् क्रमेणोवाचवाक्यंज्ञोवाक्यंवाक्यार्थकोविदम् १८ हे भरद्वाज उपरंत वसिष्ठमुनि वाक्योंका जा
ना रघुनंदनकों सर्वक्रम करके ही वाक्य करते भए सर्वक्रमकों नहीं त्यागते भए कैसा है रघुनंदन वा
क्यार्थके जानने विषें पंडित है १८ श्रीवसिष्ठउवाच कथितस्मरसियत्प्रोक्तं होमयारघुनन्दन वाक्य
मत्यन्तगर्वार्थं परमार्थावबोधनम् १९ श्रीवसिष्ठउवाच हे रघुनंदन मैंने सर्वदिनविषें कहिआ जो वाक्य
अत्यंतगंभीरार्थ परमार्थकों जनाउने वाला तिसको स्मरण करते हो क्या १९ इदानीमवबोधार्थं म
त्यत्वरिपुमर्दन उच्यमानंमयेदंच सृणुशाश्वतसिद्धये २० हे शत्रु मर्दन अब जो तुमी वाक्य जानके निमि
त्त मैंने कहीताहे तुमसुणो सदा स्थिरपदके सिद्धी निमित्त २० वैराग्याभ्यासवशात सत्वात्तत्त्वावबोधनात
संसारस्तीर्यतेतेन तेष्वेवाभ्यासमाहर २१ सर्वक्रमकरकेही कहते हैं मुनि हे राम वैराग्यके अभ्यासवशातें
तैसे तत्त्वज्ञानतें संसारतरीताहै तिसकारणतें तिनोंही विषें अभ्यासकरो २१ सम्यक्कृतावबोधेनतु
र्वोधेनपगागते गलितेवासनावेशे विशोकंप्राप्यतेपदम् २२ भलीप्रकार सिद्ध किया जोहै तत्त्वबोध
तिसकरंभ्रमक्तान क्षीण होतसंते शोकरहितपद पाईताहै २२ दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमहह्रोभयकोटिकम्
एकंब्रह्मैवहिजगत्स्थितंहिवपुषाततम् २३ देशकाल वस्तु परिच्छेदरहित नही किसे देखीहै एवं
[मर्यादा=] पर हद जिसकी ऐसा जो एक ब्रह्म सोही मायाकर हैतजगत स्वरूपकों प्राप्तभया २३ सर्वभावान
वच्छिन्नं यत्रब्रह्मैवविद्यते शान्तंसमसमाभासंतत्रान्यत्वंकथंभवेत २४ सर्व वस्तुके भेद रहित ब्रह्म
है काहेते ब्रह्मविषें सर्व वस्तुकल्पितहे कल्पितोंका भेद मिथ्याहै शांतहै ब्रह्म सत्तास्वरूपकर
भासमानहै सत्ताकैसीहै समों विषें भी समहै काहेते गोआदिक व्यक्तिंआं परस्पर भिन्नहैं ते
तिन्हों व्यक्तिंआं विषें गोत्वादिकजातिआं समहैं काहेते सबनां गोआदिक व्यक्तिंआं विषें गोः
गोः ऐसे एकाकारप्रतीत होती है समजोहैं गोत्वादिकजातीआं तिन्होंविषें ब्रह्मसत्ता सम
है ऐसाजो शांतरूप ब्रह्म तिसविषेंभेदकैसे होवे २४ इतिमत्वाऽहमित्यत्र मुक्त्वाभ्रमं वपुर्महा
न. एकरूपः प्रशान्तात्मासात्वात्मासत्वोभव २५ ऐसाब्रह्मस्वभावनिश्चयकरके अहंकारका

निर्वाण भाष्य ६

6

त्यागकरके जीवन्मुक्तस्वरूप व्यापक एकरूप प्रशांतात्मा साक्षात् स्वात्मस्वरूपहोउ २५ ना
स्ति चित्तं न चाविद्या न मनो न च जीवकः । एताः स्वकल्पनाः सम्यक् ब्रह्मण्येवमलाः २६ हेराम नचित्तहै
न अविद्याहै न मनहै न जीवहै यह अपनिश्चयां चित्तादिकल्पना ब्रह्मनें किये हैं २६ यास्संपदो या
श्चाहृष्टा याश्चभोगा याश्चदेषणाः ब्रह्मैव तदनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते २७ जोभोगयोग्य संपदाहैं
मैं जोभोगकारहनी हैं जो भोगरूणी विषें विद्याभासहैं जो भोगस्मरणहैं जो भोगेच्छाहैं सो
ब्रह्मही अनादि अनंत समुद्र जैसा फुरताहै २७ पाताले भूतले स्वर्गे तृणे प्राण्यणवेपि च द्वपय
रेतत्स्वरं ब्रह्म विद्धं नान्यदस्तिहि २८ पातालविषें पृथ्वीविषें स्वर्गविषें प्राणीविषें अंबरवि
षें सो परंब्रह्म ही तत्स्वरूप जानु दृष्टिकर देखीताहै द्वितीयवस्तु नहीं यही निश्चयहै २८ उपेक्ष्यहेयो
पादेयबन्धवो विमलावपुः ब्रह्मैव विगताद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते २९ उपेक्षाके योग्य त्यागनेयोग्य ग्र
हण करनेयोग्य जोहैं पदार्थ तथा बांधव संपदा शरीर अधिक प्रीतिविषय जोहैं सो सब ब्रह्मही अ
नादि अनंत समुद्र जैसा स्फुरताहै २९ यावदज्ञानकलना यावद्ब्रह्मभावना यावदास्था जगज्जाले तावच्चित्ता
नवलग= दिकल्पना ३० जौलौंई अज्ञानकल्पनाहै जौलौंई ब्रह्मभिन्नु जगतहै यह भावनाहै जौलौंई जगज्जालविषें स
नवलग= त्यकी आस्थाहै तौलौंई चित्तादिकोंकी कल्पनाहै ३० देहे यावदहंभावो दृश्येस्मिन्यावदात्मता यावन्ममेद
मित्यास्था तावच्चित्तादिविभ्रमः ३१ देहविषें जौलौंई अहंभावहै जौलौंई निश्चयकर दृश्यविषें आपममता
नवलग= करताहै तौलौंई चित्तादिक विभ्रमहै ३१ यावन्नोदितमुच्चैस्त्वं सज्जनासंगसंगतः यावन्मौर्ख्यं न संक्षी
णं तावच्चित्तादिनिम्नता ३२ सज्जनोंके प्रेमश्रद्धापूर्वक संगतें जौलौंई उन्नतताका उदयनहीं अरु मू
र्खता जौलौंई भलीप्रकार नष्ट नहीं होई तौलौंई चित्तादिकोंकी नीचताहै ३२ यावच्छिथिलतां याता
नेदं भवनभावनम् सम्यग्दर्शनसामर्थ्यात्तावच्चित्तादयः स्फुटाः ३३ हठतत्त्वदर्शनके सामर्थ्यतें सं
सारवासना शिथिल जौलौंई नहीं होई तौलौंई चित्तादिक प्रकटहैं ३३ यावदत्यन्तमन्धत्वं वैवश्यं
विषयाशया मौर्ख्यान्मोहसमुच्छ्रायस्तावच्चित्तादिकल्पना ३४ अज्ञान अंधकार जौलौंई है विषयोंकी
आशाकर परवशता जौलौंई है मूर्खतातें शरीरपुत्रादिकोंविषें मोहकी अधिकताहै तौलौंई चित्ता

नवलग=

दिकोंकी कल्पना है ३४ यावदाशाविषामोदःपरिस्फुरति हृद्वने अविचारचकोरोऽयं तावन्नास्य विशा
मलम् ३५ हृदयरूप वनविषें भोगाशारूप विषगंध फुरती है जौलौं तौलौं इहु आत्मविचाररूप
चकोर अंतर प्रवेश नहीं करता है ३५ भोगेच्छा नास्ति यस्य मनसः शीतलामलनिर्वृतेः छिन्नाशापाश
जालस्य तस्य यातश्चित्तविभ्रमः ३६ जिसके मनविषें भोगोंकी इच्छा नहीं शीतल निर्मल संतापशांति
का सुख है आशापाशजाल तुटि आहै तिसका चित्तभ्रम नीकलि होता है ३६ तस्मात्मोहपरित्यागात्रि
त्यशीतलसंविदः प्रोक्तः प्रशान्तचित्तस्य प्रबुद्धात्मिका चित्तभूः ३७ तस्मात्मोहके त्यागनेसें प्रशांतचित्त नि
त्यशीतल बुद्धिमान जो है पुरुष तिसने त्यागी जो है चित्तभूमिका सो प्रबोधफलवाली होती है ३७
असत्त्वतामिवानस्य मःवस्तु परिपश्यतः दूरस्थमिव देहस्थं मसत्त्वं चित्तभूःजतः ३८ जैसे दूरस्थि
त पुरुषका परिचय नहीं होता है जैसा अवस्तु जैसे मेहली मृगतृष्णाकार भासे असत्य अस्थिर तेसे आप
ने देहकों देखता है तिसके चित्तकी सत्ता किस कालमें होवे अर्थात् नहीं होती ३८ भाविताऽनन्तचिद्रू
परूपायात्मनः स्वात्मावलीनजगतः शान्तो जीवादिविभ्रमः ३९ श्रवणमनननिदिध्यासनसाक्षात्कारों
करके पोषित किया अनंत चिन्मात्रस्वरूप संसार विषें प्रसिद्ध जो है स्वरूप कर्ता भोक्ता तिसतें होरस्वरूप अ
कर्ता अभोक्ता आत्मा जिसका मनमें लीन होआ जगत् जिसको तिसका जीवादिभ्रम शांत होता है ३९ अ
सम्यग्दर्शनेष्वात्मन्मिथ्याभ्रमकारणम् अदृष्टे परमादित्ये परमार्थैकदर्शिनि ४० अपुनर्दर्शनायैव दग्धं सम्य
क्पर्णवत चित्तं विगलितं विद्धि वह्नौ हुतलवं यथा ४१ मिथ्याभ्रमोंका कारणका स्वभाव जिसका ऐसा जो नरहि
ज्ञानविरोधी अज्ञान नष्ट होतसंते केवल परमार्थदर्शनस्वरूप परमसूर्य उदय होत संते चित्तको अपुनरागम
लितजाण पुनः चित्तका दर्शन नहीं होता जैसे अग्नि विषें अतिसूक्ष्म पत्र दग्ध होवे तथा हुतबिंदु गलित अर्द्ध च:
होवे तिसका पुनर्दर्शन नहीं होता तैसे ४१ जीवन्मुक्ता महात्मानो ये परावरदर्शिनः तेषां याचित्तपदवी सास
त्त्वमिति कथ्यते ४२ चित्तका अभाव होतसंते जीवन्मुक्तोंका केसे व्यवहार होता है इस शंकाको वसिष्ठ निहृत करते
हैं हेराम जो जीवन्मुक्त जीवात्म परमात्मदर्शी हैं तिन्होंकी चित्तपदवी जो है सो सत्त्वनाम करके होती है
सत्त्वसतत्त्वरूपकोंप्राप्त होती है जैसे जल शुष्क होवे रेत विषें सत्त्वजलरेखा शेष रहे तैसे सत्त्वाकारसत्त्वचित्त है

निर्वाण
भाषा॰ प्र॰

७

लोकरागद्वेषरहित व्यवहार करते हैं ॥ ४२ जीवन्मुक्तशरीरेषु वासना व्यवहारिणी न चित्तनाम्नी भवति
सा हि सत्त्वपदं गता ४३ जीवन्मुक्तशरीरों विषें जो वासना व्यवहार करणेवाली है तिसका चित्तनाम नहीं हो
ताहै सो वासना सत्त्वरूपकों प्राप्त होतीहै ४३ निमग्नतसोहितत्त्वज्ञा निमग्नसमपदे स्थिताः लीलयाश्रमन्तीह सत्त्वसं
स्थिति हेलया ४४ चित्तरहित जो हैं ॥ तत्त्वज्ञानी निमग्नसमतापदविषें स्थित सो लीलाकरके व्यवहार करते हैं ॥ सं
सारविषें सत्त्वस्वरूपविषें दृढ स्थिति करके जगतविषें आदर हर्ष नहीं करते हैं ॥ ४४ शान्ता व्यवहरन्तोपि
सत्त्वस्थाः संयतेन्द्रियाः निःप्रपश्यन्त्यन्तर्ज्योति न द्वैतैक्ये न वासना ४५ जितेन्द्रिय शान्त सत्त्वरूपविषें स्थित हो ए
व्यवहार करते भी हैं ॥ तिन्होंकी व्यवहारदर्शनविषें द्वैत दृष्टी नहीं परमार्थ दर्शनाविषें एकत्वदृष्टि नहीं निःप्र
हू चैतन्यज्योतिकों ही देखते हैं ॥ तिसकरके तिन्होंकी द्वैत एकत्व वासना बाधित होतीहै ४५ अन्तर्मुखतया
सर्वे चिद्दृक्षो विजगद्भ्रमाः तुट्यन्ति निर्वर्तते नेष्विन्नादिविभ्रमाः ४६ चैतन्यभूमिविषें अन्तर्मुखतारूप सत्त्व
ते करके त्रिलोकीरूप तृणकी आकृति देताहै जो मुनि तिसके चित्तादिक विभ्रम निवृत्त होते हैं ॥ ४६ विवेकवि
शदं चेतः सत्त्वमित्यभिधीयते भूयः फलति नो मोहं दग्धबीजमिवाङ्कुरम् ४७ विवेककरके निर्मल जो चित्त है सो
सत्त्व कहीताहै सो मोहरूप फलकों नहीं करताहै जैसे दग्ध बीज अंकुरकों नहीं करताहै ४७ यावत्सत्त्वे वि
मूढानां पूर्वजन्मनयमिलिती चित्तशब्दाभिधानोक्ता विपर्यस्यति बाधतः ४८ विमूढजनोंके अंतर चित्तरू
हूनाम करके कही जो वासना सो जो तोई होतीहै तो तोई वारंवार जन्म देणेवाली होतीहै ज्ञानकरके सत्त्व
रूपा होई वासना जन्मनिवृत्तिरूप विपरीतकार्यकों करतीहै ४८ आप्तप्राप्यो भवान्राम सत्त्वभावमुपागतम्
चित्तं ज्ञानाग्निना दग्धं न भूयः परिरोहति ४९ हे राम पावना योग्य जो वस्तु है सो तमने पायाहै तुम्हारा
चित्त सत्त्वभावकों प्राप्त होया ज्ञानाग्नि करके दग्ध होया फेर नहीं जन्म अंकुरकों उतपन करेगा ४९
संरोहतीव त्रणाविद्धं यथा परशुनापि तत् न तज्ज्ञानाग्निनिर्दग्धं प्रबोधविशदं मनः ५० जो मन धनकी भू
षणाकर पुत्रकी एषणाकर लोककी एषणाकर वेधिआहै सो मन जन्मरूप अंकुरकों कढताहै जैसे प
रशुकरके काटिआ अग्निकर वो दग्ध किआ तृणआदिक अंतर बीजशक्तिकरके वेधिआ हुवा फेर उग
ताहै तैसे ज्ञानाग्निकरके अनिर्दग्ध होई ई षणारूप बीजशक्ति जिसकी ऐसा जो मन प्रबोधकरके निर्म

अवलग्न
तवलग्न

ल सो नहीं उगता है ५० ब्रह्मवृंहैवविजगज्जगद्ब्रह्मेहस्ताम् नानयोर्विद्यते भेदः स्थितं ब्रह्मणोरिव ५१
ब्रह्म की जो है यातें चितरूप करके वृद्धि सो जगत है जगत ब्रह्म स्वभाव वृद्धिवाला है जगत ब्रह्म का भेद अज्ञा
न करके ही है वास्तव नहीं जैसे चित्घन ब्रह्म का भेद नहीं तैसे ५१ चिन्मात्रस्तित्रिजगन्मरिचे तीक्ष्णताय था ता
न चित्रजगती भिन्ने तस्मात्सदसती मुधा ५२ चेतन के अंतर त्रिजगत चेतनरूप करके ही है जैसे मरिच विषें ती
क्ष्णता मरिच स्वभाव करके ही है इस कारण ते चित जगत भिन्न नहीं तिसते सत् असत् वस्तु का उत्पत्ति विना
श मायाकृत भ्रांति ही है ५२ शब्दशब्दार्थसंकेतावासनेदन संविदः चिदाकाशतादृग्भानं तस्य जातः सदसत्वतो।
५३ सतशब्द सतशब्द का अर्थ असतशब्द असतशब्द का अर्थ शब्द का अर्थ विषें संकेत संकेत कहिए अर्थबोधन
शक्ति एह सब वैदिक लौकिक व्यवहार विषें वासना मात्र ही है चेतनरूप नहीं है काहे ते चिदाकाश सत्ता तें भिन्न
ते सतशब्द का अर्थ तथा असतशब्द का अर्थ भासता है चिदाकाश ही परमार्थ वस्तु सत असत शब्द का अर्थ
है तिसतें सत असत की भेदबुद्धि का त्याग कर ५३ अचिन्मयत्वान्नासि त्वं स्वात्मा किमिव रोदिषि अचिन्मा
यत्वे जगतामभावे कल्पनं कुतः ५४ तुम राम नामा शरीर सत्य असत्य भावे आत्मा आप नहीं हो काहे
ते शरीर को जडता तें जन्ममरणादि दुःख भय तें काहे को रोते हो सर्व जगतों का चैतन्यतें विलक्षण
ता निश्चय अथवा अभाव निश्चय होता संते शरीरादिकों की कल्पना तुम को कहां ते होती है ५४
चिन्मयं चेत्सदा सर्वं तच्चित्त्वं प्रविचारय शुद्धं सत्वमनाद्यंतं तत्राऽङ्ग कलनाकुतः ५५ जब तुम चित भेदरू
प जडता को त्यागकर सब जगत को सदा चैतन्य स्वरूप मानते हो तब तुम चैतन्य स्वभाव को भली प्रकार वि
चारो विचार कर शुद्ध निर्भेद एकरस सत आदि अंत रहित भासता है ऐसे स्वरूप विषें शरीरादि कल्प
ना कहां ५५ चिदात्मासि निरंशोसि पारावारविवर्जितः स्वं स्मर निजं स्फारं माऽस्मृत्वात्मानमितो भव ५६ हे राम
तुम चित्स्वरूप आत्मा हो अंश रहित हो पारावार से रहित हो ऐसा अपना स्वरूप स्मरण करो स्वरूप
को विस्मरण कर छोटा शरीररूप मत हो ५६ गोत्वसत्तां गतः सर्वं मत्सर्वं भावयोदयी तादृशो सि शिवाऽसि
चिदसि त्वं असि व्यसि ५७ तिस अपनी सर्वात्मा स्वरूप स्थिती को प्राप्त होया तुम परमानंद लाभ रूप उदय
वाला होइकर परिच्छिन्न जगत को सत्य स्वभाव करो हे राम तुम ते [illegible] हो [illegible] चेतन हो ब्रह्मस्वरूप हो

नहो=

जेसाहै वास्तवपरोत्त॥

निर्वाण भाषा स॰ २

४

चिच्छिलोदरमेवासि नासि नानात्मपात्मना । यो सि सोसि नसोसीव सदसत्सदसत्प्रभाः ५८ हे राम तूं चैतन्यशिला
सार हैं वास्तव नानारूप स्वभाव नहीं तथापि नानारूप निषेधकी साक्षी निषेधतें परे तूं हैं जो तूं है सोही तूं है
मनवाणीकी गति तेरे विषें नहीं तूं प्रतीत नहीं जिस्तें तूं स्वयंप्रकाश है सत तूं है असत तूं है ५८ यः
पदार्थविशेषणैर्नित्यं नेहाप्यवसीयते तदसत्सदसत्स्वस्थ चिद्घनात्मन्नमोस्तु ते ५९ जो सर्वपदार्थों का परस्पर भेद है सो
असत शब्द का अर्थ है सो तूं नहीं इसतें सत है तूं सो पदार्थों का परस्पर भेद घटादिक जो हैं सत तिनका धर्म है साध
र्म सज्ञा जाति है ऐसी शास्त्री घटावघटादिकों ने कल्पना किई है ऐसी कल्पित सज्ञा तेरे विषें नहीं इसतें तूं असत है तूं
सदा स्वरूप विषें स्थित है हे चिद्घन आत्मस्वरूप राम तेरे ताईं नमस्कार हो ५९ आद्यन्तवर्जितविशालशिलान्तरा
ल संपीडु चिद्घनवपुर्गगनामलत्वम् । स्वस्थो भवाजगरपल्लवकोशरेखा लीलास्थितावलजगज्जय ते नमस्ते ६० इति मो
क्षोपाये निर्वाणप्रकरणे विश्रान्तिसुदृढीकरणं नाम द्वितीयः सर्गः २ आदि अंत रहित विशाल स्फटिक शिला के
अंतर जैसा हृद जो है चिद्घनस्वरूप सो हे राम तूं है तेरे विषें दुःखादिक कुछ नहीं ऐसा आपको जानकर स्वस्थ
हो जे जगत् और विस्तीर्ण जो है तेसा रा चैतन्य शिला जठर तिस विषें प्रतिबिंबित पत्रको पाजे सी कल्पित जो है माया तिस
के पत्र रेखा जे सिथ्या जो वासनारेखा है तिन्हों वासनारेखों विषें मन की लीला करके अनंत जगत् स्थित है सो तेरे
ही सत्ता करके तेरे विषें भासते हैं ऐसे जो तूं है मायाके जीतनेहारे तेरे ताईं नमस्कार हो ६० इति मोक्षोपाये
निर्वाणप्रकरणे विश्रान्तिसुदृढीकरणं नाम द्वितीयः सर्गः २ श्रीवसिष्ठ उवाच भाविभूरितरंगात्मपयोरन्तरिवाम्बुधौ
या चिदन्तरनन्तानि जगन्त्यन्तस्तु सोभवान् १ श्रीवसिष्ठ उवाच समुद्र विषें उत्पन्न होते जो बहुते तरंग हैं तिन्हों
का आधार जैसे जलसमूह है तैसे जो चैतन्य अनंत जगतों को धारता है रूपापरहित राम सो चैतन्य आत्मा
तूं है यह संभावना कर १ भावभावनया मुक्तो भावाभावविवर्जितः चिदात्मन्संस्थितास्त्येव सदैवावास
नात्मयः २ हे चित्स्वरूप राम तूं द्वैतभावनासें रहित हो भाव अभाव सें रहित हो तेरे विषें वासनादिक क
हा स्थित हैं २ जीवोयं वासनेदं मितिचित्कलनैस्तदः इतोक्ष्यार्थयोरत्र कः प्रसंगोऽङ्ग कथ्यताम् ३ ए
ह जीव है एह वासना है यह बंधन है यह मोक्ष है इत्यादिक रूप करके चैतन्य ही स्वयंप्रकाश चमकता है चैतन्य
सें भिन्न शब्द और अर्थ इन्हों का कौन प्रकार संआत्मा विषे कौन प्रसंग है हे अंग प्रिय राम यह तें मे
ने कहणा अर्थात कोई प्रसंग नहीं ३ महानुभाव गंभीरभास्वरात्मा चिदर्णवः समाभिधानास्मि मितः॥

विशेषण॥=

सममसौम्योसितिष्ठोभव ४ रामनामा तुम महा आत्मचैतन्य समुद्र हो कैसा समुद्र तरंगरहित गंभीर प्र
काशमान निश्चल सम आकाशजैसा सौम्य क्षोभरहित ऐसे तुम हो ४ यथानलमिन्नमनलो दौष्ण्यं सौ
गन्ध्यमम्बुजात् कार्ष्ण्यं कज्जलतः शौक्ल्यं हिमान्माधुर्यमिक्षुतः ५ आलोकस्य प्रकाशात्मा तद्वदनुभूतिस्तथा चि
तेः जलाद्वीचिर्यथाऽभिन्ना चित्स्वभावात्तथा जगत ६ जैसे अग्निसे भिन्न उष्णता नही कमलसे सुगंध भिन्न न
ही कज्जलते कालिमाई भि० बरफते शुक्लता भि० गन्नेते मधुरता भि० तेजते प्रकाश भिन्न नही तैसे चैतन्य
ते अनुभव भिन्न नही अनुभव कहीए हत्तिप्रतिबिंबित चैतन्य जैसे जलसें भिन्न लहरी नही तैसे चित्स्वभा
वतें जगत भिन्न नही ६ चितोनभिन्नोऽनुभवो भिन्नो नानुभवादहम् नमत्तो भिद्यते जीवो नजीवाद्भिद्यते
मनः ७ मनसो नेन्द्रियं भिन्नं पृथग्देहस्त्वनेन्द्रियात् नशरीरात्तु जगद्भिन्नं जगतो नान्यदस्ति हि ८ मूला
धिष्ठान जो है ब्रह्मचैतन्य तिसतें अनुभव भिन्न नही अनुभव कहीए मायावृत्तिविषे स्थित चिदाभास
अनुभवतें भिन्न व्यष्टि समष्टि अहंकार नही अहंकारतें भिन्न जीव नही जीवसें भिन्न मन नही मनसें
इंद्रिय भिन्न नही इंद्रियसें देह भिन्न नही शरीरसें जगत भिन्न नही समष्टिशरीर ही जगत है जगतसें
भिन्न कछु नही ७ ८ एवं प्रवर्तितमिदं महच्चक्रमिदं चिरम् नच प्रवर्तितं किंचित्तचशीर्णं च नो चिरम् ९
एह दृश्य जगत महाचक्र चैतन्यने स्वरूपके विस्मरणतें अध्यास परंपरा करके वरताया है चिरकाल
परमार्थ दृष्टि करके तो कछुभी नही वरताया न शीर्ण न चिरकाल ९ संवेदनमत्र न क्वचन सर्वमेवमव
स्थितम् चिद्व्योमनि व्योमनि नकाश्चिद्भिन्नं किंचन १० स्वयंप्रकाश अनंत सबही जगत अखंड है चिदा
काश विषे चिदाकाश ही है न किसी विषे नजुदा है १० शून्ये शून्यं समुच्छूनं ब्रह्म ब्रह्मणि बृंहितम् सत्ये
विजृंभते सत्यं पूर्णे पूर्णमिवास्थितम् ११ शून्य विषे शून्य वृद्धिआहे ब्रह्म विषे ब्रह्म वधिआ है सत्य विषे
सत्य भासता है पूर्णविषे पूर्ण जैसा स्थित है परमार्थ दृष्टि करके एकरस है किंचित भेद नही ११ दृष्टा
लोकमनस्कारान्कुर्वन्नपि न किंचन संकरोत्यनुपादेयान्नेन सोव हि कर्तता १२ ज्ञानवान् बाहर दृष्टिदर्श
न अंतर संकल्पों को करता भी है नही कछु करता है काहे ते स्वरूपदृष्टि करके मन इंद्रियां विषे अध्यास नही
मिथ्यापदार्थों को ग्रहण योग्य नही जाणता है अज्ञानी को ही अध्यास करके कर्ता है १२ यद्गुणोर्पयत्वद्धा

साक्षिता

साक्षिता

निरालं
भाषा
६
९

चनदुःखायसखायते भावाभावेननीदेयमकर्तृत्वात्सुखदुःखयोः १३ जो वस्तु उपादेय बुद्धि करके ग्रह
ण करीती है सो वस्तु प्राप्तिक्षणविषें सुखदायक होती है आगे पीछे दुखदायक होती है उपादेय करी
ए ग्रहण योग्य वस्तु भाव जो दृश्य है तिसकौं असत्य जानि करके उपादेय कछु नहीं राग बुद्धि करके नहीं ग्रह
णकिई वस्तु सुखदुःखकों नहीं करती है १३ यथा नानाप्यसंनानैव खे खे खानीति नानात्वाः साध्यैकोप्यः
निमृत्यात्मालक्ष्यास्मजगतः क्रमः १४ जैसे खे खे खानि एक ताली समूह अनेकरूप भी है तथापि एक
ही है एक आकाश दो आकाश बहुते आकाश ऐश्वर्य करके सहित भी है तथापि अभिन्नत्व स्वरूप है
काहेते आकाश एक ही है तैसे आत्मा जगत एक दोह भेद अर्थ भेद भासता भी है अभिन्नत्व है काहेते जैसे
एक रज्जु एक सर्प एक दोह अर्थ भेद भासता भी है अभिन्नत्व है सर्प रज्जुते भिन्न नहीं तैसे जगत आत्मासे भिन्न न
हीं है १४ अन्तर्वोमाऽमलो बाह्ये सम्यगाचारखञ्जुः हर्षामर्षविकारेषु काष्ठलोष्टसमस्थितिः १५ अंतर आ
काश जैसे निर्मल होवै बाहर भली प्रकार आचार विषें तत्पर होवै हर्ष क्रोध विकारां विषें काष्ठ लोष्ट
सम स्थिति करे जैसे काष्ठ लोष्ट विषें अंतर हर्ष अमर्ष विकार नहीं होता है तैसे तू भी निर्विकार होवे
यथा वा तितंरा शत्रुः सद्यः संमारणोद्यतः नैमवा के विर्मिमिनं यः पश्यति स पश्यति १६ जो ही अत्यंत शत्रु
है शीघ्र मारणविषें उद्यम युक्त होता है तिसीकों सहज मित्र जो देखे सो आत्माकों देखता है एक ही
आत्मा सर्वत्र है शत्रु शरीर विषें भी मैं ही आत्मा हौं जैसे अपने शरीर विषें स्नानी प्रीत करता है तैसे ही श
त्रु शरीर विषें भी सहज अति प्रीति करता है १६ समूलकाषं कषति नदी तट दश वदु मम यः सोऽहं समरं च
सद्भर्षामर्षदोषहा १७ जैसे नदी तटवृक्षकों मूलसहित कारती है तैसे जो राग द्वेषकों समूल काटता
है सो हर्ष क्रोध दोषोंका नाश करता है संसारकी समस्त वासना भोगवासना रागद्वेषका मूल है १७ रागद्वेष
विकाराणां स्वरूपं चेन्न भाव्यते ततः सन्तोऽप्यसन्तोऽपि सेविताप्यसेविताः १८ रागद्वेष विकारोंका मूल स्वरूप
जब न विचारिए तब रागद्वेषरहित संत हैं एक पुरुष ऐसे प्रसिद्ध भी हैं लोकोंविषें तथापि असंत हैं न
रागद्वेषका मूल नाश नहीं किया रागद्वेष समयांतर विषें उत्पन्न होवेंगे सेवित किए भी असेवित हैं अर्थ है
न १८ यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते १९ जिसकों मैं कार

अहंकार

किसी कामारथा

ता हूं यह अहंकार नहीं जिसकी बुद्धि रागद्वेषकर लिपत नहीं होती है सो इन्हों लोकोंको मारता भी
है नहीं मारता है न मरता है १९ यन्नास्ति तस्य सद्भावप्रतिपत्तिरुदाहृता मायेति सा परिज्ञाता देव नश्यत्यसंश
यः २० जो वस्तु नहीं तिसकी सत्यता प्रतीत माया कही है शास्त्रों विषे सो माया अधिष्ठान जानने ही नष्ट होती
है इस विषे संशय नहीं है २० निःस्नेहदीपवच्छान्तो यस्यान्तर्वासनाभरः तेन चित्रकृतेनेव जितं तेनाविकारिणा
२१ जिसके अंतर वासनाभार शांत हुवा निःस्नेह दीपक जैसे शांत होता है तैसे सो पुरुष जो ज्ञानवान निर्विकार
है तिसने जीत पाई है जैसे चित्रपुरुष चित्ररूप शत्रुका तिरस्कार कर जीत पावे तैसे आत्मा विषे संसार अरु अज्ञा
न त्रिकाल विषे नहीं है जगदादिक भी कल्पनामात्र है २१ यस्योपादेयमिदं समस्तं पदार्थजातं सदसद्दशासु।
न दुःखदायाय सुखाय नैव विमुक्त एवेह स जीव एव २२ मोक्षोपायेषु ब्रह्मैक्यप्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ३।
जिस उत्तम पुरुषको यह सब भोगयोग्य पदार्थसमूह उपादेय नहीं ग्रहणयोग्य नहीं सो पदार्थ वियोग
दशा विषे दुःखदाइका निमित्त नहीं होता संयोगदशा विषे सुखका निमित्त नहीं होता सो पुरुष जीव
ता भी मुक्त ही है काहे ते सदसद्दशा विषे पदार्थों को मिथ्या जानता है अथवा आत्मरूप करके नित्य
प्राप्त जानता है सदसत् दशा कहीए उत्पत्ति विनाश दशा ऐश्वर्य दरिद्रता दशा आरोप अपवाद दशा २२ इ
ति मोक्षोपाये भाषायां ब्रह्मैक्यप्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ३ श्रीवसिष्ठ उवाच मनोबुद्धिरहंकार इन्द्रिया
दि तथानघ अचेत्यचिन्मयं सर्वं कुतो जीवादयः स्थिताः १ हे निष्पाप राम मनो बुद्धि अहंकार इंद्रियादि है जिस विषे
क यह सब अचेत्य चिन्मय है अचेत्य कहीए चिंतनयोग्य द्वितीय पदार्थका अभाव सो जीव जगत कहां
नहीं है
स्थित हैं एकेनैवात्मना हन्त नानातेयं महात्मना यथैकेनैव चन्द्रेण तिमिराप्यात्त्रदर्पणैः २ एकही आ
त्मा परमात्मा है तिसने ही मायाकरके यह भासमान नानाता अनेकरूपता अपनी सत्ताके संबन्धकरके आ
प विषे प्रकट कीनी है जैसे एक चंद्र ने ही तिमिरदृष्टि करके जल पात्रों करके दर्पणों करके अनेक चंद्र
स्वरूप प्रकट किये हैं।। २ भोगतृष्णाविषावेशो यदैवोपशमं गतः तदैवमस्तमज्ञानमान्ध्यमाधान्तयादिव ३
आत्मदर्शन करके भोगतृष्णारूप विषका आवेश दृढवासनारूप आवेश जब निवृत्त होता है तबही अज्ञान।
नष्ट होता है जैसे अंधकारके नाशते नेत्रोंके देखने की असमर्थतारूप आन्ध्यता निवृत्त होती है ३ अध्यात्म

की

निर्वाण भाषा स॰ ९०

शास्त्रमंत्रेण रक्षाविषविसूचिका हीयते भाविते नान्तः शरदा मिहिका यथा ४ अध्यात्मशास्त्र कहीए आत्मा का हृदय विषे लय करणे वाला वेदान्तशास्त्र भलीप्रकार विचारित किया हुआ महामंत्र है तिसकरके रक्षा रूप विष विसूचिका हीन होती है जैसे शरत् ऋतु करके मेघों की झडी हीन होती है ४ मौर्ख्ये हीन होते तने विद्धि चित्ते तामसवासनावम् विलीनाम्बुधरे व्योम्नि जाड्यं शान्तमनं गविद्वनः ५ अज्ञान नष्ट होते संते चित्त काम क्रोध लोभादिक बंधवासना हैं नष्ट हुआ जाण जैसे आकाश विषे मेघ निवृत्त होते संते शीतलता निवृत्त होती है विद्वन् विना ५ अचित्तत्वं गते चित्ते हीयते वासनाभ्रमः हारम्मुक्तासमावेशच्छिन्ने तन्त्राविवानघ ६ चित्त विनाश को प्राप्त होते संते वासनाभ्रम हीन होता है जैसे तन्तु तुटे मोती की हाररचना छुट जाती है तैसे ६ रघुनाथ विज्ञानाय शास्त्रार्थं भावयन्त्यये कृमिकीटत्वयोग्याय चैतसा संमिलन्ति ते ७ हे रघुनाथ जो शास्त्र का रहस्यार्थ छोडकरके शास्त्ररहस्य के विनाश निमित्त अन्यप्रकार करके कल्पना करते हैं सो कृमि कीट जन्म देणे वाला जो है पाप तिसके निमित्त रागद्वेषका रण जो है चित्त तिसके साथ मिलते हैं ७ नवतामरसाकारकान्तलोचनलोलता शान्तिमौर्ख्येहृत्तौ वाताते चलतां सरसो यथा ८ नव कमलाकार सुंदर स्त्री के नेत्र हैं तिन्हों विषे चंचलता मनोहर है पर दुर्बुद्धि कल्पना मूर्खता शान्त होते संते नष्ट होती है जैसे पवन शान्त होए सर की चंचलता नष्ट होती है ८ स्थिरता मुपयातोसि भावाभाव विवर्जितः पदे परमविस्तारे नभसीव प्रभञ्जनः ९ हे राम तुम परम विस्तार वाले पद विषे स्थिरता को प्राप्त हुए हैं, भाव अभाव की वासना से रहित हो, जैसे आकाश विषे पवन स्थिर होवे तैसे ९ मन्ये मद्वचनैर्बोधमागतोसि रघूद्वह विगताज्ञाननिद्रोन्तर्दयतिः परहेहिव १० हे रघुकुल के उद्धार करणे वाले तुम मेरे वचनों करके आत्मबोध को प्राप्त हुए हो अज्ञाननिद्रा अंतर दूर होई है जैसे तना परहों करके जागता है पटह कहीए नगारे वाले भारों के शब्द १० सामान्ये चलगन्त्येव जने कुलगुरोर्गिरः अमुत्सारमतेराम न लगन्ति कथं त्वयि ११ सामान्य जन विषे भी कुलगुरु कियां वाणियां हृदय विषे लगतियां हैं हे राम अति उदार बुद्धि तूं हैं तेरे हृदय विषे मेरियां कुलगुरु कियां वाणियां कैसे न लगेंगी ११ यन्नोपादेयवाक्यत्वं भावितेखिवचेतसा महचोनर्विशन्त्येते सत्तोः हृदये यथा पयः १२ हे राम मेरे विषे तैने यथार्थ उपदेश कर्ता चिंतित किया है इस ते मेरा वचन तेरे अंतर हृदय विषे प्रवेश करता है जैसे ऊचे हद के दोष विषे जल प्रवेश करता है १२

अपने चित्त करके

रत्नकों

वाक्यों के

अवश्य ग्रहण करले योग्य

अचित्त

८८

वयमिह हि महानुभाव नित्यं कुलगुरवो भवतां रघूद्वहानाम् मदुदितमिदमाशु धार्यमार्य शुभवचनं हृदि
हारवत्त्वयेति १२ मोक्षोपाये निर्वाणप्रकरणे चित्ताभावप्रतिपादनं नाम चतुर्थः सर्गः ४ हे महानु
भाव राम इस पृथिवी विषे सब इक्ष्वाकुवंशीयोंके विशेष करके रघुवंशीयोंके हम ही कुलगुरु
हैं इसकारणतें मैंने मेरा पढ शुभवचन हृदयविषे हे श्रेष्ठ हारजैसा शीघ्र धारणा १२ मोक्षो
पाये निर्वाणप्रकरणे चित्ताभावप्रतिपादनं नाम चतुर्थः सर्गः ४ श्रीराम उवाच अहो नु हंगतमिव
भवद्वचःपार्थभावनात् शान्तजगज्जालमिदं मय्यस्यमपि नाथ मे १ श्रीरामकहतेभये श्रीवसिष्ठकों हे
नाथ तुम्हारे वचनोंके अर्थके विचारतें मैं चैतन्य एकरस एक आत्मस्वरूपको प्राप्त हुआ हों य
ह आश्चर्य हुआ है मेरे आगे स्थितभी है यह जगज्जाल शांत भया है १ परमं नृःप्रयातोऽस्मि परमा
त्मनि निर्वृतिम् दीर्घाऽवग्रहसंतप्तेव वृष्ट्येव वसुधातलम् २ परमात्माविषे परम शांतिसुखको अंतर
प्राप्त हुआ हों जैसे पृथिवी मंडल चिरकालपर्यंत वर्षाके प्रतिबंधते संतप्त हुवा वर्षा करके शी
तल होता है तैसे २ शाम्यामि शीतलाकारः सर्वं तिष्ठामि केवलम् प्रसादमनुयातोऽस्मि सर्वो निर्वाणं यथा
३ शान्तिको प्राप्त हुआ हों शीतलस्वरूप हुआ हों केवल सर्व जैसे होवे तैसे स्थित हों निर्मलताकों प्रा
प्त भया हों जैसे क्षोभ करणेवाला हाथी सरतें बाहर निकसे सर निर्मल होवे तैसे ३ सम्यक्प्रसन्नमुखिलं
दिङ्मण्डलमिदं मुने यथाभूतं प्रपश्यामि विनीहारमिवाधुना ४ हे मुने इस सारे दिङ्मंडलको भलप्र
कार प्रसन्न यथार्थरूप सन्मात्रस्वभाव देखता हों अब जैसे नीहारते रहित होवे दिग्मंडल तैसे नीहार
करीए [illegible] जातोऽस्मि गतसंदेहः [illegible] गतरक्षिका रागनीरागनिर्मुक्ता [illegible] शीतलः ५ ।
संदेहरहित भया हों आशा [illegible] शांत होई राग वैराग्यतें निकृत्त भया हों नीहाररजसें रहित जैसे शरत्काल
का जंगल शीतल होवे तैसे शीतल भया हों ५ आत्मनेवात्मना नन्दं तत्प्राप्तोऽस्म्यन्तवर्जितम् रसायनरसास्वादोपम
नाशमुपगायते ६ अपने आपही अंतरहित तिस आनंदको अंतर प्राप्त भया हों जिस आनंद विषे अमृतरसका
स्वाद तृणरस स्वाद जैसा भासता है ६ अयाहं प्रकृतिस्थोऽस्मि मुदितोऽस्मि दिनोसिव लोकारामोऽस्मि रामोऽस्मि नमो
महां नमोस्तुते ७ अब मैं परमार्थस्वभावविषे स्थित भया हों प्रसन्न हो उदयको प्राप्त भया हों लोकजिसपरम

क्रीन्कार्ईं

निश्चिन्त:

लि

शुद्ध

करके

नाथ हे स्वामीजी २ जो आनंद है साक्षात्कारको योगी

निर्वाण भाग द्वि०

स्वरूपविखेंरमते हैं। सो राम मैं हौं मेरा रामनाम अब सफल भया ऐसा परमस्वरूप जो मैं हौं तिसमेरे
कौं नमस्कार हो ऐसे स्वरूपका दर्शन करावणे वाले जो तुम गुरु हो तुम्हारे कौं नमस्कार हो ७ तेनसंशया
लाः कलनाः सर्वमस्तंगतं मम रात्रिवेतालसंसारः प्रभात इव भास्करे ८ सो मेरे संशय सो भ्रम सर्व नाशकौं
प्राप्त हुए हैं जैसे रात्रि विखें भ्रांतिकल्पित वेतालका संचार अथवा ऊकु(?) प्रभात सूर्योदय होनेसें
ते नाशकौं प्राप्त होता है तैसे ८ निर्मले हृदि विस्तीर्णे संपन्ने हिमशीतले मनो निर्वृतिमायातं सरसी शारदी
यथा ९ मेरा हृदय निर्मल विस्तारकौं प्राप्त भया बरफ जैसा शीतल होया तिसविखें मन विक्षेपरहित विश्रा
मकौं प्राप्त भया है जैसे शरत ऋतुविखें महासर निर्मल होता है तैसे ९ कलङ्कमात्मनः कस्मात्कथं चेत्या
दिसंशयः त्वं निर्मलतां यातो मरुगाह्व(?) इवातमः १० चैतन्य एकरस आत्माकौं कलंक किस निमित्तसे आ
या है कैसे स्वयंप्रकाश विखें स्थित है असंग आत्माकौं आच्छादन करता है कूटस्थकौं कैसे विकारोंका अनुभ
व होता है इत्यादिक संशय निश्चयकरके निर्मलताकौं प्राप्त भया सर्व संशयोंका मूल अज्ञान है तिसका नाश
भया जैसे चंद्रमाके आगे अंधकार नष्ट होता है १० सर्वमात्मैव सर्वत्र सर्वदा भाविताकृतिः इदमन्यदिदं चान्यदि
त्यसत्कलना कुतः ११ सर्ववस्तु आत्माही है सर्वदेश सर्वसमय विखें स्फुरता है स्वरूप केवल आत्मा विखें एह
भिन्न एह भिन्न है ऐसी असत कल्पना कहांसे भई है ११ कोऽहं वंशागतं तावत्(?) ... आत्मा
नमेवेति विहसामि विकाशवान् १२ मैं आत्म सर्वप्रकाशमान निर्विकार सत्यरूप हौं ऐसे आत्मस्वरूपकौं
छोडकरके पूर्वकाल विखें तिसा अंतःकरणके वंशका कौन मैं होता भया एह मैं हसता हौं पूर्व दशाकौं
१२ आश्चर्यं(?) ... स्थितः १३ एह हौं जै
से परमार्थ स्वरूप स्थित हौं एह सर्वहौं आत्मा सो ब्रह्म हौं एह अब भलीप्रकार स्मरण किया है काहेतें
तुम्हारे वचनरूप जो अमृत प्रवाह तिसविखें स्नान किया है मैं तिसतें १३ अहो नु विततां भूमिमधि
रूढोऽस्मि पावनीम् इहस्थ एव यत्रार्को न पातालमिवास्थितः १४ अहो आश्चर्य है मैं इससभा विखें स्थि
त हौं परब्रह्म भूमिकाकौं आरूढ हौं आहे कैसी है परमपवित्र है परमविस्तारवाली है जिस भूमिकाके ह
षिकरके सूर्य पाताल जैसे भी अधः स्थित नहीं भासता है ब्रह्मलोकतें उपर(?) हेठ स्थित है सूर्य भूमि है हि

तले—

खिवेंवतीसूर्य चंद्रादिकप्रकाशनही

महद्वसत्तारूपेतायभावाभावभवार्णवान नमोनित्यंनमस्यायजयाप्यात्मात्मनात्मनि १५ उत्पत्तिविनाशरूप जो सं
सारसमुद्र है तिसको तरके तिसके पारस्वरूप जो है सर्वकी अधिष्ठानसत्ता तिसको प्राप्त होयाहों तिससतें हों १
आत्मा आत्माकरके आत्माविषें जयकों प्राप्त होयाहों तिसतें सबनेंसदा नमस्कार करणे योग्य है मेरेको १५
अनुभववशतो हृदब्जकोशे स्फुरमलिनासमुपागतेननाथ नववरवचसेहवीतशोकांचिरमुदितांमुदितामुपागतोस्मि
१६ मोक्षोपायेनिर्वाणप्रकरणेराघवविश्रान्तिवर्णनेनामपञ्चमः सर्गः ५ हेनाथ हृदयकमलकाशविषें
प्रकट स्थिरताकों भ्रमर जैसा प्राप्त भयाजो तुम्हारा श्रेष्ठवचन तिसकरके इसी देशकालविषें स्वात्माके अनु
भववशतें शोकरहित सदाही उदयकों प्राप्त होई मुदिता जीवन्मुक्तदशा तिसकों प्राप्त होयाहों १६ निर्वाण
प्रकरणभाषायांराघवविश्रान्तिवर्णनेनामपञ्चमः सर्गः ५ श्रीवसिष्ठउवाच भूयएवमहाबाहोशृणुमेपरमंवचः
यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया १ श्रीवसिष्ठउवाच हेमहाबाहो राम मेरापरमवचन फेरसुण तूं पर
मानंद आत्माका अनुभवरूप जो प्रीतिहै तिसकेपात्रहो तुम्हारे ताईं कहूंगा सबलोकोंके हितकामनाकरके १ भेद
मभ्युपगम्यापिस्फुरणबुद्धिविवृद्धये भवेदल्पप्रबुद्धानामपिनोदुःखितायथा २ यद्यपि अहैतज्ञानतें तुमकों भेद
बुद्धि नहीं रहीहै तथापि हे मेरेप्राणाहो मैंने उपदेशवचन गुरोंते सुणानेहैं एह भेदकों अंगीकारकरकेभी मेरा
वचन सुण जैसेतें और बोधकी वृद्धि होवे अल्पबोधवाले जो प्राणी हैं तिनकोंभी जैसे दुःखदशा नहीं होवे ति
सके निमित्त सुण २ यस्याज्ञानात्मनोज्ञस्यदेहएवात्मभावना उदितेतिरुषैवाक्षरिपवोभिभवन्तितम् ३ आत्मज्ञा
नरहित जिस अज्ञानीकों देहविषेंही आत्मभावना है मानों इस अपराधतें इंद्रियांही शत्रु होके तिस अज्ञानी
कों वशकरके दुःखदेतिआं हैं ३ यस्यज्ञानात्मनोज्ञस्यसाक्षिण्येवात्मनिसंस्थितिः तंनशत्रुवतानसुहृदोनयन्तिनमः
मित्रितम् ४ जानिआहै आत्माजिसने ऐसाजोज्ञानवानहै जिसकीसत्य आत्माविषें स्थितिहै तिसकों इंद्रियें
संतोष करकेही मित्ररूप होकरके नहीं मारतिआंहै ज्ञानवानके अधीन होतिआं है ४ पदार्थोंस्फुरतोयस्यनस्व
निर्विन्नाहले सदेहेदेहदुःखार्थमादन्नेकेनहेतुना ५ जोपुरुष व्यवहारकरताभीहै भोगयोग्यपदार्थोंविषें सदाही
दोषदर्शनतें निराहीकरताहै तिराकोंछोड करके स्तुति नहीं करताहै सोपुरुष देहसंबंधि दुःखनिमित्त देहकों
किसकारणकरके आत्मरूपकरके ग्रहणकरताहै तिसविषें कोईकारण नहीं देहकों आत्मस्वरूपकदाचित नहीं
जाणताहै ५ नात्माशरीरसंबन्धीशरीरस्यापिनात्मनि मिथोविलक्षणावेतौप्रकाशतमसीयथा ६ आत्माशरीर
का संबंधी नहींहै शरीरभी आत्माविषें नहीं परस्पर विलक्षणहैं आत्माचेतन शरीरजड, जैसेप्रकाश अंधकारका
संबंधनहीं तैसे ६ सर्वैर्भावविकारैस्तु नित्योमुक्तस्तथालेपकः नात्मास्तमेतिभगवानुदेतिसदोदितः ७ सबभा

मेरे॰

निर्वाण. भाषा पृ. १२

भावविकार जन्मादिक हैं तिन्होंसे नित्य कूटस्थ है निर्लेप आत्मा भगवान् अस्तकों नहीं प्राप्त होता है उदय
कों भी नहीं प्राप्त होता है सदाही प्रकट है ७ जडत्वान्नश्वरत्वाच्च कृतत्वाद्विनाशिनः शरीरकोपलस्यास्य यद्
वत्स्तु तन्नया ८ जड ज्ञानरहित तथा (कृतत्व) जिस आत्माके प्रसादतें जीवता भासता है तिसही आ
त्माकों दुःख देता है इसतें कृतत्व है विनाशी है शरीररूप पाषाण इसकों जो भी न उष्ण आदिक होता है।
सो तैसे हो मेरेकों कछु हानि वृद्धि नहीं ८ आदर्शे न तत्कथं नित्यं चिन्मयत्व सतो दितम् तयोरेकपरित्यागे
इतेवापरस्थिता ९ सो तत्व शरीर सदा भासमान नित्य चिन्मय प्रभावकों कैसे धारे आत्मा अरु देह इन्हों
दोनों मध्य एक आत्माका चिन्मय भावके जानतें दूसरे देहकी जडताही स्थित होती है ९ तयोः कीदृग्वि
धा भूता समान सुखदुःखता योऽसमोऽसमधर्माणो नकदाचन मो कथम् १० जैसे अग्नि लोहपिंड अविचारतें सम
एकजैसे भासते हैं समधर्म भासते हैं अग्निके धर्म दाह उष्णता प्रकाश लोहपिंडविषे भासते हैं लोहपिंडके धर्म
पिंडाकार भार स्थूलता अग्निविषे भासते हैं तैसे आत्मा देह अविचारतें एकजैसे भासते हैं आत्मधर्म चेतनता
आनंद देहविषे भासते हैं देहके धर्म स्थूलता कृशतादिक आत्माविषे भासते हैं विचारतें कदाचित तैसे नहीं
भासते हैं भिन्न भिन्न भासते हैं तिस देह अरु आत्माका समान सुखदुःखस्वभाव कैसा होवे किस प्रकार सत्य
होवे यह कहनेकों नहीं समर्थ होईता है १० यावत्संगस्वभावौ मिथः संगमितो कथम् कथं स्थूलोऽणुरूपः स्यादणुः
स्थूलः कथं भवेत् ११ जो आत्मा असंगस्वभाव महातत्व जो देह स्थूल है सो परस्पर नहीं कदी मिले [illegible] सोके
से संगकों प्राप्त होवे कैसे स्थूल अणु होवे कैसे अणु स्थूल होवे आत्मा देहका संग नहीं तुल्य है एकता नै मति

कहा है वेद

लभ्य है ११ एकोदये द्वितीयस्य नसत्तादिनरात्र्योः ज्ञानेनाज्ञानतामेति छायानाशातितापताम् १२ जैसे
दिन रात्रकी परस्पर एकता नहीं काहेतें दिनके उदय होनेसे रात्रकी सत्ता नहीं होती रात्रके उदय होनेसे
ते दिनकी सत्ता नहीं होती तैसे ज्ञान अज्ञान स्वरूप नहीं होता छाया धूप नहीं होती १२ सद्रूपत्वात्सद्रूपस्ति
विचित्रा स्वविदीप्तेषु न नागापि न संस्पृशः सर्वगस्यापि देहिनः १३ जन्म विनाशादि विचित्र होते भी
सत ब्रह्म असत देहादि रूप नहीं होता है सत जो देहका अधिष्ठान आत्मा तिसका अल्प देहादिकों साथ थो
डाभी संबंध नहीं १३ देहेन देहिनः क्वापि कमलस्येव वारिणा मनागपि न संश्लेषो ब्रह्मणो देहसंगया १४ देही
जो आत्मा ब्रह्मस्वरूप है तिसका देहके साथ कदाचित भी थोडा भी संबंध नहीं काहेतें संबंध नहीं देह कल्पना
के अधिष्ठान सन्मात्र स्वरूपता करके। जैसे कमलका जलके साथ संबंध नहीं तैसे १४ नहत्वस्याप्य नहृते
दमाः स्वेच्छया पुनः जनमरणमापन्नः सुखदुःखविभवाभवौ १५ मनागपि न सन्नोहत्यस्मात्त्वनिर्हेतोभव जैसे वायुवि

विषें स्थित भी है अंबर असंगतातें नहीं स्थित है वायुके दोष धूलि लेप वृतादिकों का कंपनादिक अंबर विषें
नहीं हैं। तैसें देहादिकों विषें स्थित भी है आत्मा सत्यता असंगता निर्लेपनादि स्वभावतें नहीं स्थित है देहादि
कोंके दोष जरामरण आपत् सुखदुःख ऐश्वर्य अनैश्वर्य आत्माविषें अल्प भी नहीं हैं। तिसतें तं मुक्ती हो देह
म स्थितो देहस्तथाप्युच्चैः पातोयातनमहाश्रमः १४ इत्यनेकेवलं ब्रह्मण्येवाप्स्वावीचिवच्चया देहात्मदृष्टिकरके स्थि
त भी है ऊंचस्वर्गादिपदतें गिरना फेर नरकादिक महाश्रम १५ ब्रह्मात्मदृष्टिकरके ब्रह्मविषें जलविषें तरंगसमूह
जैसे स्वस्वभावसें स्थित हैं। आत्मसत्तोपजीविनां हन्मानुभवतो हृदि १७ देहयन्त्रपयस्सत्तामाग्राहृमिव स्थितम् है
हृदयवकों आत्माही जाग्रत स्वप्नविषें अनुभवकरता है काहेते आत्मसत्ताकरकेही देहयंत्र जीवनस्थित है १८ जैसे जल
अपनी सत्तामात्रतें तरंगभावकों अनुभवकरता है आधारस्पन्देनाऽऽ यथाक्षोभभवाभवः सूर्यादेः प्रतिबिम्बस्य तथा
देहेनदेहिनः जैसे प्रतिबिंबका जो है जलादिक आधार तिसके हिलनेकरके क्षोभ होतसंते सूर्यादिकोंको अल्प भी
क्षोभ नहीं तैसे देहकरके चिदाभासकों क्षोभ होतसंते भी देहसाक्षीकों क्षोभ नहीं सम्यग्देहे यथाभूते वस्तुन्येवाभिजायते
१९ स्थितिर्देहमयोः ज्ञानविभ्रमोलयमेतिच भलीप्रकार दर्शनकिए होतसंते परमार्थवस्तु आत्माविषें ही स्थिति वारं
वार होती है देहस्वरूप अज्ञानविभ्रम भी लयकों प्राप्त होता है देहदेहवतोर्ज्ञानाद्यथावल्लीनयोः स्थितिः २० सत्तासत्ता
त्मिका दैतिदीपाहीपपदार्थयोः देह अरु देहसाक्षी जैसा है तैसे यथार्थज्ञानतें देहकी असत्तास्वरूपा स्थिति प्रकट होती
है साक्षीकी सत्तास्वरूपा स्थिति प्रकट होती है जैसे दीपपदार्थकी सत्ता प्रकट होतसंते अंधकारकी असत्ता प्रकट होती है।
असम्यग्दर्शिनो देहस्यावर्जपरिवर्तनैः २१ अज्ञाः पश्याः स्फुरन्तीह ते मोहाज्जनपादपाः अज्ञानीकों देहके वारंवार आवृत्ते
नाउल्लेकरके अंतर अन्य निःसारपदार्थही स्फुरते हैं जैसे सन्निपातादिमोहकरके सोअसिद्ध अजंगल अंतर अन्य स्फु
रते हैं। अपर्यालोचितात्मार्था अपरामृष्टसंविदः स्पन्दन्ते चेतितोन्मुक्ता लतावन्मूढबुद्धयः मूढबुद्धि जो हैं सो अचेत
न देहकोंही आत्मा जानते हैं सोचेतनज्ञानें छोडे हुए तृण जैसे निष्प्रयोजन हिलते हैं तैसे हिलते हैं नहीं विचारते हैं
बंधमोक्षरूप अपना प्रयोजन नहीं विचारते हैं शुद्ध चेतन्यस्वरूप आत्माकों अनास्वादितचित्तत्वा जडाः सर्वे त्वचा
युभिः २२ यन्त्रवद्वादिता कान्तारन्ध्रप्रस्फुरणैरिव तृणकाष्ठादिकं सर्वमाहरन्ति प्रजल्पिता २४ कोई शंकाकरे मूढबुद्धि जब
चेतनारहित हैं तब कैसे बोलते हैं अरु व्यवहार करते हैं तिसका उत्तरकहते हैं चेतन्य परमात्मतत्त्वका नहीं किया है अनु
भवरूप आस्वादन जिनोंने सो सब जड हैं मुखादिक छिद्रांविषें जो पवन हैं तिनोंने हिलाउणे करके जिसस्थानवि
षें वश करी ते हैं मूढबुद्धी तिसस्थानविषेंही बोलते हैं तृणकाष्ठादिक सब ल्यावते हैं छोडते हैं इत्यादिक व्यव
हार करते हैं जैसे पोले बांस छिद्रपवनों करके कीचकीच परूपाहू करते हैं तैसे २४ सम्यगस्पर्शरूपाद्याला

१५

देहदेहवतो ... पाततमः

प्रतिबिंबकों

कीं

निर्वाण भाषा ए.
१२
13

१४ तरलाङ्कुराः जडाः सन्तः स्फुरद्रूपा भृशं स्फाररसासवाः ॥२५॥ सुविहातागमापायामहोल्लाइवदुर्धियः" शब्दस्पर्श
रूपादि विषयां के लाभ कर के ही आपकों धनवान् कृतार्थ मनते हैं वे बडी जो है विषयरसकी भोगेच्छा सोई है मदिरा जै
सी उन्मत्त करणेवाली जिनकों तरंगों जैसे चंचल हैं अंग जिनके जड ही विद्यमान चेतन जैसे फुरते हैं जैसे न
दी के महाप्रवाह अचेतन भी हैं विहार आउणा जाउणा रिचेष्टा सहित होते हैं तैसे मूर्ख ही होते हैं सर्वेषामचेतनै
श्चिन्तैवैषा चिद्व्यया किंत्वाथवशाद्धसाः परां कृपणतां गताः सब जो ए हड के हि हैं इनकी भी आत्मचेतनता अ
विनाशिनी आनंदरूपा स्थित है तदभी विषयभोगनिमित्त बडी कृपणताकों प्राप्त ह रहे हैं काहेते इस चेतनता के अज्ञा
नतें [illegible] अज्ञानी हैं जो आप समर्थ हुए ह
ते हैं सो उदर अग्नि के संदर्भ निमित्त ही है शुभ अर्थ करणे वाले नहीं जैसे लुहार के चर्मपुट के स्वास अग्नि मात्र कों
ही प्रज्वलित करते हैं तर्जनगर्जनैर्मूढा [illegible] ॥२८॥ [illegible] विवर्जिताः मूढतें तर्ज
न अरु गर्जन स्फुरता है मरणनिमित्त ही तर्जन कहिए भयंकर शब्द चैतन्य आत्मा के बोधकारण शब्द नहीं स्फुर
ता है जैसे पतुव दंड के चिल्लते भयंकर शब्द कारण ही स्फुरता है फलभोगवियोगस्तानंदन्तनां [illegible] ॥२९॥ तस्मिन्विश्र
मलं यत्नाल्लाफलदंकेयथा तेनयत्संगमः [illegible] ॥३०॥ जो मूढ तें सांसारिक फल का लाभ होता
है सो वृक्ष के हलतें जैसे होता है फललाभ तैसा तिस विषे जो विश्राम कारणा सो तप्तशिलापट्ट विषे विश्राम जैसा दुःखका
कारण है तिस मूढ के साथ जो संगम है सो व्यर्थ है जैसे वनभूमिका विषे उपर से कटिया जो है हलका मुंढ तिस का संगम है तै
सा है तदर्थयत्नं तं किं [illegible] ॥३१॥ अज्ञानमापदां निधा [illegible]
जानतः ॥३२॥ तेनसार्धं कथा [illegible] मूढकों जो उपकार किया है सो आकाश सौ टिया कर के ताडित कि
या है तिस मूढ अधम कों जो दिया है सो चिकड विषे फिंका सरिया है ॥३२॥ तिसके साथ जो कछु कथन करणा है
सो श्वान विषे कुत्ते का सद्दणा है अज्ञान आपदां की स्थिति भूमिका है अज्ञानीकों कौन आपदा नहीं प्राप्त होती है
सर्व नाडु दुःख की अज्ञानी पावे है ॥३३॥ इयं संसारसरणिर्वहत्यज्ञप्रसादतः अज्ञस्योग्रा दुःखानि [illegible] पुनःपुन
र्विवर्त्तन्ते [illegible] यह संसारमार्ग अज्ञानियों के प्रसाद कर के चलता है अज्ञानी शुभाशुभ कर्म अहंक
र कर के करते हैं तिस कर के स्वर्ग पृथिवी पाताल लोकको आवते जावते हैं अज्ञानीको घोर हठ दुःखसुख
वारंवार निवृत्त होते हैं जैसे घुंगणवाले जो हैं अरघाटादिक तिन्होंने पर्वत लंघने नहीं सकीते तैसे अज्ञानीने स्व
दुःख [illegible] नहीं लंघ सकीते पात्ररथनदारादावास्थां [illegible] ॥३४॥ [illegible] ति
शरीर धन स्त्री पुत्रादि कों विषे जो प्रीति कों भली प्रकार बांधता है तिस अज्ञानीका यह दुःख दुःख कदाचित भी नहीं शां

साँ

जुंगल्ले
वाले=

हे

तर्हे होताहै अनात्मनिश्चयेदृढे आत्मभावमुपेयुषि ७५ असद्बोधमयी माया कथं नामापि नश्यति आत्मातें भिन्नजोहै
देहादिक तिसविषें आत्मभावकों जो प्राप्तहोतामया ऐसी मित जो आत्मा है ऐसे ज्ञानताहै तिसविषें अज्ञानमयी माया कि
सप्रकारकरकेनष्टहोवे सोप्रकारप्रसिद्धकोईभीनहीं दुर्भावस्वचितधियो वस्तुत्वान्यस्य दुर्मतेः अवस्तुनि सनेत्रस्यान्तु
ष्टतश्चपदेपदे विषमुत्पद्यते चन्द्रादामोदः कुसुमादिव ७६ कल्पतेक्षैत्रिपयसो दूर्वाङ्कुरश्च स्थलात् दुर्भावोंकरकेभ
लीप्रकारव्याप्तहोइहै बुद्धि जिसकी सत्यस्वरूपदेखनेविषें अन्धहै दुर्बुद्धीहै असद्वस्तुविषें नेत्रासहितहै असद्वस्तुकोंही
देखताहै इसीतें पदपदविषें गिरताहै महादुःखपावताहै उसकों चंद्रमातें विषउत्पन्नहोताहै जैसे पुष्पतें सुगंध
उत्पन्नहोतीहै जैसे दूधतें कंडाप्राप्तहोताहै जैसे स्थलभूमिकातें दूर्वांकुरप्रकटहोताहै परिपूर्ण आत्मानंदतें भ्रमक
रकेदुःखकोंप्राप्तहोताहै देहशाल्मलिभोगिन्यो मनोमातङ्गशृङ्खलाः ७७ अन्तस्स्थाः प्रत्ययनेत्राशादिवशालयः अ
ज्ञानीकेदेहरूपसिमलवृक्षविषें सर्पिणीरूपआशाबसतीआहें सो रागलोभदीनतादिरूपसर्पोंकों सूविभ्राहै अथ
वा मनरूपजो हाथीहै तिसंगलरूपआशादुःखोंकों सूविभ्राहै जैसे भलीप्रकारहलकरके समकियाजोहै खेत तिसतें
धान उतपन्नहोतेहैं नरकश्रीरिहाज्ञानं दुष्कृतव्यालवेष्टितम् ७८ परिपालयति प्रीतामयूरीवाविटंयथा नरकहै ज्ञानत्रि
सकोसोकहीय अज्ञानकैसाहै अज्ञानजं पापरूपसर्पोंनें वेष्टितआंध्रा तिसकों नरकलक्ष्मीप्रसन्नहोईबलगनीहै कबमे
रेपास अज्ञानीआवे जैसे मोरणी मेघकोंबलगनीहै नेत्रलोलालिनीलोलास्फुरिताधरपल्लवा ७९ मूर्खार्थमेवविकसा
त्यङ्गनाविषवल्लरी स्त्रीरूपजोहै विषवेल सोमूर्खोंकेमारणेनिमित्त प्रफुल्लितहोतीहै कैसीहै वेल नेत्रहीहैं चंचल
भ्रमरजिसके चंचलहै होष्ठरूपपत्रजिसका ऐसी चंचलहै असत्स्पृहादिसङ्गमाविततपल्लवः विद्योतेपगतच्छायो राग
विङ्गमद्रुमः नरुकुन्दलसद्भूमः शस्त्रजालरदोल्मुकः ८० ज्वलतिद्वेषदावाग्निर्दुग्धमेकायतापदः जैसे ऊषरभूमिकावि
षें संगनामावृक्षहोताहै तैसेही अज्ञानीकेमनरूपऊषरभूमिकाविषें विषयरागरूपमृगांडुष्टवृक्षहोताहै कैसाहै तृष्ण
संकल्पहीहैं न्छोटेपत्रजिसके छायातेंरहितहै वृत्तपत्ररूपफलतेजोहैं ओष्ठ तिन्होंविषें शोभतेहैं आसव्रमजिसके
शस्त्रजालकैसिकरकरश्माकृकरतेहैं दंतही बलतेकाष्ठजिसके द्वेषहीहै दावाग्निजिसकी ऐसाजोहै रागरूपमृगाद्ग
द सोमनरूपजो मारू निर्जल अरण्य तिसविषें बलताहै मानोभस्महोताहै शरीरकोंसंतापदेताहै अन्तमात्सर्यम
नसिपरापवादनच्छदा ईर्ष्याकमलिनीचिन्ताषट्पदाविलसत्यलम् अज्ञानीका जोमनहै सोही मानससरोवर मत्सर
रूपजलकरकेपूर्ण तिसविषें ईर्ष्या कमलिनी अतिविलासकरतीहै कैसीहै परनिंदाहीहैं पत्रजिसके चिंताही
हैं भ्रमरजिसविषें प्रतिजन्मभ्रमस्पष्टोग्रदुःखकल्लोलसंभ्रमम् ८१ जडमेवसमभ्येतिपुनर्मरणवाडवः जैसे समुद्रजल म
हातरंगवेगोंको वेलासमीपजाउणेकरके निवृत्तकरताभीहै वडवाग्नीकोंनिवृत्तनहीं करसक्ता वडवाग्नी समुद्रजल
कोंप्राप्तहोताहै तैसे जडजोहै आत्माका अज्ञानी सो जन्म जन्मविषें प्राप्तहोते जोहैं घोरदुःखरूप महातरंगवेग ति

ते

मर्यादा

सकी

उत्पत्ति करति

निर्वाण
भाषा
स॰
१४

न्होंकेंनिरत्नकरतेभीहै जपतपहोम औषधादिकउपायांकरके मरणकोंनिवृत्न करणेकोंनहीं समर्थ होताहै जडकोंहीज
अजन्मविषें फेरफेर मरणरूप वडवाग्नी प्रापत होती हीहै जन्म बाल्यं प्रजस्तरत्ग्यौवनंयुवताजरामृ ४५ जरामरणमथोति
मूढस्यैवपुनःपुनः जन्म बाल्यावस्थाकों प्रापत होताहै बाल्यावस्थायुवावस्थाकों प्रापत होतीहै युवावस्था वृद्धावस्थाकों।
प्रापत होतीहै वृद्धावस्था मरणावस्थाकों प्रापत होतीहै मूढकों ऐसी दशा वारंवार जन्म जन्मविषें होतीहै जगज्जीर्णारघट्टे
सितन्तुवासंसृतिरूपया ४८ मज्जनोन्मज्जनैरन्तो यन्त्रे कलशतांगतः जैसे अरहट विषें बांधिआ जो टिंड है सो भरिआ कूआज
लछोडकर डूबतिआहै होरजललेकरके उपरआइतिआहै तैसें जगतरूप पुराणे अरहट विषें रागद्वेषरसीकरके बंधा अज्ञा
नी टिंडरूप जीआ प्रारब्धकर्मफलभोगकरमरताहै होरकर्मफलकेभोगु निमित्त जन्मधारताहै अरु पापकर नरककाविषें
डूबताहै पुण्यकर स्वर्गउपरचडताहै यदेवगोष्पदाकारं सुधियःपेलवंजगत तदेवापारपर्यन्तमगाधमसहात्मनः। गोकाखु
रहै तिसकोंभी नहीं सरणकरे ऐसाजो अल्पजलहै तिसकेजैसा जो जगत ज्ञानवानकी बुद्धीकों अतितुच्छ सुगमलंघनेयोग्य
भासताहै सोहीजगत अमहात्मा जो देहात्मदर्शीहै तिसकों पार वाररहित अनंत गंभीर नहींलंघनेयोग्य भासताहै धियोहस्त
रुवाऽजस्ताद्वीहजवरकोरसात ४८ नप्रयान्त्यपरंपारं विहङ्गाःपञ्जरादिव अथ जैसाजो अज्ञानीहै तिसकिआंजो बुद्धिआंहैं सो

कहिये
अत्यन्तराग

संसारसमुद्रकाजोपारहै परंब्रह्म अपरं नहीं है परे कोई जिसके तिसकों नहीं प्रापत होतिआंहैं कारेतें उदरछिद्रके पोवणे आ
संगबंधनवशतें जैसे पक्षिणिआं पंजरबंधनवशतें पंजरतें पारकों नहीं प्रापत होतिआं हन भावमात्रपरावृत्तवासनाभारनामयः
४९ स्वीकार्यावनशक्यन्ते जन्मचक्रस्यनेमयः विषयमात्रविषें व्याप्त जो वासनाहन तिनकेभारकरके आक्रान्तहन हृदयरूप ना
भि जिनकिआं ऐसिआं जो जन्मचक्रकिआं इन्द्रियरूपधाराहन विषयरूप चिकड़ विषें डुबिआं हैं सो विषयांतें निकालकर।
शोधनहीं सकीतिआं हैं अस्तेनेन्द्रियगृध्रार्थं रागान्धस्य गृणन्तनुः ५० संसारारण्यमासीना दूरमामिषपिण्डवत् अज्ञानीजो है शिका
री सो शिकारके रागतें इंद्रियरूप जो गृध्र बाज हैं तिनके पालने निमित्त संसाररूप वनविषें अपना शरीर मांसपिंड जैसा बिछायाहै
सर्वकाल सर्वदेशविषें अज्ञानी शरीरकूं वेद देकरके भी इंद्रियों कों प्रसन्न करताहै भूतशैलमयीदृष्टिर्मृन्मांसलवमात्रिका ५१ मोहा
त्सलत्प्रनेतिचित्रपदार्थान्तरञ्जनः जयत्यनल्पसंकल्पकल्पनाकल्पपादपः ५२ भूतमयीजोदृष्टिहै मनुष पशुआदिक प्राणी जि
सविषे बहुतभासतेहैं सोवस्तुविचारतें मांसकणमात्रहै शैलमयीजोदृष्टिहै हिमवान् विंध्य मलय इत्यादिक पर्वत जिसवि
षें बहुत भासतेहैं सोवस्तुविचारतें मृत्तिकाकणमात्रहै सोमोहतें आत्मतत्त्वके सर्वत्र अदर्शनतें पुष्टमानताआ हिमवान्
मलय इत्यादिकल्पना करके लखीतेंहैं ५१ अनेकविचित्रशब्दोंकर अरु अनेकविचित्र अर्थोंकरके अनंतहैं रंग जिसके
ऐसाजोहै बहुतसंकल्परचनारूप कल्पवृक्ष जयकों प्रापत होताहै असतशब्दों अर्थोंकरके सर्वकामनांके पूरणेकरणेकी
समर्थतातें सबसें अधिक महिमाकरके वर्तताहै ५२ अज्ञानान्धस्वलतायस्मात्त्रगत्पर्णपरंपराः यस्मिंस्तिष्ठन्ति राजन्ते विशान्ति
विलसन्तिच ५२ विचित्ररचनोपेताभूरिभोगि विहंगमाः यत्र जन्मानिपर्णानि कर्मजालं च कोरकम ५४ फलानि पुण्यपापानिमज्ज

यौविभवश्रियः अज्ञानेन्दूदयेनैतायोषिदौषधयः स्फुरम् ५५ संसारवनखंडेस्मिन्यं शोभामुपागताः अनंतसंकल्पकल्पद्रुमोंकर
व्याप्तसंसारवनखंड है जिसतें त्रिलोकीरूप पत्र परंपरा विस्तारकों प्राप्त होई है जिसवनखंड विषें भोगीरूप बक्रनपंक्ती विचित्र
रचनायुक्त स्थित होते हैं प्रवेश करते हैं विलास करते हैं शोभते हैं जिसविषें अनंतजन्म पत्र हैं कर्मजाल कलियां हैं ५४
पुण्यपापफल हैं ऐश्वर्यलक्ष्मीयां मंजरियां हैं इसवनखंड विषें स्त्रीयांरूप औषधियां अज्ञानचंद्रोदयकरके प्रकटपर
मशोभाकों प्राप्त होतियां भईयां ५५ जन्मजालकलापूर्णात्मा कालकृतोदयः स्वान्योदितास्तादोषेशोजयत्यज्ञानचन्द्रमाः
ऐसा जो अज्ञानरूप चंद्रमा है सो जयकों प्राप्त होता है कैसा है जन्मजालरूप कलाकरके पूर्ण है विवेकसूर्यके अस्तसमय
होनसंते तमोरूप समय विषें किया है उदय जिसने प्रपंचसें अन्य जो ब्रह्म है तिसविषें प्रकाशमान है कामक्रोधादिदो
षोंका स्वामी है जैसे प्रसिद्ध चंद्रमा कलापूर्ण सूर्यके अस्तकाल विषें अन्य आकाश विषें प्रकाशमान दोषा कहीए रात तिस
का स्वामी है तैसे अज्ञानेन्दोः प्रसादेन वासनामृतशालिना ५७ तर्पिताशाचकोरेण चित्तरत्नरसेक्षिणा राजहंसविलासिन्यः
प्रालेयशिशिराङ्गिकाः ५८ भ्रांतिकान्ताकृशहृद्योलोललोचनषट्पदाः धमिल्लतिमिरोल्लासालसा पांडुपयोधराः ५९ दामारजन्योरा
जन्ते तन्मोर्व्याणविरजस्मितम् स्त्रियांरूप जो रात्रियां हैं सो अज्ञानचंद्रमाके प्रसादकरके जो शोभतियां हैं सो देखणेवाले पुरु
षोंकी जो मूर्खता है सोही स्त्रियांकी शोभाकारकरके वधती है स्त्रियां शोभाकतु नाहीं विचारदृष्टिकरके भासतीं है कैसा है अज्ञानचं
द्रमेका प्रसाद वासनारूप अमृतवाला है तृपतकिए हैं आशारूप चकोर जिसने चित्तरूप जो रत्न है सूर्य तिसका जो विषयों
का स्वादरूप अमृत तिसकों चाहता प्रसिद्ध चंद्रमाकी भी शुक्लपक्ष विषें पूर्णता सूर्यमंडलके अंतरस्थित अमृतकरकेही होती है।
स्त्रियांरूप रात्रियां कैसियां हैं राजहंस जैसे गमनविलासवालियां हैं प्रसिद्ध रात्रियां भी राजहंसोंकरके शोभतियां हैं और
कैसियां हैं स्त्रियां हैं ओस जैसे शीतलअंगवालियां हैं रात्रियां भी ओसकरके शीतलांगियां हैं और कैसियां स्त्रियां हैं भ्रांति
रूप जो सुंदर कृशमुखरूप हृदय हैं तिन्हाकरके शोभतियां हैं चंचल नेत्रही भ्रमर जिनां विषें केशपाशरूप अंधकारकी
शोभा जिन्हों विषें शोभते हैं पांडुवर्णपयोधर स्तन जिनके प्रसिद्ध रात्रि विषें पयोधर मेघ जाणने पयः कहीए दुग्ध
अरु जल दुग्धके धारणेवाले स्तन स्त्रीपक्ष विषें जलके धारणेवाले मेघ रात्रिपक्ष विषें जाणने ५९ आपातमात्रमधु
रत्वमनर्थसत्त्वमाद्यन्तवत्त्वमतिलस्थितिभंगुरत्वम् अज्ञानशालिनश्शिरसस्तानि रामनानाकृतीनि विपुलानि फलानि तानि ६०।
इति मोक्षोपाये निर्वाणप्रकरणे मोहमाहात्म्यंनाम षष्ठसर्गः ६ हेराम विषयों विषें जो अविचारकरके भासती मधुरता है।
अरु अंत विषें अनर्थकारणता किसी देश विषें है मैं किसी देश विषें नहीं पह देशपरिच्छिन्नता ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकस्थि
तियां विषें विनाशशीलता ए सब अज्ञानवृक्षके ऐसे नानाकार महाफल प्रसिद्ध पसरे हैं तिसतें तिनोंका मूल अज्ञान
काटना योग्य है ६० इति निर्वाणप्रकरणे भाषायां मोहमाहात्म्यंनाम षष्ठः सर्गः ६ श्रीवसिष्ठउवाच यत्नक्लावलितारत्नभू
षिताभान्ति योषितः मदेन्दावुदिते स्वच्छकामक्षीरार्णवोर्मयः १ सबनां विभूषितयां विषें स्त्रियांही अज्ञानकियां अरु कामकियां महा
विभूषितयां हैं सबविवेककियां दूरणेवालियां अनर्थमार्ग विषें गिरावणेवालियां हैं इस आशयकरके प्रथम स्त्रियांकाही वर्ण
न करते हैं वसिष्ठमुनी हेराम मदरूपचंद्रमाके उदय होनसंते क्षोभकों प्राप्त होता जो है कामरूप क्षीरसमुद्र तिसकी लहरियां जैसियां

वैश्या

विषें

तिस॰

निर्वाल भाषा ८० १५

स्त्रिग्रां जो भासती ग्रां हैं सो अज्ञानकी विभूति है सततहासमें ८० अर्थ श्लोकविषें तद्ज्ञानविजृंभितं पदपाद है इसके साथ
सबनी श्लोकोंका संबंध जाणना १ सौवर्णाम्भोजकोशस्थलोलालिपटलश्रियम् धारयंतिदृशः स्त्रीणां कपोलतलदोलिताः २ ॥
स्त्रिग्रों के नेत्र कपोलस्थल विषें पीत्तविषें जैसे फूलते हुए सुवर्णकमलमध्य विषें चंचल जो भ्रमर समूह है तिसकी शोभा
को जो धारते हैं सो भी अज्ञानकी विभूति है २ उद्यानवनखण्डेषु भूमौ रूतमदामयी हृद्याः स्मनसो भान्ति दाराश्च मनोभुवः
३ वसंतविषें बागोंविषें वनखंडोंविषें पृथिवीविषें हृदयप्रियसुंदर कामिग्रोंको उत्पन्न किया है उन्माद जिनोंने ऐसि
ग्रां प्रसन्न मनताली ग्रां स्त्रियां अरपुष्प कामदेवकासमानो जो भासते हैं सो भी अज्ञानकी विभूति है ३ क्रव्यादगृध्रगोमायुको
लेयकवलाङ्किकाः स्त्रियः समुपमीयन्ते चन्द्रचन्दनपङ्कजैः ४ व्याघ्र गृध्र गिदड़ स्वान इनके ग्रासरूप हैं अंग जिनोंके ऐसी
ग्रां जो स्त्रिग्रां हैं तिनकी उपमा चंद्र चंदन कमलों साथ दिईती है कवीग्रोंने चंद्र जैसा मुख चंदन जैसी शीतल उष्णकाल
विषें कमलों जैसे नेत्र हस्त पाद हैं ४ सौवर्णकलशाम्भोजकलिकामातलिंगवत् दृश्यते स्त्रीतनश्रेणी रक्तास्तिसुगन्धिका
५ रक्तकी दुर्गंधही है सुगंध जिसकी ऐसी जो है स्त्रिग्रोंकी स्तनपंगती सुवर्णकुंभ कमलकली मोहकडी जैसी कामिग्रोंने जो
देखी जाती है सो भी अज्ञानकी विभूति है ५ रसायनेन्दुनिस्यन्दमधुबिम्बासवद्रवैः ओष्ठाभिधो मांसलवो लालाक्त उपमीयते ६ नारी
ग्रांका ओष्ठनामा जो मांसखंड है लालांकरके युक्त सो रसायन चंद्रकाअमृत मखीर मदरससमान लालां बिंबजैसा ला कजोरी=
ल ओष्ठ है एह उपमा दिई जाती है ६ अल्पाल्पाष्ठीवदाकारभुजाकूटास्थिशङ्कवः महाबाहुलताशब्दैर्वर्ण्यन्ते कविभिः शुभैः ७ हलकि
ग्रां फूलकिग्रां जो गं हिग्रां हैं तिनों जैसा आकार जिनका ऐसिग्रां भुजानामवालिग्रां कठिन हड्डियांरूप कीलजो हैं सो महाबा
वेला= हुलता हैं ऐसे श्रेष्ठ शब्दांकरके कवीग्रोंने वर्णनकरीतिग्रां हैं ७ कदलीस्तम्भसंभारसुंदरी मिलथा भूतलं कुचशोभाचितानन्द्रातो
रणालिर्विराजते ८ कदलीस्तंभही हैं नं पदार्थरचनाकी सामग्री जिनोंकी मानो विधाताने कोमलकेलेदे स्तंभही पदरचे हैं न
जिनोंके ऐसिग्रां जो सुंदर स्त्रिग्रां हैं तिनोंने धारीजो हैं कटिविषें कांची रसना कटिका सो केसी है स्तनशोभाके योग होता है आ
नंद जिसतें जैसे स्तनशोभातें देखणेवालेकामिग्रोंको आनंद होता है तैसा ही आनंद कांचीदेखणेवालिग्रोंको होता है काम
मंदिरकी तोरणमालांरूप कांची जो विराजती है सो भी अज्ञानकी विभूति है ८ आपातमन्दमधुरा मध्ये द्वन्द्वानुबन्धनी शीघ्रावसा
नविरला लक्ष्मीश्यामिवाश्रयाते ९ आरंभविषें मंदबुद्धिग्रोंको मधुर भासती है अथवा अविचारदशाविषें अल्पमधुर भासती मध्यवि
षें खरचकरणे समयविषें रागद्वेषादिके हैं बंधनरूप फल जिसका सिताबी है क्षय जिसका विरलेलोकोंविषें होती है ऐसी लक्ष्मी
जो चाही जाती है सो भी अज्ञानकी विभूति है ९ सम्पत्तिमतिदुःखसुखंच सा नश्यतामपि दुःखशाखो स्वजायन्ते नानाकर्मफलाः श्रियः १०
जो बुद्धि दुःखको प्राप्त होती है अरु जो सुख सैंकरिग्रां शाखांको प्राप्त होता है जो शुभाशुभ नानाकर्मफलांवालिग्रां लक्ष्मीग्रां
दुःखरूप शाखावालिग्रां उत्पन्न होतिग्रां हैं सो भी अज्ञानकी विभूति है १० बहुजाल हानाकारः कार्पण्यमिवरञ्जुवः दद्रुदः सद्दशा
वाचः प्रतानगहनेस्थिताः ११ लक्ष्मीग्रां अज्ञानकिग्रां विभूतिग्रां हैं लक्ष्मी है फल जिनका ऐसे जो कामनावाले कर्म हैं तिनकर्मोंविषें
प्रवृत्त करणेवाले जो कर्मकांड वचन हैं सो भी अज्ञानकी विभूति है इसका आशय करके कहते हैं वसिष्ठमुनी काम्यकर्मविस्ताररूप
जो वन है तिसविषें स्थित जो हैं कर्मकांड वाणीग्रां सो भी अज्ञानविभूति है वे किसिग्रां हैं वाणीग्रां लता जैसी बांधे जो हैं अनेक फ

लकामनाजाल तिनोंकर ग्रसा है आकार जिनका । इसीतें सकाम कर्म करणे वाले जो हैं मनुष्य तिनके संसाररूपबंधीखाने
विषे बांधने निमित्त रज्जु जैसे किया है । जैसे जो एक लालरंग चंचलतासहित है तैसे रागचंचलताप्रधानरूप कर्मकांड वाणियां हैं ॥ ११ सततमा
मोहतिमिरिकाकार्यासारविसारिणी यमुना प्रावृषीवेतितिमिरश्यामलाचिरम् १२ देहाभिमानरूप जो मोह है सोही निरंतर तिमिरिका है ने
त्रांकी धुंध है प्रवृत्तिकार्यरूप जो जलधारावर्षावो है तिसकरके विस्तारकों प्राप्त होई अज्ञानी पुरुषकों आपदा प्राप्त होई अंधकारके विष
यों विषे प्रवृत्त करावती है जैसे यमुना नदी स्वतः श्यामवर्णी वर्षाऋतु विषे रजकरके मलिन रात्रिके अंधकारकरके अत्यंतश्यामब
हती है तैसे मोहतिमिरिका बरती है १२ कष्टकृतान्तःकरणा नानासुखविशारदः बद्धानिगडस्त्रैरन्नमग्नविषयाः स्मः १३ भोगों विषे
प्रवृत्त जो होता है तिसका कारण विषयों विषे तृष्णा पुत्रपौत्रादिकों विषे बंधता है कैसा है राग अविचारकरके अनेक सुखांशकों उत्पन्नक
रणे विषे चतुर है परिणाम विषे दुःख देने तें द्वेषमत्सरचिंतादिकोंके उत्पन्न करणेते रहता जैसे होवे तैसे कोडा अंतःकरणकों करता
है जन्मरूप विषफलमात्राकार सजे सापकोंके बंधाने वाला राग बंधता है १३ व्यापृतजर्जराकीर्तिजनतापर्णसंतयः स्वकर्मपवनावाप्तिनाना
वकरवेणवः १४ अपने जु कर्मरूप पवन फुलते हैं कैसे हैं पवन रोगादिकोंकरके जीर्ण जो हैं मनुष्यादिक पत्ति जनसमूहरूप पत्र
पंक्तियां से गिडाइ दियां हैं जिनों ने ऐसे हैं पवन कूड के देरण जैसे तिनके हरी के करणेवाले अनेक विचित्र जिनों वि
षे ॥ १४ कालः कवलितानन्तजगत्पक्वफलोच्चयः नुसंसद्दारजठरः कल्पैरपि न तृप्यति १५ आपदें अनंत जगतरूप फल जिसने
ऐसा भी काल भक्षण कीये है उदर जिसका सो काल अनंत कल्पांकरके भी नहीं तृप्त होता है मरणभी सदा जन्म जन्मा विषे कालके मु
ख विषे प्रवेश होता है १५ मोहमारुतमापीय सततचाविषमचारिणः स्फुरन्ती हारयस्त्रिया शीतलाचलदीप्तयः १६ शीतल संतापरहित अचे
ल ब्रह्मके प्रतिबिंबरूप प्रकाश जो जीव हैं सो संसार विषे विचित्रसर्प दीर्घ हैं काहेते जिसने मोहरूपपवनकों पीकरके स्थि
त हैं वारवार कुंडआउती अनेक देहरूप त्वचा जिनकी कुटिलगती हैं जैसे सर्प शीतल अचल चमकवाले पवनकों पीउते हैं औ
कारवारंके चक्रकरती कुटिलगति चलते हैं तैसे जीव हैं १६ चिंतापिशाचुपहता विवेकेन्दूदयं विना तमस्सव निरालोका याति यौ
वनयामिनी १७ अज्ञानि जीवोंकी युवा अवस्थारूप रात्रि अज्ञानांधकारकरके आत्मप्रकाश रहित विवेकरूप चंद्रके उदयविना चिंतापि
शाचीने पीडित किई होई मोक्षसाधनहीन वृथाही जाउती है १७ जिह्वा जर्जरतामेति प्राकृतानूनयत्त्वैरः पद्मकोटरकोणस्थमपिस्मरं
हिमैरिव १८ पामर जो स्त्री पुत्रादिक क्रोधी होय हैं तिनोंके क्रोधके निवृत्त करणे निमित्त अनेक मिथ्या कथनतें जो होते हैं संता
पतिनोंकरके जीभ जीर्णताकों प्राप्त होती है जैसे कमलमध्यके कोण विषे नाडीसूत्रकरके दृढबद्ध जो है दल जिह्वा जैसा सो बर
फाकरके जीर्ण होता है १८ दुःखशोकमहाशैलः कष्टकण्टकसंकटः सहस्रशाखोद्यातिदारिद्र्यदृढशाल्मलिः १९ दरिद्रतारूप दृढ
सिम्मलवृक्ष सहस्रशाखाकों प्राप्त होता है दुःखशोक जैसे महा गांठियां जिसकियां कष्टरूप कंडेओं करके भरिया है १९ अन्तःशून्यो
न्नतिधस्तचित्तचैत्यमहालयः मायावहुलयामिन्यां लोभोलूको विवल्गति २० एवं गृहीत्वा कर्णाभ्यां कल्पितवृत्तिकियम जराजर्जरमार्जारी
यौवनाखुं निकृन्तति २१ सत्यवस्तु विषे स्थिति विना अंतरशून्य अहंकाररूप कुचियाई करके भग्न होया जो चित्त है सोही भया चैत्यवृक्ष अथा
नवृत्त तिस विषे किया है तृष्णा जिसने ऐसा जो लोभरूपी उल्लुपक्षी है सो मायारूप कृष्णपक्ष रात्रि विषे भ्रमता है २० जराऽवस्थारूप जीर्ण बिल्ली
है सो यौवनरूप जो है मूषक तिसको काटती है कैसी है प्रथम कर्णों विषे पकडकरके निश्चयकरके चारों ओर फुरती है भ्रमती है २१
निःसारक्रमशः क्रान्तस्थूराधरसमुन्नतिः डिंडीपिंडिकेवेयं दृष्टिर्याति पृथुताम् २२ अज्ञान तें ही सृष्टि जगत दृष्टि पृथुताकों विस्तार
कों प्राप्त होती है कैसी है जगत दृष्टि साररहित है क्रमकरके रचना निमित्त आरंभकिती है पर्वतांकी उच्याई जिसने जैसे वृजकी
पिंडिका निःसारा क्रमकरके पर्वतोंकी जैसे उच्याईका आरंभ करती है पृथुताकों प्राप्त होती तैसे २२ आभासपुच्छाथवलाजगत्पल्लव

निर्वाण भाषा पू. १६

16

शालिनी सज्जालता विकसिता धर्मार्थफलधारिणी २३ व्यावहारिकसत्यतारूपलता विकसित भई है चिदाऽऽभासप्रकाशरूपजो पु
ष्प हैं तिनों करके उज्वल है जगतरूप जो पत्र हैं तिनों करके शोभती है धर्म अर्थ फलकों धारती है २३ सुराचलमहास्थूणं चंद्रसूर्यग
वाक्षकम् गगनाच्छादनं चारु प्रियते तिजगद्गृहम् २४ जगतरूप जो महामंदिर है सो अज्ञानने धारी ता है कैसा है जगत मंदिर सुमेरु आ
दिक पर्वत बडे स्तंभ हैं जिसके चंद्र सूर्य हैं झरोखे जिसके आकाश है छत जिसकी ऐसा सुंदर है २४ संसारसरसि स्फारे चरन्ति
प्राणषट्पदाः शरीरपद्मकोशेषु नाडीरूपरसपायिनः २५ विस्तारवाला जो संसार सर है तिसविखें उत्पन्न भए जो शरीररूप कमल हैं ति
नों विखें अंकुर स्थित जो है चेतनतारूप रस तिसके पीनेका है स्वभाव जिनका ऐसे प्राणरूप भ्रमर विचरते हैं २५ नभोमार्गमहानीलकुट्टि
मैकान्तशालिनी भुवनोदरसंस्थानाः स्फुरंत्यादित्यदीपिका २६ आकाशमार्गरूप बडा नीलमणि करके रचित कि आजो कृत्रिम पृथिवी भा
ग तिसविखें शोभमान सूर्यरूप दीपिका त्रिलोकी के मध्यविखें अतिसुंदर प्रकाशती है २६ आशातन्तुनिबद्धाङ्गी जागती जीर्णपल्लिका स्व
वासनाजालाकेन्त्रिबद्धेन्द्रियपञ्जरे २७ आशातंतुकरके दृढ बंधे हैं अंग जिसके ऐसी जो है जगत के अंतर्गत जीवसमूहरूप पुरातन
दृढ पल्लिका सो अपनि अग्र वासनाकी लीलाकरके जकडे इंद्रियों का पंजर देह तिसविखें बंधी भई जो सोभी अज्ञानकी विभूति है २७ अनार
तपतज्जालभूतपर्णपरंपरा स्पन्दते मरुताऽऽमुष्टा संसृतिव्रततिश्चिरम् २८ निरंतर गिरते हैं सन वासनाजालवाले प्राणीरूप पत्रों की परंपरा जि
स्से ऐसी जो संसारलता प्राणपवनकरके कंपित होई चिरकाल चंचल होती है सोभी अज्ञानकी विभूति है २८ स्वैः स्वैः कल्पितपंकालं प्रहृष्टाः
कुलशालिनः अधःकृतोर्ध्वनरकपङ्काः शङ्काऽऽग्निताद्दृतम् २९ हेठ पातालविखें प्रकट इसने निमित्त ब्रह्माने किए घोर नरकरूप पंकवि
कड होते भी अज्ञानी शंकारहित असीम महाऊलीनहा इत्यादिक अभिमानकरके तत्कालमात्र कोई काल जो बहुत दुःख को प्राप्त होते हैं सो
भी अज्ञानकी विभूति है २९ भृक्तेन्दुखण्डकलिका नीलनीरदशैवले स्वर्गमार्गसरस्यन्तः स्फुरन्ति सुरसारसाः ३० नीलमेघरूप है शेवाल जिसविखें ऐ
सा जो भ्रमणमार्ग विखें स्थित स्वर्गरूप सर है तिसविखें स्थित जो है देवरूप सारसपक्षी चन्द्रखंडकी अमृत कणिकाको भोगकरके जो फु
रते हैं सोभी अज्ञानकी विभूति है ३० नानाफलालिमलिना वासनाजालमालिता स्पन्दामोदमयी प्रीता क्रियाविकसिताब्जिनी ३१ क्रियारूप जो क
मलिनी है अनेक फलरूप भ्रमरों करके मलिन वासनाजाल मालवाली विकसित होई सोभी अज्ञानकी विभूति है ३१ वराकी सृष्टिशफरी स्फुर
न्ती भवपल्वले कृतान्तबकदृष्टाग्रा शठेन विनिगीर्यते ३२ तुच्छ जो सृष्टिरूप शफरी छोटी मछली संसाररूप चहबच्चे विखें फुरती होई कालरूप
दृढ गृध्र शठने निगल लिई जो सोभी अज्ञानकी विभूति है ३२ तरंगफेनमालेव सैवान्येव च भङ्गुरा स्पन्दः स्पन्देन्दुलेखेव सृष्टेरिति विचित्रता ३३
जैसे तरंगमाला फेनमाला क्षणभंगुरा प्रथम जैसी तथा भिन्न जैसी प्रकट होती है और जैसे दिनदिनप्रति भिन्न भिन्न परिमाणवाली चंद्ररेखा
प्रकट होती है तैसे संसारकी विचित्रता प्रथम जैसी भिन्न जैसी जो प्रकट होती है सोभी अज्ञानकी विभूति है ३३ भूरिभूतशरावाणि क्षणभङ्गानि
कुर्वता इदं कालकुलालेन चक्रं संपरिवर्त्यते ३४ बहुत प्राणीरूप मृत्तिकापात्रोंको क्षणभंगुरोंको कर्त्ता जो है कालरूप कुम्हार तिसने यह
संसारचक्र भ्रमाई ता है असंख्यातानि कल्पानि संजातान्यचलोपमे जगज्जङ्गलजालानि दग्धानि युगवह्निना ३५ अचल पर्वतरूप ब्रह्मस्थान
विखें गिनतीरहित जगतरूप जंगलसमूह व्यवहारसमर्थ उत्पन्न होते भए प्रलयकालकी अग्निकरके दग्ध होते भए ३५ भावाभावैरप
र्यन्तैः सुखदुःखदशाशतैः वैपरीत्यं प्रयात्येव मग्नस्य जागती स्थितिः ३६ उत्पत्ति विनाशकरके अंतरहित असंख्य सुखदुःखदशा शतों क
रके जगतकी स्थिति विपरीतभावको सदा प्राप्त होती है ३६ त्वचैर्युगपरावर्त्तैर्वासनाष्टदृढलोभिता महाशनिनिपातेष्वभग्ना इव बुद्धधी
रता ३७ वासना अंहृत्वलोंकरके प्रेरित होई जो अज्ञानियों की मूर्खता हठ सा तरूप धीरता महाशोभोवाले जो जुगों के फेरों करके महा
वज्रोंके पातों करके भी नहीं भग्न होती है ३७ प्रातःसायं विद्रुतासु विधिदैत्यैरपि श्रुताम् भवभङ्गुरया मेऽन्तः ... वासना ३८ जा
नवान जो इंद्र है तिसके शरीरको अधिकार समाप्ति पर्यंत वासना धारती है जो सोभी अज्ञानकी विभूति है कैसा है इंद्रका शरीर हजार जन्मादिकों

नरकपतनकी,

संगादिरसस्व ताद्रूपणी सुगंध बढ़ानेवाली है.

स्फटिके,

कैसे कैसे

भोगेच्छा २५

केॱउतपतकरणेविखें नष्टहोयावेगजिसका होरकैसाहै इंद्रकाशरीर दनुकेपुत्रों दानवोंने सन्मुखसराहिम्रां है केसेदानवहेंमे
सेंकरेवारभ्रमे जो शत्रु हैं तिनकोंभीपालनेहैं फेरयुद्धकरणेकी इछाकरके मारने नहीं शत्रूंकों ऐसे महावीरदानव हैं २८
विशत्यविरतंभूत सर्गपांसुपरंपरा निर्मिनिघतिवात्येयंकालव्यालगलान्तरम् २९ भूतजोहैंप्राणी तिनोंकीसृष्टिहीहै धूलिपरंपरा
जिसविखें उडतीहै ऐसीजोहै ईश्वरनियति अवश्यंभवितव्यता होनी सोहीहै वात्या महापवन सो कालरूप सर्पके गलेअन्तर नित्यप्रवे
शकरताहै क्षणमात्रभी विछेद नहींहोताहै जो सोभी अज्ञानकी विभूतिहै २९ पदार्थाम्भासिसर्वाणिफलफेनानिसर्वतः पतन्त्यविरतापात
मभाववडवामुखे ३० पदार्थरूपसर्वजलहैं सुखदुःखफलहै फेनजिनों विखें सो चारोंओर नाशरूपजोहै वडवाग्निकामुख जिसविखें निरं
तरजो पडतेहैं सोभी अज्ञानकी विभूतिहै ३० स्फुरन्त्याकस्मिकोद्भूतविचित्रद्रव्यशक्तयः स्वभावमात्रसंपन्नाःस्पन्दश्रियइवाम्भसः ३१ स्वभाव
जो अपनाभाव अधिष्ठानचेतन्यसत्ता तिसमात्रकरके पायाहै स्वरूप जिनोंने ऐसिम्रां जो विचित्र वस्तुशक्तिम्रा जलकिम्रा स्पंदशोभा जैसि
म्रा आकस्मिक अतर्क्यवासनांकी विचित्रताने चलाइम्रां जो फुरतिम्राहैं पसरतिम्रांहैं सोभी अज्ञानकी विभूतिहै ३१ भूतमौक्तिकसंरत्न
त्वरन्तःसवल्लनपि जगत्कलभकानत्तिकृतान्तोऽपिकेसरी ३२ प्राणीरूपजोमोतीहैं तिनोंकरके संपूर्ण वडे अतिवड्डत जगतरूप मत्त हा
थिम्रांकों कालरूप अतिबलवानसिंह जो खाउताहै सोभी अज्ञानकी विभूतिहै ३२ कुलशैलफलामन्दपतत्प्राणफलाम्नुजः जायन्तेचम्रिय
न्तेचम्रियन्तेचजगत्खगाः ३३ जगतकहीए चलनेवाले उत्तरायणदक्षिणायनादिमार्गकरकेसदाभ्रमते जोजीवहैं सोहीभए पक्षी कैसे
हैंजीवपक्षी कुलशैल हिमाचलादि कुलपर्वत सोहीहै भोगयोग्यफलजिनोंके हिमाचलादि मध्यभागविखेंनागवसतेहैं मध्यभाग
विखेंमनुष्यवसतेहैं अग्रभागविखें देवतावसतेहैं इसतें भोगस्थानहैं औरकेसेहैंजीवरूपपक्षी मेदहैंफलसमरजिनके फलोंको
शोषते चुगतेहैं दक्षिणायनमार्गविखेंमेवभी ऊर्ध्वगतिकेसाधनहैं अधोगतिकेभीसाधनहैं तिसतेंजीवपक्षी आकेपरूहै ऐसेजोजीव
पक्षी जन्मतेहैं जीवतेहैं मरतेहैं सोभी अज्ञानकी विभूतिहै ३३ चिद्भित्तौ स्पन्दप्रभायां रङ्गःपञ्चभिरिन्द्रियैः उन्मीलयति संसारचित्राणिविधि
चित्रकृत् ३४ विधिजोहै दृष्टाजीव सोहीभयाचित्रकार सोसंसारचित्रोंकोंप्रकटकरताहै किसविखें चैतन्यरूपजोभित्ति है तिसविखें कैसीहै चैतन्य
भित्ति स्पन्दकरके प्रमत्ता दिशांकरके आवरणरहितप्रकटताकरके शुभ्र निर्मलहै रंगकोनहै चित्रप्रकटकरणेकेसाधन पंचइंद्रियांहीहैं
रंग ३४ अजस्रगत्वरी सर्वपरिवर्त्तविधायिनीम् निमेषशतभागाङ्गीमसहुःसाधितांकुराम ३५ सत्त्वांकालस्यकलनाससमुत्थानकारिणीम ध्याने
नैवान्यःवेदेषिताःस्थिताःस्थावरजातयः ३६ एहजो स्थावरजाति वृक्षतृणादिकहैं सोध्यानकरके अंतरअनुभवकरकेही सत्त्वजो कालकी कल
नाविक्षेपक्रियाशक्ति तिसकोंदेखकरकेस्थितहैं कैसीहीकालकीविक्षेपशक्ति स्वजोहैआत्मा तिसकोजो समुत्थान जगतरूपकरके विवर्त्त अन्यथा
प्रतिभास तिसकेकरणेवालीहै होरकैसीहै निमेषक्रियाका जो सोमाहिस्सा तेसाहै स्वरूपजिसका होरकैसीहै निरंतरचलनेवालीहै होरकैसीहै
स्थूलसूक्ष्मजो सर्वप्रपंच तिसका परिवर्त्त बदलना तिसकोंकरणेवालीहै होरकैसीहै असत दुःखसाधित किम्राहै जगत अंकुर अंकुरजिसने
रागद्वेषसमुत्थेनभावाभावभयेनच जरामरणरोगेणजीर्णाजंगमजातयः ३७ सद्दुःखकोजंगमध्यानचारित्वोधरणीतले नियतानियतकालेषीन
कीटपङ्क्तयः ३८ रागकरके उत्पतहोता पुत्रादिकोंका विनाशभय द्वेषकरके उत्पन्नहोता वैरियोंके रहतेकाभय तिसकरके जरामरणरोगक
रके जंगमजातिजीर्णहोतिम्रांहैं ३७ अतिशयकरके सर्वजनोंविखें किएजोहैं महापाप तिनकेफलजोमहादुःखहैं तिनकेध्यानकरणेकास्व
भावजिनकोंऐसिम्रांजो कीटपंकतिम्रांहैं पृथिवीविखें सोनियतीकरके पापानुसारसमयविखेंपीडितहोतिम्रांहैं अज्ञानकी विभूतीकरके ३८।
तृणेनाद्धश्रवणेवेदनिभिरन्धःखिलंसुखम् सद्दुर्लक्ष्यविलःकालवालोविपुलभोगवान् ३९ कालेनकिंचिदालक्ष्यलक्षणीराकुलीकृताः शीतवातातपप्रो
द्दाःप्रोल्लसन्मृगदीप्तयः ४० फलप्रदपत्नीरुशीलिनःसुप्रविग्रहाः॥ अथ पृथिवीछिद्रविखें प्रविष्टहोयाहै विग्रह शरीरका मूलभाग जिनका ऐसे
जोस्थावरतरु सो कालने क्रूरस्वाकोंकातथालोकांकापुण्यपापनिमित्तकरके मनुष्यपक्षिसर्पादिकोंकरके शरीरविखेंपीडितकिएहैं तथा
वसंतादिकोंविखें वधनीहैं पुष्पशोभा जिनकी तथाफलदेतेहैं शीलिनः तपशमदमक्षमाउदारतादिशीलवाले जैसे समयको विनीतकरतेहैं
४० पयःपटलविश्रान्तनेत्रलोकाम्भोजकोटरे करोतिभ्रमंभ्रीभृन्नभ्रमरपेटिका जलसमूहविखेंस्थितजोहै त्रिलोकीकमलतिसकेमध्यविखें प्राणी

५१

कलियें

आप-
भाग-
का४

अंतरदीसव
दुःखकासुख
भवकरतेम्रा
हैं ४४

दृश्यादिक

निर्वाण
भाषा
प्र.
८

17

घनी

रूपभ्रमरसमूहहै जो सो बहुत गुंगुमध्वनि करता है ह्यर्थ ब्रह्मालुभैत्वभाण्डेयं कालीभगवतीक्रिया ५१ स्पंदं देवैव दलैव भूतभित्तिं जिह्वा नति प्रा
णिश्रांकी जोक्रिया है सोई है कालीभगवती ब्रह्मांड है भिक्षापात्र जिसका प्रथम लिई जो प्राणि भिक्षा तिसकों अपुने भर्ता कालको वारंवार देकर के
होर होर प्राणिरूप भिक्षा कों लिआवती है ५२। तिमिरालीककवरी इन्दुः अर्कचपलेक्षणा ५३ ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिधरा गिरिवराटिका ब्रह्मतत्त्वे कपि
टकालम्बमानपयोधरा ५४ चिद्भक्तिभासुरकास्थूलान्तरलाहतचापला तारकाजालदशनासन्ध्यारुणतराधरा ५५ समस्तपद्मिनी हस्तावलितकृत पुरा नना सा
विभुकालतिकानीलाम्बरपरीवृता ५६ जम्बूद्वीपमहानाभिर्वनश्रीरोमराजिका भृत्वाभृत्वा विनश्यन्ती त्रिलोकीहृद्दकामिनी ५७ ग्रसकूजायतेनणाभूरिविभ्रम
कारिणी त्रिलोकी रूप हृदकामिनी है जिसका ग्रंथकार रूप केशपाश है जिसके चंद्रसूर्य चंचल नेत्र हैं जो अंत स्वेतन स्वभाव करके ब्रह्मा विष्णु महेंद्रा
दिरूप है पृथिवी सुमेरु हिमाचलादिक रूपा वाह्यस्थूलदेहरूप जडस्वभाव करके है ब्रह्मतत्त्व ही है हृदय विषे फोडा जे साति सकों बन्धनों करके ढक
रसदा शुभ्र रखती है लमकते जो पयोधर में व सो ही है ज्ञान नजिसके चेतन्या शक्ति जो है चिदाभास सो ही है मा ता जे से पोषण करणे वाली जिसकी।
इसी नि स्थूल है गौ हही चपल है तारासमूह है दंत जिसके संध्या समय है बहुत लाल ओठ जिसकी सब जो कमलों वालिआं भेट सुता हाथ जिसके ईद
का नगर है मुख जिसका सत समुद्र है मोतिआं की आमाला जिसकी नीला आकाश है अपुरला नीला वसतर जिसका जंबूद्वीप है महानाभी जिस
की वनशोभा है रोमपंकति जिसकी वारवार उत्पत हो करके नष्ट होती है नष्ट हो कर वारवार जमती है बहुत विलास करती है बहुत भ्रमों कों भी उतपत क
रती है ५८। मन्त्रमन्येरयो नमे नैभी मेकालमहार्णवे प्रतिकल्पक्षणं लीलो ब्रह्माण्डस्फुरद्बुद्बुदैः कालोऽगाधरसस्पन्दः स्थित्यास्थितात्पुनः पुनः ५९ कल्पमात्र
निमेषलो डुनाः कारणसारसाः भयंकर जो है काल रूप महासमुद्र तिसविषे ब्रह्मांड रूप जो है अप्रकट अनंत बुद्बुदे सो डूब ते हैं होर अनंत ब्रह्मांड बुद्बु
दे उगते हैं ब्रह्मा का आयु जो कल्प है सो ही क्षण है तिस विषे स्थित होइ करती लहरा ते हैं ब्रह्मांड बुद्बुदे ऐसे ही अनंत कल्पों विषे अनंत ब्रह्मांड नष्ट
हैं अगाध अथाह रस स्पंद अनंत भ्रांति रस आरूप जल स्पंद जिस विषे ऐसा जो काल रूप नट है तिस विषे वारंवार स्थित हो कर के हिरण्यगर्भ ही जो
सारस पक्षी हैं कल्पमात्र पलक कर के उडजाउ ते हैं ५९। उत्पत्तो न्नस्य नाशिन्यः संतता सृष्टिविद्युतः ६० कालमेघे स्फुरंत्येता स्थित्य प्रकाशतनोद्यमाः।
काल रूप मेह विषे सृष्टि रूप बिजलिआं वारंवार उतपत होइ कर के वारंवार नष्ट होतिआं हैं चित्त प्रकाश की व्याप्ति कर के है प्रकाश शक्ति जिनकी ऐसि
आं सृष्टि बिजलिआं फुरतिआं हन ६१। प्रपतद्भूत विहगाः पतन्त्यः विरतभ्रमाः ६२ कालतालातिकानीना लाब्रह्माण्डफलपालयः उन्मेषक ततोवैरिंचरूपयोदेवना
यकाः ६३ निमेषकृत संहाराः सन्ति केचन कुत्रचित अति कृत्या जो काल रूप ताल रहत तिस तें पोते मोहन प्राणी रूप काक पक्षी जिनां ते तिसिआं जो ब्रह्मांड रू
प फलांकिआं पंकतिआं पोतिआं हैं देवनायक जो विष्णु रुद्र ईश्वर सदाशिव हैं सो नेत्रों के उघाड ने मात्र काल विषे ब्रह्मा किआं सृष्टिआं करते हैं।
निमेषमात्र कर के संहार करते हैं ऐसे देवनायक कोई कहीं हैं ६३। निमेषोन्मेषसंक्षीणकल्पजालाः सहस्रशः ६४ रुद्राः केचन विद्यन्ते तस्मिं
स्तरमे पुनः जिन के नेत्रों के निमेष उन्मेष विषे अनेक हजार सृष्टि जाल क्षीण होते हैं सो रुद्र अनेक हजार तिस चिद्रूप परम कारण विषे हैं ईदृ
शे पियस्य निमेषेण भवन्ति न भवन्ति च ६५ तादृशोप्यस्ति देवेशो ह्यनन्तेयं क्रियास्थितिः सो रुद्र भी जिसके पलक मात्र कर के होते भी हैं नहीं भी होते हैं
ऐसा भी देवों का ईश है यह रुद्र पर्यंत क्रिया स्थिति है कर्म की अरु उपासना की फल संज्ञा स्थिति अनंत है संख्या रहित है ६६। अनन्तसंकल्पमयेष्वे
व ब्रह्मणः पदे न संभवन्ति का नाम शक्तयश्चित्ररूपकाः मायाकर के अनंत संकल्पमय है ब्रह्मपद है तिस विषे कौन शक्ति आं नहीं अनेक आश्चर्य के कारण
करणे वालिआं सर्व शक्तिआं हैं वस्तु दृष्टि कर के माया संकल्प से रहित है ब्रह्मपद ६७ एवमज्ञानसंकल्पव्याप्तचर्यभरभासुरा जागतीकल्पनायेयं तद
ज्ञानविजृम्भितम् ६८ अग्यान जो है जगत् कल्पना सो दृढ संकल्प कर के प्राप्त होइ जो पदार्थ समूह तिनों कर के भासमान है सो अज्ञान की विभूति है ६९।
याः संपदो यदुनसंततमापदश्च यद्बाल्ययौवनजरामरणोपतापाः यन्मज्जनं च सुखदुःखपरंपरासु तिरज्ञानतीव्रतिमिरस्य विभूतयस्ताः ६० सो दोषा येऽ
ज्ञानमाहात्म्यप्रदर्शनं नाम सप्तमः सर्गः ७ जो संपदा हैं जो निरंतर आपदा हैं जो बालावस्था युवावस्था वृद्धावस्था मरणावस्था संताप हैं
जो सुख परंपरा कर अरु दुःख परंपरा कर संसार समुद्र विषे डूबना है सो सब अज्ञान रूप तीव्र अंधकार कि आं विभूति आं हैं ६०। इति निर्वाण
भाषायां अज्ञान माहात्म्य कथनं सप्तमः सर्गः ७ श्रीवसिष्ठ उवाच संसारवनखण्डेऽस्मिन्स्थित पर्वततटेस्थिता कीदृशी सृष्टुः विषा व्यालता विकसिताक
दा ८ इस संसार वन खंड विषे निर्विकार चेतन रूप पर्वत के तट विषे स्थित सृष्टि रूपा अविद्यालता विकसित होई किस समय विषे कैसी होई सो

प्रतिदिनवृद्धिस्वभाव ४

स्तो। समयभेदकरकेअनेकप्रकारकरकेसद्विरूपाअविद्यालताविकासितहोतीहै १ वृहत्पर्वतपर्वाढ्याब्रह्माण्डत्वकमाहृता देहयष्टिरियंयस्या।
स्त्रिलोकीलोककामिनी २ बडेजोसुमेरुआदिकपर्वतसोहीहैंसंधिग्रंथीजिसकिआ ब्रह्मांडकेजोजलादिकआवरणहैंसोहीत्वचाहै तिसकरकेयुक्तहै।
त्रिलोकीजिसकीदेहरूपनाहै कैसीहैदेहलताहै जनहीपत्रअंकुरादिकतिसकरकेशोभतीहै २ सुखदुःखभवाभावोज्ञानमज्ञानमेवच अत्रैतास्तु
कृतानिमूलानिचफलानिच ३ सुखदुःख जन्म स्थिति ज्ञान अज्ञान इसअविद्यालताविषें एतत्सुखादिकें परस्पर मूल फल भावकरकेवर्ततेहैं ३ सु
खादविद्योदेसद्वेसादेवोनसंप्रयच्छति दुःखादविद्योदेसद्वेसादेवैसाफलमलश ४ भवादविद्योदेत्येतानमेवफलतिस्फुटम् भावासन्नामवाप्नोतिनमेवफलति
तात्मम् ५ अज्ञानाद्वृद्धिमायातितदेवस्याःफलंस्फुरम् ज्ञानेनायातिसंविन्निस्तामेवान्तेप्रयच्छति ६ सुखदुःखादिकोंकामूलफलभावकहतेहैं भोगीताजोहैसं
पदादिस्वरूपतिसतें आगेभीमेरेकों इसतेंभीअधिककंसंपदाहोवे एहरागरूपा अविद्याउदयहोतीहै सो यज्ञदानादिधर्मद्वारा सुखकोंफलतीहै दुःखतें। दरिद्रतादि
धनतस्मादिरूपा अविद्याउदयहोतीहै सोभी पापवासनाकरके दुष्प्रतिग्रह चोरी आदि अधर्मप्रवृत्तिद्वारा सो अधिकदुःखकोंफलतीहै ४ जन्मतें देहाभिमान
रूपा अविद्याउदयहोतीहै वृद्धि सो तिसीजन्मकोंप्रकटफलतीहै स्थितितें जगत्सत्ताकोंप्राप्तहोताहै जगत्सत्ता निश्चितहोई संसारस्थितिकोंहीदृढ
मात्रफलतीहै ५ अज्ञानतेंसंसारविषेंवृद्धिकोंप्राप्तहोताहै (सोसंसारवृद्धि) संसारवृद्धिका अज्ञानहीप्रकटफलहै आत्मतत्त्वकेविचारकरकेज्ञा
हृदि नंप्राप्तहोतीहै सोसम्यक्भूमिकाविषेंअल्पाज्ञानवृद्धीकोंदेतीहै ६ नानाविधोल्लासवतीवासनामोदशालिनी इनप्रवालतरलाननुरस्याविजृम्भते ७ कैसी
हैअविद्यालता नानाप्रकारविलासोंवालीहै वासनारूपसुगंधवालीहै प्राणीहीचंचलपत्रहैं तिनोंकरकेचंचल अविद्यालताकाशरीरहै ७ दिवसकृद्रत्रसुमा
यामिनीलोलषट्पदा अजस्रस्पन्दमानेषाप्रपतद्भूतपल्लवा ८ दिनसमूहहैंतनपुष्पजिसके रात्रिआदहैं चंचलभ्रमरजिसविषें सदाकंपतीहै प्राणीरूपंपत्रसदा
जिसकेगिरतेहैंतन ८ आगत्यागतपवनतिविवेककतीतीकुचित विधूयतेश्चतरजाःप्रसक्तिपुनरेतिच ९ कर्मरूपपवनकरकेवारंवारभ्रमकरकेकिसस्थानविषेंको
ईजोअधिकारीज्ञानेनादिकप्राणीरूपपत्रतिसअंशविषेंविवेकरूपहस्तिनीकेसन्मुखप्राप्तहोतीहैअविद्यालता तिसहस्तिनीनेकदाचित विचाररूपसूंडअग्र
करकेविषयरूपवृत्तसेंविछोडनेकरकेकंपितकरीतीहै दूरहोतीहैदुर्वासनारूपप्रभाजजिसतें देवोंनेकदाचित छंडायेतेंगिरतीहै फेरभीविषयवृत्तकेसा
थप्रसंगकोंप्राप्तहोतीहैअविद्यालता, गायमानप्रवालाढ्यासज्ञानांकुरदन्तुरा सर्वर्तुसुभगोपेतासमग्ररसशालिनी १० नवउत्पन्नहोतेहैंजोपत्रतिनोंकर
केपूर्णहै उत्पन्नहोएजोदोषहैंसोहीअंकुरहैंदांतोंजैसेजिसके सबनाऋतुविषें भोगरूपपुष्पोंकरकेयुक्तहै सबजो मधुर अम्ल कटु तिक्त लवण क
षायरसहैं तिनोंकरकेशोभतीहै १० जन्मपर्वाहिनीरन्ध्राविनाशच्छिद्रचञ्चुरा भोगाभोगरसापूर्णाविचारैकघुणाहता ११ जन्मरूपजोस्थूलग्रंथिआंहैंतिन
नाविषेंदुःखरोगादिकसर्पोंकरकेभरीहै मरणरूपजो घातोंसंधिछिद्रहैंतिनोंविषें मानोचीराजाउतीहै ऐसीव्याकुलहै भोगोंकेअनुभवविषेंजोरस
हैरागमकरंदतिसकरपरिपूर्णहै आत्मविचाररूपजोएकघुणहैतिसकरखंडितहै ११ विकसन्त्यःप्रतिदिनंचन्द्रार्कावलयोऽमिनः कान्तिमानविलोलानि
पुष्पाण्यस्याःकिलग्रहाः १२ चन्द्रसूर्यसहितनवग्रहरूपज्योतिःपंक्तिआंप्रतिदिनविकसितहोतिआंचारोंजेइसअविद्यालताकेआकाशविषेंपुष्पहैं
पवनकरकेचंचल १२ अस्याःप्रस्फुरिताकाराःकोरकत्वमुपागताः स्फरिताकाशकोशाग्रास्तारकारघुनन्दन १३ स्फुरितहैआकाशकोशजिसनेऐसीजोअविद्या
लताहै तिसकेतारेकलिआंचमकतिआंहैं हेरघुनंदन १३ चन्द्रार्कदृग्नालोकायस्यास्तत्कोसमरजः अनेनेयंहिमोराद्रीस्त्रीवचनासिकर्षति १४ चंद्रसू
र्यअग्नीआंकेप्रकाशजिसलताकेप्रसिद्धपुष्परजहैं इसनेजकरकेमनोंकोंखेंचतीहैंमनोहरभासतीहै १४ मनोमानङ्गविधुतासंकल्पकलकोकिला ६ स्त्रीजैसी
न्द्रियव्यालसंबाधातस्मात्गुपरञ्जिता १५ मनरूपहाथीनेकंपितकितीहै संकल्परूपमधुरकोकिलहैंजिसविषें इंद्रियरूपसर्पोंकरकेभीडीहै तृष्णारूपव
चाकरकेरंगीहै १५ नीलाकाशतमालांगसंश्रयेणोन्नतिंगता रोदसीजानुसुलम्भाभुवनोद्यानभूमिका १६ नीलाकाशरूपजोतमालवृक्षहै तिसकेआश्रयकर
केविस्तारकोंप्राप्तहोईहै स्वर्गपृथिवीजानुकेआकारहढस्तंभजिसके त्रिभुवनरूपउद्यानकरकेभूषणोंवालीहै १६ अधोब्रह्माण्डखण्डेषुस्थानपातालेन
जालिता विस्ताशेषजलधिजलक्षीरादिसेचना १७ सप्तसमुद्रोंकीजोआधारूपगंभीरभूमिकासोहीहैसुंदरकिआरा तिसकरकेधारिआ सबसमु
द्रोंकेजलदुग्धादिकसेचनजिसनेऐसीअविद्यालताहै हेवलेभुवनखंडोंविषें वासनमूलजालाकरकेयुक्तहै १७ वधूविलोलभ्रमभारमत्तपुष्पपुञ्ज
का चित्स्पन्दवानचलिताक्रियाविपुलपुष्पिका १८ कर्मकांडरूपजोहैन त्रैवेदतिसकरकेचंचलजोहैंनफलरागीजीवसोहीहैंनभ्रमरजिसविषें रागीजनोंने
भोगनेयोग्यजोहैनसुंदरस्त्रिआंसोंहैनपुष्पसमूहजिसविषें चेतनकास्पंदजोवातहैतिसकरकेहिलतीहै स्वाभाविकप्रवृत्तिक्रियावालेजोजनहैंनसोही

वडुवत हैं मं पतंगिका जिसविषे १८ ॥ कर्मोऽजगरव्याप्तास्वर्गश्रीपुष्पमण्डपा जीवजीवननीरन्ध्रा नानामोदमदप्रदा १९ ऊकर्मरूपजो अजगर तिसकरके व्याप्त है स्वर्गशोभा है पुष्पमंडप जिसका जीवोंके जीवन उपायोंकरके पूर्ण है अनेक प्रकारके जो सुगंधजो सुगंध हैं तिनोंके मद देनेवाली है १९ नानोपशमवैचित्र्या नानाकुसुमभासिनी नानाफलावलीव्याप्ता नानावर्षविकासिनी २० विचारवानोंके अनेक प्रकार उपशमकी विचित्रता है जो अनेक पुष्प हैं तिनोंकरके भासती है अनेक फलपंक्तिओंकरके व्याप्त है अनेक पुष्प फल पुष्परस पुष्परज जो वर्षा करके विकासको प्राप्त होई है २० नानालवा लवलया नानाविहगधारिणी नानापदगणपल्लवा नानाभूपजालिका २१ अनेक क्रिया डिंड्या केमंडल जिसके अनेक पक्षिओंके धारनेवाली है अनेक पुष्परज जो करके कणेर हैं अनेक पर्वत जो हैं सो ही हैं अनेक जाल जिसके २१ नानाकलाकुड्मलिनी नानावननगोत्थिता नानागिरितटारूढा नानादलनिरन्तरा २२ अनेक व्यवहारकलाहैं कलिआं जिसकी अनेक वनपर्वतोंसे उठी है अनेक पर्वतोंके तटोंविषे चढी है अनेक पत्रोंकरके भरी है २२ जाता च जायमाना च म्रियमाणा तथा मृता अर्धछिन्ना तथा छिन्ना नित्यमक्षीणा तथा २३ पिछे उत्पन्न होती भई वर्त्तमान उत्पन्न होती है वर्त्तमान विषेही मरती है अरु पीछे मृत होई है आधी तुटी है अरु सारी तुटी है नित्य प्रवाहरूप करके नहीं तुटती है २३ अतीता वर्त्तमाना च सत्येवाऽसत्यवत्सदा नित्यमत्यन्ततरुणी नित्यशोषणरूपिणी २४ पीछे होती भई वर्त्तमानविषे भी है सदा सत्यजैसी अज्ञानीको भासती है सदा असत्य जैसी ज्ञानीको भासती है नित्य अत्यंत जवान है रस अरु पत्रोंकरके युक्त है विवेकरूपि करके नित्य सुकती है २४ महाविषलतेयं हि संसारविषमूर्छनाम् ददाति रभसा स्पृष्टा पतनं प्राप्य विनश्यति २५ यह अविद्या महाविषलता है निश्चयकरके जन्ममरणादि संसाररूप जो है विषमूर्छा तिसको देती है अविचारके वेगकरके स्पर्शकी हुई होई विचारी होई विनाशको प्राप्त होती है २५ स्फीतेयं ललिता तस्य अन्तेन तः संस्थिता विना ज्ञेज लमितः शैलाइतो नागाः स्वरा इतः २६ विचारवान्के सूर्य आत्मा विषे अंदर बाधित होती है अज्ञानीके अंदर मिलि नहीं होई स्थित है अनेकरूपा इक स्थानविषे जलरूपा है अविद्या विषलता एक स्थानविषे पर्वतरूपा है इक स्थानविषे नागरूपा इक ओर देवरूपा २६ इतः पृथ्वीत्वमापाता तथैतो द्युतयास्थिता इतश्चन्द्रार्कतां प्राप्ता तथैतो द्युतया स्थिता २७ इक ओर पृथिवीरूपको प्राप्त होई है तैसे इक ओर स्वर्गरूप करके स्थित है इक ओर चंद्रसूर्यरूपताको प्राप्त भई तैसे इक ओर तारां आकार भई है २७ इतस्तमइतस्तेज इतः खमितउर्वरा इतः शास्त्रमितो वेदा इतो ध्यायविवर्जिता २८ इक ओर अन्धकाररूपा इक ओर तेजरूपा इक ओर आकाशरूपा इक ओर खेती करके धर्मा पृथ्वीरूपा इक ओर शास्त्ररूपा इक ओर वेदरूपा इक ओर प्रलय सुषुप्तिविषे द्वैतरहितरूपा २८ क्वचित्तवगतयो जीना क्वचिद्देवतयोत्थिता क्वचित्स्थाणुतया रूढा क्वचित्पवनतां गता २९ किसी ओर पक्षिरूप करके उडती है किसी ओर देवरूप करके उठी है किसी ओर किसी ठौर करके वृक्षके मुंढरूप करके चढी है किसी ओर पवनरूपताको प्राप्त भई है २९ क्वचिन्नरकसंलीना क्वचित्स्वर्गविलासिनी क्वचित्तपःस्था क्वचिल्लभितनुधा स्थिता ३० किसी ओर नरकरूप करके पाताल छिद्रनिविषे डूबी होई है किसी ओर स्वर्गरूप करके विलास करती है कहीं देवोंके पदको प्राप्त होई कहीं कृमिरूप करके स्थित है ३१ क्वचिद्विष्णुः क्वचिद्ब्रह्मा क्वचिद्रुद्रः क्वचिद्रविः क्वचिदग्निः क्वचिद्वायुः क्वचिच्चन्द्रः क्वचिद्यमः ३१ । कहीं विष्णुरूपा कहीं ब्रह्मा कहीं रुद्र कहीं सूर्य कहीं अग्नि कहीं वायु कहीं चंद्र कहीं यमरूपा ३१ यत्किंचनाक्षं भुवनेषु महामहिम्ना व्याप्य जङ्गमं स्थावरं च दृश्यं स्फुरन्निह विराजितमविद्या विदितपायातदपि तन्त्यालमलाभः ३२ इति श्रीमोक्षोपाये अविद्यालता विलासोपदेशो नाम सप्तमः सर्गः ८ । हे राम महामहिमाकरके पूर्ण जो है दृश्य आदिक अनित्य जो है जो लिलतपदको प्राप्त भया जो कछु दृश्य स्फुरता है तिस सर्वको अविद्याजाल तत्त्वज्ञानकरके अविद्याका बाध होता है अविद्याके बाधक करके जो आत्माका लाभ है सो ही मोक्ष है ३ इति निर्वाणभाषाविषे अविद्याकाविलासकथन अष्टमः सर्गः ८ श्रीरामउवाच आकारजातमदितं ह्यदतेविहरतापि अविद्येयं समस्तुतं ब्रह्मन् भ्रमिवागतः १ श्रीरामउवाच हे ब्रह्मन् शुद्ध आकार समूह वाले जो हैं हरि हरादिक सो भी अविद्या ही है यह तुमने कहि आहे यह सुनकर भ्रमजैसेको प्राप्त भया हौं तिस भ्रमको दूर करो १ श्रीवसिष्ठउवाच संवेद्येन परामृष्टशान्तसर्वात्मकं च यत् तत्संविदाभासमयमस्ती कलनोज्झितम् २ संवेद्य जो है दृश्य जगतका आकार तिस करके रहित है जो जगत्संस्कारों करके भरी जो है माया तिसके अधिष्ठान शान्त सर्वरूप है इसीते सत्य चित्प्रकाशकी अधिकतावाला कल्पनारहित स्फुरित पूर्व है १ समुदेतिस्व तत्समात्कलाकलनरूपिणी जलादावर्तलेखेव संस्कारजलतयोदिता २ जगतके संस्कार महाप्रलयविषे लीन होए हैं तिस स्वरूपविषे सब संस्कारोंका प्रकट होना जो है सो कलन कहीए कलनरूप जो कला है चिदाभासका स्फुरण सृष्टिके आदिकालविषे उदय होता है अपनी सत्ता करके स्थित होती है

स्फुरण=

संवेदन=

श्रीवसिष्ठउवाच ५४

शुद्धसत्त्व रजोमिलितसत्त्व तमोमिलितसत्त्व ३ शुद्धरज सत्त्वमिलित तमोमिलित ३
शुद्धतम रजोमिलित सत्त्वमिलित ३ ९२

स्फुरता जो जल है तिस रूप करके ३

स्वल्पमात्र न्यारी जैसे एक गुणी का गुण है जैसे सूर्य का प्रकाश चंद्र की शीतलता अग्नि की उष्णता है सूर्य चंद्र अग्नि एक गुणी हैं प्रका
श शीतलता उष्णता गुण है तैसे चिदाभास का स्फुरण उदय होता है जैसे जल में आवर्त लहरों उदय होती है अभिन्न विषे भी किं
चित् भेदकल्पना होती है ३ सूक्ष्मा मध्या तथा स्थूला चेति सा कल्प्यते त्रिधा प्रभातमध्याह्नसायाह्नातपेनेवातपेन यथा पुनः ४ सो कला सूक्ष्मा म
ध्या स्थूला एह तीन प्रकारों करके कल्पीती है स्वल्प भेद करके जैसे दिन की धूप मध्याह्न विषे प्रभात विषे स्वल्प धूप छाया विषे सूर्य के तेज
का भेद होता है छाया विषे सूक्ष्म तेज प्रभात की धूप विषे मध्यम तेज मध्याह्न की धूप विषे स्थूल तेज सूक्ष्म कल्पना तें पी
छे तिस कल्पना करणे वाले ईश्वर ने हिरण्यगर्भ रूप मन स्वरूप करके मध्यम जानी है पुनः तिसते उपरंत विराट् शरीर करके स्थूल
जानी है ४ तिष्ठत्येतास्ववस्थासु भेदतः कल्प्यते त्रिधा सत्त्वं रजस्तमश्चेति एषैव प्रकृतिः स्मृता ५ इन्हा सूक्ष्म मध्य स्थूल अवस्था विषे चिदाभा
स स्फुरण रूप कला स्थित होती है उपाधि भेद करके त्रिप्रकार करके कल्पीती है जिसको एही प्रकृति सत्त्व रज तम एह त्रिगुणमयी कही है
वेदादिक शास्त्र विषे ५ अविद्यां प्रकृतिं विद्धि गुणत्रितयधर्मिणीम् एषैव संसृतिर्जन्तोरस्याः पारं परं पदम् ६ त्रिगुण धर्म वाली जो प्रकृति है इसको
तू अविद्या जाण एही जीव की संसार रूपा है इसके पार परम पद है ६ अतेयेत्रयः प्रोक्ता गुणास्तस्यास्त्रिधा स्मृताः सत्त्वं रजस्तमश्चेति प्रत्येक
मिदं त्रिगुणः ७ इस अविद्या विषे जो सत्त्व रज तम एह तीन गुण तुमको कहे हैं तिनको भी तीन ही प्रकार करके कहे हैं एक एक गुण तीन तीन
ह प्रकार वाला है ७ नवधेयं विभक्तेयमविद्या गुणभेदतः यावत्किंचिदिदं दृश्यमनयैव तदाश्रितम् ८ एह अविद्या एक एक गुण के
तीन तीन भेदों ते नव प्रकारों करके ऐसे न्यारी होई है जितना कछु एह दृश्य है सो अविद्या ही ने धार्या है ८ ऋषयो मुनयः सिद्धा ना
गा विद्याधराः सुराः इति भागमविद्यायाः सात्त्विकं विद्धि राघव ९ सात्त्विकस्यास्य भागस्य नागविद्याधरास्तमः रजस्तु मुनयः सिद्धाः सत्त्वे
हरिहरादयः ९ ऋषी मुनी सिद्ध नाग विद्याधर देव एह सात्त्विक भाग अविद्या का जाण हे राघव ९ इस सात्त्विक भाग का नाग विद्याधर तम
है तमोगुण मिलित सात्त्विक हैं ऋषी मुनी सिद्ध रजोगुण मिश्रित सात्त्विक हैं हर आदिक देव हर विष्णु ब्रह्मा शुद्ध सात्त्विक हैं सत्त्व जाति दे
वयोनावविद्या प्राकृतैर्गुणैः निर्मलं पदमायाताः सन्तेह हरिहरादयः ११ अविद्या रूप प्रकृति गुणों करके सात्त्विक जाति देवयोनी विषे हरि हर ब्रह्मा शु
द्ध सात्त्विक हैं काहेते निर्मल अविद्या आवरण रहित स्वात्म पद को सदा ही प्राप्त हो रहे हैं स्वाभाविक ब्रह्म विद्या करके ११ सर्वज्ञता सम्यक् कल्पना ज्ञान
दातृता भोक्तृकारणता ये रुद्र देवों विषे समान है हरादिक भक्तों के श्रद्धा के हेतु तां निमित्त हरादिकों की स्तुति करी है हरादिकों से ब्रह्मादिक अल्प हैं सो
विषे तारतम्य नहीं है हरादिकों विषे जो अल्पता निष्कर्ष करते हैं सो राक्षस पिशाच अवयव है तेहें एह शास्त्र विवेक हि आहे ९ सात्त्विकः प्राकृतो भागो राम
तज्ज्ञो हि याभवेत् न स मुक्त इत्युच्यते नासौ मुक्त उच्यते १२ ब्रह्मादिक त्रिमूर्ति रूप प्रकृति का भाग सात्त्विक है ब्रह्मादिकों का जो उपासक सो

अयं परस्त्वयं नेति संभ्रमाभिन्ने विशिष्ट यातुधानाः स्वजायन्ते भ्रामस्य नसंशयः =

पुनः

ज्ञान को प्राप्त होइ के फेर नहीं उत्पन्न होता है एह हरि हरादिक सदा आवरण के अभाव ते स्वाभाविक जीवन्मुक्त कही ते हैं १२ ते न रुद्राद
यो होते सत्त्वभागा महामते तिष्ठन्ति मुक्ताः शरूपाया वद्देह जगत्स्थितौ १३ हे महाबुद्धे राम एह रुद्रादिक प्रकृति के शुद्ध सात्त्विक अंश निरावर
ण ज्ञान प्रभाव करके जीवन्मुक्त पुरुष जां ताईं देह है तां ताईं जगत्स्थिति विषे स्थित होते हैं निश्चय करके १३ यावद्देहं महात्मानो जीव
न्मुक्ता व्यवस्थिताः विदेहमुक्ता देहान्ते स्थास्यन्ति परमे पदे १४ जां ताईं देह है तां ताईं रुद्रादिक महात्मा जीवन्मुक्त संसार व्यवहार विषे
स्थित हैं देह के अंत होए विदेह मुक्त स्वरूप शुद्ध ब्रह्म स्वभाव विषे स्थित होवेंगे १४ भागएष त्वविद्याया एव विद्यात्वमागतः बीजं फ
लत्वमायाति फलमायाति बीजताम् १५ अविद्या का एह शुद्ध सात्त्विक अंश मुक्ति कारणता करके विद्या स्वरूप को प्राप्त होता है बीज जो है का
रण अविद्या सो कार्य रूप स्वहितता अविद्या रूप फल को प्राप्त होती है कार्य विद्या रूप जो है फल सो प्रलय विषे कारण विद्या रूप
जो है बीज तिस रूप को प्राप्त होता है १५ उदेत्यविद्या विद्यायाः सलिलादिव बुद्बुदः विद्यायां लीयते विद्या सलिलादिव बुद्बुदः १६ कारण अवि
द्या विषे जो शुद्ध सात्त्विक भाग है सो विद्या है विद्या स्वरूप देहधारी जो हैं ब्रह्मादिक हैं तिन्हां ते एह त्रिरूप अविद्या उत्पन्न होती है जैसे जल से बुद्बुद

होते हैं विद्यास्वरूपजो हैं रुद्रादिकों विषें सृष्टिरूप अविद्या लीन होती है जल विषें जैसे वुद्वुद लीन होते है कार्याऽविद्या के उदय अ
स्तलय तिनके आधार होवने कर के भी विद्याधारी रवाले जो हैं रुद्रादिक तिनां का अविद्या स्वरूप ही है १६ पयस्तरङ्गयोर्द्वैतभावनादे
व भिन्नता विद्याऽविद्यादृशोर्भेदभावनादेव भिन्नता १७ जल तरंगों का द्वैत कल्पना तें ही भिन्नता है जैसे तैसे ही विद्या अविद्या दृष्टी के भेद क
ल्पनातें ही भिन्नता है १७ पयस्तरङ्गयोरैक्यं यथैव परमार्थतः नाऽविद्यात्वन विद्यात्वमिह किंचन विद्यते १८ जैसे परमार्थ तें जल तरंगों का
एकता परमार्थ तें है तैसे चैतन्य स्वरूप विषें अविद्या स्वरूप नहीं विद्यास्वरूप भी नहीं है केवल एक ही चैतन्य परमार्थ तें एक ही है १८ विद्या

19

विद्यादृशो यत्त्वायद्दृष्टिर्हि तदृष्टिर्हि प्रतियोगिव्यवच्छेदवशादेतद्दूहृह १९ विद्यादृष्टि जो है अरु अविद्यादृष्टि जो है इन की जो है परस्प
र भेददृष्टि अरु जो है परस्पर विरोधदृष्टि इन का त्याग कर के जो वस्तु है सो ही सत्य है विद्यादृष्टि कर के अविद्यादृष्टि का वाध होता है वि
द्यादृष्टि जो है अविद्या की वाधक तिस का किस कर के त्याग होता है ऐसे श्री राम की शंका जानि कर श्री वसिष्ठ मुनी कहते भए हे रघुकुल के उद्धार कर

णे वाले हे राम विद्यादृष्टि विषें जो वाधकता है तिस की प्रतियोगिनी अविद्या है वाध कर के अविद्या असत होई है अविद्या ने जनाई जो है वाध
कता असत है वाधकता वाली विद्या भी असत है असत जाणनी ही विद्या का त्याग है ऐसे में कथन किया है वाधक ही एक तवृत्तिमान भविद्या का लवि
खें अत्यन्ताऽभाव १९ विद्याऽविद्यादृशो न स्तः शेष स्वद्रूपदो भव नाऽविद्यास्ति न विद्यास्ति इति कल्पनया ऽनया २० विद्या की दृष्टि अविद्या की दृष्टि परमार्थ
कर के नहीं है वाकी रहि आदि चिन्मात्र तिस विषें निश्चय को वाध नहीं अविद्या है नहीं विद्या है परमार्थ कर के अविद्या विद्या की कल्पना व्यर्थ है।
२० किंचिदस्ति न किंचिद्यत्त्विं संविदितितत्स्थितम् तदेवाऽविदिताभास सद्विद्येत्युदाहृतम् २१ कछु वस्तु है जिस वस्तु विषें हो रहे कछु वस्तु नहीं
है जो वस्तु चित संवित ऐसे कल्पितनाम कर के शास्त्रीय व्यवहार विषें स्थित है सो ही शुद्ध वस्तु अज्ञात प्रकाश स्वरूप अविद्या नाम कर के शा
स्त्र विषें कहि आहे २१ विदितसन्नदेव तु सविद्यात्त्वयसंस्थितम् विद्याऽभावादविद्यात्वा मिथ्यैवोदेति कल्पना २२ सो ही शुद्ध वस्तु जान्या हुआ श्रुति
ज्ञान द्वय पद नाम वाला होता है अरु तिस विद्या के अभाव तें अविद्या नाम कल्पना मिथ्या ही उदय को प्राप्त होती है २२ मिथः स्वान्तं तयोरन्तश्छायात
पनयोरिव अविद्यायां विलीनायां क्षीणे द्वे एव कल्पने २३ मन विषें स्थित जो है परस्पर विरुद्ध छाया धूप की न्याई विद्या अविद्या इन के मध्य जो है अवि

द्या सो सव में अन्तर जो चैतन्य है तिस विषें वाधक कर के लीन होवे विद्या अविद्या एह दो ही कल्पना क्षीण होती है २३ एतेऽवली ये ते अवाप्य प
रिशिष्यते अविद्या संक्षयात्क्षीणा विद्यापक्षोऽपि राघव २४ हे राघव एह दो विद्या अविद्या जव लीन होती है तव पाऊना योग्य जो है विद्या का फल प्रका
श रूप पूर्णानन्द स्वरूप शेष रहता है विद्या का वाधक कोई नहीं विद्या भी किउं नहीं शेष रहे इस शंका को दूर करते हैं श्री वसिष्ठ मुनि हे राघव अ
विद्या के क्षय तें विद्या पक्ष भी क्षीण होता है जैसे इंधन के क्षय तें अग्नि क्षीण होती है विद्या का इंधन अविद्या है २४ यच्छिष्टं न किंचिद्विद्या किंवि
द्यापि स्मात्ततम् तच्चेदृशपते सर्वं न किंचन चदृश्यते २५ जो शेष है सो सर्व वाध स्वरूप है तिस तें नहीं कछु है परमार्थ सद्रूप तें कछु है तिस श
वस्वरूप विषें परमार्थ रूप कर के सव कछु देखीता है मायिक रूप कर के नहीं कछु देखीता है इस तें आत्मदर्शन ही परमार्थ तें सर्व दर्शन है सर्व वा
धदर्शन है २५ वटस्थ वटधाना धामि वपुष्पफलादि मान सर्वशक्तिहि किंचित्त्वं सर्वशक्तिसमस्रकम् २६ जैसे वट वीज विषें वट वृक्ष पुष्प फलादि स

हित सत्त्वरूप करके स्थित है सो वट वृक्ष स्थूलरूप कर के कालान्तर कर के प्रकट होता है तैसे अज्ञान कर के आवृत जो है चैतन्य तिस विषें सर्वशक्तिमय सत्वमि
चिन्नावे है जिस तें सर्वशक्तिमय अज्ञानोपाधिक करके सर्व शक्ती का संप्रेरक है चैतन्य २६ नभसो ऽपि पृथिव्यंस्पन्दनं च स्पन्दं चिदात्मकम् सर्वकालोद्युपावृक्षैव
या नित्यं रहेंतैतथा २७ तत्रैवं संस्थितं सर्वं देशकालक्रमोदये यथा स्फुलिङ्गा अनलाद्यथाभासो दिवाकरात् २८ तस्मात्तथैव मानित्यं निस्फुरन्माः सविदच्वितः
आकाश तें भी अधिक सन्न्य है काहे तें आकाश विषें शब्द है चैतन्य विषें शब्द भी नहीं परमार्थ कर के सन्न्य नहीं जिस तें चैतन्य स्वरूप है जैसे सूर्य का न्न विषें
अग्नि है जैसे इन्धन विषें हुत है तैसे चैतन्य विषें सर्व जगत स्थित है देश काल क्रम के उदय होत संते चैतन्य तें प्रकट होते है जैसे अग्नि तें चिनगारिआं प्रकर
होतिआं है जैसे सूर्य तें किरणां प्रकट होतिआं है तैसे ब्रह्म चैतन्य से जीव चैतन्य अन्तःकरणादिक उपाधि सहित प्रकट होते हैं यथाम्भोधिस्तरङ्गाणां

स्फुरते सो १८

यथामलमणिकान्तिनाम् [२९] कोशोनित्यमनन्तानां तथात्मसंविदां त्विषाम् जैसे समुद्र तरंगों का भंडार है जैसे निर्मल मणि कांति ओं का भंडार है तैसे ब्र
अनन्त॰ ह्म जीव चेतन्य कांति ओं का नित्य भंडार है २९। सबाह्याभ्यन्तरे सर्वं वस्त्वन्यत्त्वेव वस्तु सत् ॥ सर्वं दैवाविनाशात्म कुम्भानां गगनं यथा। देह के अन्तर
देह के बाहर जो जगत है सो सद्वस्तु स्वरूप ब्रह्म विषें ही है जिस तें जगत की सत्ता सद्वस्तु की ही सत्ता है जैसे कल्पित सर्प की सत्ता रज्जु सत्ता ही
है वस्तु जो है सदा अविनाश स्वरूप है जीवों का जो ब्रह्म तें निकलना है सो जीवों की जो है उपाधि अन्तःकरणादिक सो निकलना है ब्रह्म विषें। है॰
जो कल्पित माया है तिस तें वास्तव जीवों का निकलना नहीं होता जैसे कुंभों के निकलने तें कुंभाकाश निकलता है ३०। यथा मलेऽयः स्पन्देऽ
यस्कान्तस्य कर्तृता ३१ अकर्तृत्वेव हि तथा कर्तृतास्य कथ्यते जैसे अयस्कान्त मणि जो है चुंबक मणि तिस के निकट होने तें लोहा चलता है चुंबक
मणि लोहे के चलने का कर्ता है वास्तव कर्ता नहीं तैसे ही जीव चेतन्य के निकट होने तें मन इन्द्रियां देह चेष्टा करते हैं जीव चेष्टा का अकर्ता ही क
हा है ३१। मणिसन्निधिमात्रेण यथायः स्पन्दते जडम्। तत्सत्तया तथैवायं देहश्चेतत्यचिद्वपुः। जैसे जड लोहा चुंबक मणि के सन्निधान करके
किंचित चलता है तैसे ही जीव की सन्निधान करके जड शरीर स्थूल सूक्ष्म चेष्टा करता है ३२। तत्र स्थितं जगद्दिव्यं जगदेकं बीजं चिन्मणिस्
विदितं कल्पितकल्पेन लोलोर्मिजालमिव वारिणि चित्तरूपं लोकरूपं एव तिष्ठति किंचिदस्ति ३३ मोक्षोपाये विद्यानिरूपणं नाम नवमः स
र्गः ९। चित नाम जिस का ऐसा जो है जगत का एक बीज अनन्त ब्रह्म तिस विषें स्थित है एह विचित्र जगत चिरकाल का काहे तें सर्वसर्व
रूपे हि विषें जो जगत है तिस की जो कल्पित रागद्वेष वासना तिस करके इन्द्र तें तृणपर्यंत कल्पना करके चिरकाल अज्ञान तें ब्रह्म विषें जगत भा
सता है जैसे जल विषें चंचल तरंग समूह विचित्र भासते हैं जो ब्रह्म ज्ञान तें आकाश तें भी रूपरहित स्थूल सूक्ष्म प्रपंच स्वरूप तिस विषें अ
न वस्तु कछु भी नहीं ३३ इति निर्वाणभाषायां नवमः सर्गः ९ श्रीवसिष्ठ उवाच तस्माद्यत्किंचिदेवेदं जगत्स्थावरजंगमम् न किंचि
दुक्तताप्राप्यं यत्किंचिदिति विद्धि हे १ जिस तें जगत जीव भेद का अज्ञान ब्रह्म मात्रता तें एह स्थावर जंगम जगत कछु भी नहीं न कुछ उत्पत्ति भाव को
प्राप्त हुआ है हे राम एह जगत अनिर्वचनीय माया मात्र जानो १ यत्का चित्कलना भावाभावमयात्मिका तदिदं राम जीवादि सर्वं व्यर्थ किमीहसे २
जिस ब्रह्म विषें भाव अभाव मय कल्पना कोई नहीं सो ब्रह्म ही एह सब जीव जगत रूप अज्ञान करके हे राम भासता है तुम किउं व्यर्थ ब्रह्म तें भिन्न कु
छ वस्तु चाहते हो २ सबन्धोयमसावन्तर्हृदिदात्म्ययदिष्यते न तल्लभामहे सर्पस्रजुसर्पभ्रमादिव ३ जो संबन्ध देह विषें अहंता रूप है अन्तर हृद
य विषें बाहर वस्तु विषें ममता रूप संबंध है तिस संबंध को असी विचार करके नहीं लभते हो जैसे रज्जु विषें सर्प भ्रम तें भासता जो है सर्प तिस को
नहीं लभते हो ३ अपरिज्ञातआत्मैवभ्रमता समुपागतः ज्ञातआत्मत्वमायाति सीमान्तःसर्वसंविदाम् ४ अज्ञात आत्मा ही जगत भ्रांति को प्राप्त हो
आत्मा॰ आ है ज्ञात आत्मा अपने शुद्ध आत्म स्वरूप को प्राप्त होता है कैसा है सब जो है देहादि ज्ञान तिन के अवधी का अन्त है आत्मा के ज्ञान करके देहा
दिकों विषें अहंता ममतादिक भ्रांति ज्ञानों का नाश होता है ४ अविद्यैषच्यते लोके चित्तं त्यक्तमलमाश्रिता चेत्यतो नात्मतामेति सर्वोपाधिविवर्जिता
५ चेत्य जो है हम अहंकारादिक तिस का बीज जो है मल आत्मा का अज्ञान तिस विषें स्थित जो है स्थित चेतनता अपनी सत्ता के अध्यास करके।
सो लोक विषें अविद्या ऐसे कहीती है सो ही चेतनता अविद्या करके सर्व उपाधि से रहित होई हम अपसे परे जो है आत्म स्वरूप तिस को प्राप्त होती है
५ चिन्मात्रं हि पुरुषस्तस्मिन्नेव चनश्यति स्थिते तिष्ठति चात्मायं घटे सति राम्बरम् ६ पुरुष जो है जीवात्मा सो चित्त के साथ तादात्म्याध्यास तें चि
त्त के अधीन है इस कारण तें चित्त सुषुप्ति मूर्छादिक अवस्था विषें जब नष्ट होता है तब आत्मा भी नाश को प्राप्त होता जैसा होता है चित्त जब स्थित होता
है तब आत्मा भी स्थित होता जैसा भासता है जैसे घट होने तें घटाकाश स्थित होता है घट नाश होने तें घटाकाश भी नष्ट जैसा भासता परमार्थ करके नाश
नहीं जीवात्मा का ६ गच्छत्स्वपति गच्छन्त्यां स्थिते तिष्ठ शिशुर्यथा भ्रान्तमेवमिदं चेतः पश्यत्यात्मानमाकुलम् ७ एह जीवात्मा भ्रांत चित्त को ही अप
ने आत्म स्वरूप को व्याकुल जानता है चित्त स्थूल देह रूप हुआ चलता है आत्मा आप को चलता देखता है चित्त स्थित होता है आप को स्थित देख
ता है जैसे बालक चलते जल विषें अपने प्रतिबिंब को चलता देख कर आप को जानता है मैं चलता हूं स्थिर जल विषें स्थिर प्रतिबिंब को देख

निर्वाण
भाषा
२

२०

केआपकों स्थिर देखता है कोशकारवदात्मानं वासनातंतुतन्तुभिः वेष्टयेच्चेतनो नैवासन्नाबध्यते ८ जैसे कोशकार जो है कृमिविशेष सो तंतु करके आपको बांधता है तैसे यह जीवात्मा चित्त देह अहं जो है वासनारूप तन्तु तिनों करके आपको बांधता है वालभाव करके विचारके अभावतें ८ श्रीरामउवाच मौर्ख्यमप्यल्पवानन्तामागता सम्यवस्थितम् स्थावरादिष्वप्राप्नोति श्रीमति प्रभो ९ हे लतासे आदिक जो हैं स्थावरादिक शरीर तिनविषें जो है अज्ञान अल्प तिनता अज्ञानताको प्राप्त होइ निश्चल स्थित है हे प्रभो सो मूढता कैसी होती है यह श्रीरामने वसिष्ठजीको पूछ्यो भया ९ श्रीवसिष्ठउवाच अमनस्त्वमसंशान्तमनस्त्वादपि विच्युतम् तदस्य रूपमाश्रित्य स्थितेषु स्थावरेषु चित्त १० श्रीवसिष्ठउवाच हे राम स्थावरा विषें यह जीव चेतनता मूढता स्वरूपको धारकर स्थित है कैसा है मूढतारूप मनकी लयदशाको नहीं प्राप्त होता है जैसे सुषुप्तदशा विषें सांसारिक सुखदुःखोंका स्पर्शन नहीं होता है मनोलय करके स्थावरों विषें सुखदुःखोंका ज्ञान होता है होर कैसा है मूढताका स्वरूप सर्वोऽप रजाननेको समर्थ जो है मनका स्वभाव तिससे भी रहित है १० तत्र दूरस्थिता मुक्तिर्मन्ये वेद्यविदां वर [illegible] मूकान्धजडवत्तत्र सत्तामात्रेण तिष्ठति ११ अवश्य जानने योग्य जो है आत्मतत्त्व तिसके जाननेहारे जो हैं तिनों विषें श्रेष्ठ हे राम तिस स्थावरभाव विषें मुक्ति दूर स्थित है यह मैं मनता हौं जिस स्थावर देह विषें पूर्व [illegible] इन्द्रिय बाह्य इन्द्रियाँ सो नहीं हैं विचार करणेको असमर्थ हैं ऐसी चेतनता स्थावरोंकी बहुत दुःख देनेहारी है कर्मेन्द्रियोंकी चेष्टा शून्यता तें मूक जैसी है ज्ञानेन्द्रियोंकी प्रचारशून्यता तें अंध जैसी है मनके प्रचारशून्यता तें जड जैसी चेतनता सत्तामात्र करके स्थावरों विषें स्थित है ११ श्रीरामउवाच सत्ता [illegible] स्थावरेषु चित्त तदा दूरस्थिता मुक्तिर्मन्ये वेद्यविदां वर १२ श्रीरामउवाच हे मुने जिनो स्थावरों विषें ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रियोंके व्यापार शून्यता करके अहंता सत्तामात्र करके चेतनता स्थित है तिनो स्थावरों विषें हे ब्रह्मज्ञानियों मध्य विषें श्रेष्ठ निकट मुक्ति स्थित है यह हम मानते हौं जैसे योगीश्वरोंकी इंद्रिय व्यापार विना स्थिति होनेते वासना क्षय मनोनाश शीघ्र होता है मुक्ति निकट होती है तैसे स्थावरोंकी भी होवे श्रीवसिष्ठउवाच बुद्धिपूर्वं विचार्येदं यथावत्स्वस्वलोकनात् सत्तासामान्यबोधो यः समोदयश्चेदनुत्तमः १३ निष्कामशास्त्रोक्त कर्म करणे तें उत्पन्न होई जो शुद्ध बुद्धि तिस करके वैराग्यादि साधनपूर्वक श्रीसद्गुरुपास वेदांतशास्त्रका विचार करके यथार्थ परमात्मवस्तुके दर्शन तें जब अद्वैत परमानन्द विषें सत्तामात्रका दृढ बोध होवे तब सो अनुत्तम मोक्ष है ऐसा बोध अति दुर्लभ है स्थावरोंको तिससे मोक्ष नहीं १३ परिज्ञाय परित्यागो वासनानां स उत्तमः सत्तासामान्यरूपत्वं तत्कैवल्यपदं विदुः १४ आत्मतत्त्वको जाणकर वासनाका जो परित्याग है सो उत्तम त्याग है सो ही सत्तासामान्यरूप कैवल्यपद है यह तत्त्ववेत्ता जानते हैं १४ विचार्यार्यैः सह लोकशास्त्राध्यात्मभावनात् सत्तासामान्यनिष्ठत्वं यत्तद्ब्रह्म परं विदुः १५ गुरु संतोंके आदिक [illegible] साथ वेदान्तशास्त्रका विचार कर मनन पूर्वक आत्म निदिध्यासन ते आत्मतत्त्वके दर्शन ते सत्तामात्र विषें जो स्थिति है सो परब्रह्म स्थिति ज्ञानी जानते हैं १५ अन्तःस्थमास्थितानां ह्यायत्र बीजं स्वांकुरः वासनानां तु सुषुप्तं [illegible] द्विजन्मप्रदं पुनः १६ जिस अवस्था विषें अंदर वासना सत्ता स्थित है [illegible] जैसे बीज विषें अंकुर सत्ता स्थित है तिस अवस्थाको सुषुप्त जानि फेर जन्म देनेहारी १६ अन्तःसंलीनमननं पूरितः सुप्तवासनम् सुषुप्तं जडधर्मा हि जन्मदुःखप्रदं तदम् १७ अंतर लीन है संकल्प जिस विषें विचारो और सुप्त होइ राग द्वेष वासना जिस विषें ऐसी सुषुप्त अवस्था पाषाणादिकोंकी जैसी जड स्वभावा भी है फेर जन्म दुःखोंके देनेहारी है १७ स्थावरादि यथेतेहि समस्ता जडधर्मिणः सुषुप्तपदमारूढा जन्मयोग्याः पुनः पुनः १८ यह स्थावरादिक सब जडस्वभाव हैं सुषुप्तपद विषें आरूढ हैं वारंवार जन्मके योग्य हैं १८ यथा बीजेषु पुष्पादि मृदो राशौ च घटो यथा तथान्तः संस्थिता साधो स्थावरेषु स्ववासना १९ जैसे बीजों विषें अंकुरादि पुष्पपर्यंत स्थित है जैसे मृत्तिकाके ढेर विषें घट स्थित है हे साधो राम तैसे स्थावरों विषें राग द्वेष वासना अंतर स्थित है १९ यत्रास्ति वासनाबीजं तत्सुषुप्तं न सिध्यये निर्बीजा वासना यत्र तत्तुर्यं सिद्धिदं स्मृतम् २० जिस विषें वासनाबीज है सो सुषुप्त मोक्षसिद्धिका कारण नहीं जिस विषें ज्ञान अग्नि करके दग्ध होई बीजशक्ति जिसकी ऐसी वासना है सो तुर्यपद सिद्धिदायक कहिया है शास्त्र विषें २० वासनाग्निस्तथा चैव ऋणव्याधिद्विषामपि स्नेहवैरविषाणां यः शेषः स्वल्पोपि बाधते २१ वासनाका तैसे अग्निका ऋणका रोगका वैरीका रागका वैरका विषका अल्प भी शेष स्थित क्रम करके वृद्धिको प्राप्त दुःख देता है २१

एकत्र रुके शिष्य=

दशाकी जैसी

सोऽसुसहितवासनास्थावरा
दिवस्तु विषे स्थित है ॥४

निर्दग्धवासनाबीजः सत्तासामान्यरूपवान् सदेहो वा विदेहो वा न भूयो दुःखभाग्भवेत् २१ ज्ञानाग्निकरके निर्दग्ध किआ है संसार अंकुर का कारण वासनाबीज
जिसने ऐसा जो है ज्ञानी अद्वैत आत्मसत्तामात्रस्वरूपवान् सो देहसंयुक्त हो अथवा देहरहित हो फेर दुःखभागी नहीं होता है २२ चित्शक्तिर्वासनाबीजरूपिणी स्था
पर्धर्मिणी स्थितान्तर्वासनया निसस्थावरादिषु वस्तुषु २२ अज्ञान के आवरणवाली जो चैतन्यशक्ति है सो ही वासना का बीजरूपा है सुषुप्ति स्वभावा वासनाविषे र
सरूप करके स्थित है जैसे बीज विषे अंकुर के उत्पत्ति करणेवाली रसरूपाशक्ति है अग्निदाह करके जैसे रस नष्ट होता है तैसे ज्ञान करके आवरण रस दग्ध होता
है २३ बीजेषूल्लासरूपेण जाड्येन जडरूपिषु द्रव्येषु द्रव्यभावेन काठिन्येन तरेषु च २४ बीजां विषे जो होती है पृथिवी जल के संयोग ते उल्लासता तिस
कर के जानी ती जो है बीजां विषे अंकुर जनने की शक्ति रूप करके चित्शक्ति स्थित है जड स्वरूपां विषे जड रूप करके स्थित है धनरत्नादि द्रव्यां विषे संग्र
ह भाव करके स्थित है शिलादिकां विषे कठिनता रूप करके स्थित है २४ भस्मत्वं यानि तद्रूपा पाषाणे पुरुरूपिणी असिते घसिते स्थिता पीनधारत
या सिषु २५ भस्म विषे धड विषे अनित्यरूपा अणुरूपा भी स्थित है मलिनां विषे नेत्र इंद्रिय के आधार विषे भी मलिनता को मलनता रूप स्थिति करके
खड्गां विषे तीक्ष्णधारा रूप करके चित्शक्ति है २५ आत्माशक्तिः पदार्थेषु तथा बहुपटादिषु सर्वत्र सत्तासामान्यरूपमाश्रित्य तिष्ठति २६ घटपटादि
सर्व वस्तु विषे आत्मा ही सत्तासामान्यरूप धारके घट विषे जलधारणशक्तिरूप पट विषे शीतनिवारणादि नाना शक्तिरूप होआ स्थित है २६ इतीयु
म विलाहस्य दशामासर्य संस्थिता यथा हृदा पटा श्राद्धुम्हा लबिनी तथा २७ इस प्रकार करके यह चित्शक्ति संसार हरण दशा को सर करके स्थित है
जैसे मेघ की हुई है वृक्ष के जैसी ठंढक नेहारी जिसकी ऐसी जो है वर्षा ऋतु सो अंबर को सर करके स्थित होती है २७ सद्रूपमनुभूयैवेतत्स्थितं प्रवि
चारितम् असत्सर्वं सर्वतो व्यापि सद्विना सन्मयात्मकम् २८ इस अज्ञानता ते चित्शक्ति का स्वरूप भली प्रकार विचारित कहिआ है सर्व से भिन्न सर्वव्यापक सत्
जैसा असत्माया कार्य के साथ अभेद को प्राप्त होआ भासता है २८ आत्मदृष्टिरहंदृष्टिः संसारभ्रमदायिनी दृष्टा सती समस्तानां दुःखानां लयकारिणी २९
आत्मारूपदृष्टि नहीं साक्षात्कार किई होई संसारभ्रम देती है आत्मदृष्टि देखी होई सर्व दुःखां का लय करती है २९ असम्यग्दर्शनं यदविद्यां(?) पंडिता विदु
र्यैः अविद्या हि जगद्धेतुस्ततः सर्वं प्रवर्तते ३० इस आत्मदृष्टि दा जो अदर्शन है दर्शनविरोधी आवरण है सो पंडितां ने अविद्या ऐसे कहीता है अविद्या ही
जगत् का कारण है अविद्या ते सब अहंकार कामक्रोधादिक प्रवृत्त होता है ३० अविद्या रूपरहिता यावदेवावलोक्यते तावद्गलति तुहिनं यथातपे।
३१ अविद्या वास्तवस्वरूप करके रहित है जिस समय विषे अविद्या को विचारदृष्टि करके देखीता है तिसी समय विषे गलती है शीघ्र जैसे बर
फ की कणी धूप विषे गलती है ३१ यथा तृष्णा गलति निद्रा यावत्कलनया मनाक् विमृश्यत्याशु तावन्निद्रा न स्वविलीयते ३२ जैसे मनुष्य निद्रा
थोडी गलती होई अपने चित्त के वृत्तांत को बुद्धिवृत्ति करके विचारता है जिस समय विषे तिसी समय विषे तिस मनुष्य की निद्रा लीन होती
है ३२ यथा चक्रीहृत्सु तदितियाव दिकल्प्यते अविद्याली यते तावदालोकेनान्यता यथा ३३ जैसे सूर्य दिवस के सो है क्या सत् है अथवा अमर्ष।
भ्रांति करके कल्पित है ऐसे जब विचारीता है तब रज्जु की अविद्याली नहीं होती है जैसे प्रकाश करके नेत्रां का अंधकार रूप आवरण लीन होता है
३३ दीपहस्तो यथाभ्येति तमोरूपदिदृक्षया तथा विलीयते सर्वं तमस्तापैर्हृतं यथा ३४ जैसे दीपक लेकर के अंधकार का स्वरूप देखने की इच्छा कर
के अंधकार के सन्मुख जाता है तब जैसे अंधकार लीन होता है तैसे विचार करके अविद्या संयुक्त सर्व जगत लीन होता है जैसे संताप करके हू
लीन होता है ३४ न च संलक्ष्यते दीपे तमसो रूपनिश्चयः उदेति केवलं धाम धूसो विमलमूर्तिमान् ३५ दीपक लिए होए अंधकार का स्वरूप निश्चय नहीं
लखीता है केवल अंधकार का नाश होता है निर्मलमूर्तिवाला ३५ एवमालोक्यमानेषा स्वाविद्याविलयं याति पलायते असत्पदं वस्तु वा हृष्यते तत्त्वविचार

उदयः॰

णात् ३६ वैसे अंधकार के जैसे अविद्या मंद विचार करके देखीती मंद मंद जाती है भले विचार करके नस जाती है अवस्तु ते अविद्या असत्स्वरूप है

ही॰

अविचार करके देखीती है ३६ आलोक आगते याह तमस्तत्त्वं यथा तद्वस्तुतया विद्याया स्वत्र वस्तुतया गीयते ३७ जैसे प्रकाश आए होए अंधकार

सुसत्वरूप॰

वस्तु देखीता है तैसे आत्मविचार आए होए अविद्या अवस्तु देखीती है कोई अंधकार को युक्ति करके वस्तुरूपता करे प्रकाश करके अंधकार रूप
ता है तिसका अनुगत भाव नहीं होता है जैसे इसना करके जल की घी तलता उपती है प्रकाश आगए होए फेर अंधकार देखीता है जैसे उसता आगए होए

दिकां॰

जलकी शीतलताफेर देखीती है एह युक्ति है तथापि अविद्याका असत्स्वरूप त्रैकालिक अत्यंताऽभाव के अनुभव करके ज्ञानियोंको प्रतीत होता
ही है ३७ यावन्नालोक्यते तावन्न किंचिद् विहश्यते आलोकितेयथाऽविद्या तत्रथा प्रतिपद्यते ३८ जैसे कुसंस्कारज्जुआदिक अंधकारजनित सर्पादिक जो
ताई नहीं विचारकर देखीता है तांताई सत्यवस्तु नहीं देखीता है विचारकर देखने से एह जिस स्वभाववाली अविद्या है जैसे वस्तुतत्त्व है तैसेही पाईता है
३८ रक्तमांसास्थियंत्रेऽस्मिन्कः स्यामहमिति सत्तम यावद्विचार्यते तावत्सर्वमापुविलीयते ३९ रक्तमांस अस्थीका यंत्र शरीर है इस विषे मैं कौन हूं
एह आप जब विचारीता है तबही शरीर विषें अहंता ममता भ्रमादिक सब पीछे लीन होता है ३९ आद्यंतयोः सद्रूपेनूनं परिदृते हृदा सर्वस्मिन्नेव यः
शेषसम विद्याक्षयं विद्धि ४० विचारवाले मनकरके आदिअंत विषें असत्स्वरूप स्वरूप निश्चय करके दूरकिते होए जो शेष रहता चिदात्मा है तिसको
अविद्याक्षय जानते हैं ज्ञानी आत्माविषें अत्यंत अविद्याका अभाव आत्माते भिन्न नहीं ४० तत्र किंचिद्यत्किंचिद्धातत्सद्भ्रान्तिवशात्मतम् नहस्तत्तु पादेय
यदविद्याभिवर्जते ४१ जिसके ज्ञानकर अविद्यानिवृत होती है सो कुछ दृश्यरूप नहीं कुछ अकथ्य सो सत्ब्रह्मही है समानता नहीं है सो सारवस्तु सोही ग्रहणक
रणा ४१ रूपंस्वनामपंत्वसाज्ञायतेनिःस्वभावकम् नहि जिह्वागतरसास्वादो नस्पर्शः प्रतीयते ४२ इस अविद्याका स्वरूप अपनी सत्तारहित अपने नामसे

अविद्यानाम॰

मिथ्या॰

ही जाणीता है माया अविद्यानाम स्वरूप आदिपदार्थी विषें प्रसिद्ध है जिह्वाविषे रसका स्वाद जिह्वाते ही प्रतीत होता है दूर समासते नहीं प्रतीत होता है जैसे
तैसे अविद्याका मिथ्यास्वभाव अविद्यानामसे ही जानीता है ४२ नाविद्यास्तीत्यपि ब्रह्मवेदम् तदपि तनम् सदसत्कलनास्पारमेशविद्येनमोस्तुतम्
४३ अविद्या कहीं देशकाल विषे सत नहीं एह भासमान अखंड ब्रह्मही है जिस ब्रह्मने सर्वजगत् अपने प्रकाशकरके शोभित किया है के सा
है जगत् सत्असत्कल्पनाका है विस्तार जिस विषे ४३ एतावदेतामविद्यायाः तेदं ब्रह्मेतिनिश्चयः एतदेवस्त्वयोः स्याद्ब्रह्मयमितिनिश्चयः ४४ इसना
ही अविद्याका स्वरूप है जो एह जगत ब्रह्म नहीं एह निश्चय है एही अविद्याका दर्शन है जो एह सर्व ब्रह्म है एह निश्चय है ४४ घटपटशकटावभासजालं न विभुरिति स्फुटि
तेऽस्मात् विद्या घटपटशकटावभासजालविभुरिति चेत् दलितो वसा तविद्या ४५ मोक्षोपाये ऽविद्याचिकित्सा नाम दशमः सर्गः १० घटशकटपटादिक आभास
का जो जगत् जाल सो विभुब्रह्म नहीं इसनिश्चय करके सो अविद्या सर्वत्र विषे उदयको प्राप्त होती है घटपटशकटादिक आभास मात्र जगजाल विभु है एह
निश्चय दृढ जब होवे तब सो अविद्या क्षय पावती है ४५ इति निर्वाणभाषायां दशमः सर्गः १० श्रीवसिष्ठ उवाच पुनः प्रनतिदं राम प्रबोधार्थं मयोच्यते अभ्यासेन वि
ना साधो नाभ्युदेत्यात्मभावना १ वसिष्ठ उवाच हे राम वारंवार एह ब्रह्मका उपदेश प्रकारांतरें करके कहीता जो है सो ज्ञानके दृढता निमित्त है साधो अभ्यास के
विना आत्मभावना नहीं उदय होती है १ अज्ञानमेतद्बलवद्वितत्वरनामकम् जन्मान्तरसहस्रस्थं स्थैर्यवनिस्थितिमुपागतम् २ सर्वाह्याभ्यन्तरसर्वेन्द्रियैस्तु भूय
ते भावाभावेषु देहस्पतेनानिह्नूतगतम् २ एह अज्ञान बलवान् है अविद्या है होर नाम जिसका अनेक हजार जन्मांतरोंसे उठि आई है दृढ स्थितिको प्राप्त आई है २
मे आदिक जो है इंद्रियां अतिप्रबल बाह्याभ्यंतर बहुप्रमाण तिनोंकरके अनुभव होता है देहरूप अज्ञानका देहके जो हैं भावाऽवस्था जीवन जागरादिक तिनो विषें
इंद्रियांकरके देहका अनुभव होता है देहके जो हैं अभावावस्था मरण शवलयादिक तिनोविषें साक्षीने अनुभव करीता है अज्ञान तिसते अतिप्रबल है ज्ञानाभ्या
सविना नष्ट नहीं होता है ३ आत्मज्ञानेनतसर्वेषामिन्द्रियाणामगोचरम् सक्तेवलमाधाति मनःषष्ठेन्द्रियक्षये ४ आत्मज्ञान तां सर्व इंद्रियोंका अविषय है म
न है छट्ठा जिनों विषें ऐसी आं इंद्रियां हननितिनाके लय होते केवल भासता है ४ प्रोल्लसत्येन्द्रियं जालं नियस्थितं तत्तथा किल यातिशक्तता जन्तोः आत्म

प्र॰

ज्ञानी तदक्रिमस ५ इन्द्रिय ज्ञानविषें तांकाल है करकरके जो आत्मतत्त्वस्थित है लौकिक भ्रमसत्ताकालतें वर्तता है सो देहाभिमानी जीवको कैसे निश्चय क
रके प्रत्यक्ष होवे ५ तस्माद्विद्यालतामेतां प्रच्छाद्य हृदयद्रुमे ज्ञानाभ्यासविलासासिधारया छिन्धि सिद्धये ६ हे राम एह अविद्यालता हृदयरूप वृ
क्ष विषे चढी होई है इसको अवणमननादिक जो है ज्ञानाभ्यासके विलास स्वरूप खड्ग धारा तिनोंकरके छेदो आत्मसाक्षात्कार की सिद्धि निमित्त ६ यथा
विहरति ज्ञानज्ञेयो जनक भूपतिः आत्मज्ञानाभ्यासपरस्तथा विहर राघव ७ जैसे राजा जनक ज्ञानी है आत्मा जिसने सो राज्यादिक व्यवहार करता है आत्म
ज्ञानाभ्यास विषें निरंतर वर्तता है तैसें हे राघव तुम भी वरतो ७ निश्चयो यस्य यत्रस्य कार्यांऽकार्य विहारिणः जाग्रतः स्वपतो वापि ज्ञानं तेनेन सत्तमा ८
कार्य जो वाह्य व्यवहार अकार्य जो समाधि तिनकर के वर्तता जो है राजा जनक तिसका एह दृढ जैसा अनुभव निश्चय दृढता जागते स्थित होते भी सो अभ्या

ऋटतेभी=

सकाफलनिरावरणज्ञानहै तिसज्ञानकरके प्रकट होताजोहैस्वरूप तिसकी हीसत्यताहै सावरणज्ञानकरकेजो फुरताहै तिसकी नहीसत्यताहै ८ निश्चयो
नहरिर्येन विविधाचारकारिणा योनिश्चयवतरत्स्वर्वांतजन्मलक्षमुदाहृतम् ९ जिसनिश्चयकरके हरि अनेकगर्भयोनीविषेंअवतारधारतेहुए अने
कप्रकारकाव्यवहारकरताभीहै दुःखोंकरके लिप्तनहीहोताहै सोआत्मज्ञानकाप्रभाव विवेकिपुरुषोनेकहियाहै ९ निश्चयो यस्त्रिनेत्रस्य
कांतासहनिषेवणः ब्रह्मणोवाप्यरागस्य सतेभवतुराघव १० (योनिश्चय) गौरीसुंदरीसाथसदास्थितभीहैं तथापिसंभोगरागरहितजोहै त्रिनेत्र
शिवतिसकाजोनिश्चयहै अथवाब्रह्मास्रष्टिकर्ताभीहैं तथापिसृष्टिविषेंरागरहितहैं तिसकाजोनिश्चयहै सोनिश्चयहेराघवतुमकोंहो १० योनि
श्चयः सुरगुरोर्वीकाव्यतेभार्गवस्यच दिवाकरस्यशशिनःपवनस्यानलस्यच ११ नारदस्यपुलस्त्यस्यममचांगिरसस्तथा प्रचेतसोभृगोश्चैवक्रतोरत्रेःशुक
स्यच १२ अन्येषामपिविप्रेन्द्रराजर्षीणांचराघव योनिश्चयोविमुक्तानांजीवतांतेभवत्वसौ १३ श्रीरामउवाच येनेतेभगवन्धीरानिश्चयेनमहाधियः वि
शोकाःसंस्थितास्तन्मेब्रह्मन्ब्रूहिहितंततः १४ देवगुरु बृहस्पति शुक्र सूर्य चंद्रमा पवन अग्नि नारद पुलस्त्य हे अंगिरा प्रचेता भृगु क्रतु अत्रि शुक हो
रजो हैं जीवन्मुक्त ब्रह्मर्षी राजर्षी इनकाजो निश्चयहै हेराघव सोनिश्चय तुमकोंहो १३ श्रीरामउवाच हेभगवन् जोतुमनेकहेहैं महाबुद्धीधीर सोजिसनि
श्चयकरके शोकरहितस्थितहैं सोनिश्चयहेब्रह्मन् मुझकोंतत्वकरकेकहो १४ श्रीवसिष्ठउवाच राजपुत्रमहाबाहोविदिताखिलवेद्य हे स्फुटंशृणुय
थाएषमयमेबाहिनिश्चयः १५ श्रीवसिष्ठउवाच हेराजपुत्र महाबाहो जान्याहै सबजाननेयोग्यवस्तु जिसनेऐसीजोतुमहो सोतुमजैसाश्रेष्ठाकियाहै
तेसासुणो जैसाएहजीवन्मुक्तोंकानिश्चयहै १५ यदिदंकिंचिदाभोगिजगज्जालंप्रदृश्यते तत्सर्वममलंब्रह्मभवत्येतद्व्यवस्थितम् १६ जोएहप्रत्यक्षजोकुछ
विस्तारसहितजगज्जालदेखीताहै सोसबसर्वाब्रह्मएहनिश्चितस्थितहै १६ ब्रह्मचिद्ब्रह्मभुवनंब्रह्मभूतपरंपरा ब्रह्माहंब्रह्मसच्छत्रुर्ब्रह्ममन्मित्रबांधवाः १७
ब्रह्मकालत्रयंतत्त्वब्रह्मण्येवव्यवस्थितम् तरङ्गमालयाम्भोधिर्यथामतिविवर्द्धते १८ तथापदार्थलक्ष्म्यामिदंब्रह्मविवर्द्धते ब्रह्मचैतन्यहै ब्रह्मजगतहै ब्र
ह्मस्थावरजंगमप्राणिपरंपराहै सोंब्रह्महों मेराशत्रुब्रह्महै मेरेमित्रबांधवब्रह्महैं ब्रह्मभूतभविष्यवर्तमानकालत्रयहै सोब्रह्मप्राप्तिकरअवस्थितरूप
कोत्यागकरयारमात्थिक्मुअपनेब्रह्मस्वरूपविषेंहीस्थितहै जैसेतरंगमालाकरके समुद्रआपविषेंवृद्धिकोंप्राप्तहुआसाभासताहै तैसेपदार्थलक्ष्मीक
रएहब्रह्मइसप्रकारवृद्धिकोंप्राप्तजैसाभासताहै १८ ॥ गृह्णातिब्रह्मणाब्रह्मभुज्यतेब्रह्मब्रह्मणा ब्रह्मब्रह्मणिबृंहितानिब्रह्मशक्त्यैवबृंहिति १९ ॥ ब्रह्मनेब्र
ह्मग्रहणकरीयाहै ब्रह्मनेब्रह्मभक्षणकरीयाहै ब्रह्मविषेंब्रह्ममायाकेकिएअन्यथाप्रतिभासकोंकरकेबंधनाजैसाहै १९ ॥ (रागादीनामवस्थानांकल्पि
तानांस्वरूपवत्) ब्रह्ममद्धत्रुरूपंमेब्रह्मणःप्रियकृद्यदि तद्ब्रह्माणि ब्रह्मणिष्टं किमन्यत्कस्यचित्क्षतम् २० ॥ रागादीनामवस्थानांकल्पितानांस्वरूपवत् २१
असंकल्पनत्रशानांकः प्रसंगोत्रवर्द्धते ॥ मेराशत्रुरूपजोब्रह्महै सोब्रह्मस्वरूपमेरेकोंअप्रियकरजब तबब्रह्मविषेंअनिष्टकिसकाकियाब्रह्मभिन्नक्याहै
जिसकेसाथद्वेषकरेब्रह्म २० ॥ रागद्वेषादिकअवस्था आकाशवृक्षजैसेकल्पितहैं संकल्पाकार संकल्पोंकेत्यागकरनष्टहोतेहैं इनकाब्रह्मविषेंबंधनेकाको
नप्रसंगहै सर्वत्रब्रह्मदृष्टिकरकेरागद्वेषनहीहोताहै २१ ॥ ब्रह्मत्वेबृंहितेसर्वस्मिन्स्मरणस्पन्दनादिकम् स्फुरतिब्रह्मसकलंसुखितादुःखितोऽत्रकः ॥ एसेंब्र
ह्मविषेंहीगमनादिकक्रियाभासतिआहै सर्वरूपब्रह्महै इसविषेंसुखदुःखादिकवासनाकहांहै २२ ॥ ब्रह्मब्रह्मणिसंशांतंब्रह्मब्रह्मणिसंस्थितम् २३ स्फुर
तिब्रह्मणिब्रह्मनाहमस्मीतरात्मकः ॥ ब्रह्मब्रह्मविषेंसुखहै ब्रह्मविषेंब्रह्मस्थितहै ब्रह्मविषेंब्रह्मस्फुरताहै हौंब्रह्मतेंभिन्नस्वरूपनहीं २३ ॥
घटेब्रह्मपटेब्रह्मब्रह्माहमिदमाततम् २४ अतोरागविरागाणांमध्येकलनेहका ॥ घटब्रह्महै पटब्रह्महै एहहौंब्रह्मव्यापकहौ एकब्रह्महै इसतेरागद्वेषोंकी
रचनाकौनहै २४ ॥ मरणंब्रह्मणिप्रोक्तंदेहब्रह्मणिसंगते २५ दुःखितानामकेवस्मादज्जुसर्पभ्रमोपमा ॥ मरणब्रह्मविषेंदेहब्रह्मआपसंगतहोए दुःखदया(?) रज्जु
सर्पभ्रमजैसीकौनहै नहीकोईहैब्रह्मदृष्टिकरके २५ ॥ संभोगाहोसुखेब्रह्मण्यपिस्थितेदेहब्रह्मणि २६ संपन्नमेतन्मइतिमुधास्वासकलनाकुतः ॥ देहब्रह्मस्थि ब्रह्मविषें
तहोए विषयसंभोगादिकोंविषेंजोसुखहै सोसुखमुझकोंहोआएहमिथ्याकल्पनापरमानंदब्रह्मविषेंकिसनिमित्तजैसेहोवे २६ ॥ वीचयश्चसोधस्वन्द्बतो
नेलनादेवनीयथा २७ स्वत्वामेतेतथानस्तोत्रब्रह्मणिस्पन्दरूपिणी ॥ चलतेजोहैं जलअोरतरंगसोजलसेंनहीभिन्नहैं जैसे रागद्वेषादिकचलताके जैसे
कारणजोहैं भावअभावसोब्रह्मविषेंनहीहैं २७ ॥ यथावर्तमनेतत्तोयेनांकिंचित्म्रियतेक्वचित् २८ म्रियतेब्रह्मतत्मायातेदेहब्रह्माणिवैतथा ॥ जैसे
आवर्तजोहैजलकाभ्रमतातिसकेनाशहोएजलविषेंकछुकुछनहीनष्टहोताहै तैसेदेहब्रह्मरूपब्रह्मभावकोंआप्तहोएकुछनहीमरताहै २८ ॥

सुखेकरण ब्रह्मविषें=

इच्छा

यथाचलाचलेतोयेत्वत्तामत्तेनतिष्ठतः २९ तथाजडाजडेरूपेनस्थितेपरमात्मनि॥ चंचलजलविषें अथवा चंचलनिश्चलविषें त्वंभाव अहंभावन
हीस्थितहोते जैसे तैसेपरमात्माविषें जडअजडरूपनहीस्थितहोते २९॥ कटकत्वंयथाहेम्नोयथावीचिजलस्यच ३० नदतद्भावरूपेयंतथाप्रकृतिरा
त्मनः॥ जैसेसुवर्णकी कंकणता जैसेजलका भ्रमणा तैसे आत्माकी प्रकृति मायिकस्वभाव तिसआत्माकाही तिसआत्मासें भिन्नभावभासनस्वरूपहै
३०॥ इदंद्विजीवभूतात्मजडरूपमिदंभवेत् इत्यज्ञानात्मनोमोहोनचज्ञानात्मनःक्वचित् ३१॥ एहजीवरूपआत्माहै एहजडरूपहै ऐसामोहाजिसकोंआ
त्माकाज्ञाननहीतिसकोंहोताहै जिसकोंआत्मज्ञानहै तिसकोंकहीदेशकालविषेंऐसामोहानहीहोताहै ३१॥ अत्यन्तदुःखोघमयस्तथानन्दमयंजगत्
अन्धंभुवनमन्धस्यप्रकाशंतुसचक्षुषः ३२॥ अज्ञानीकोंदुःखसमूहरूपजगत्भासताहै ज्ञानीकोंआनंदमयभासताहै जैसेअंधकोंजगतअंधकाररूपभा
सताहै निर्मलनेत्रोंकोंप्रकाशमयभासताहै ३२॥ जगदेकात्मकंब्रह्मस्फूर्तेस्फातीवदुःखदम् [illegible] शिशोरिवस्फुरद्यक्षानिशाभ्रमस्तुकेवला॥ ज्ञानीकोंजग
तएकआत्मस्वरूपहै अज्ञानीकोंअतिदुःखदायकहै जैसेबालककोंभ्रमकरकेरात्रिविषेंयक्षस्फुरताहै युवा [illegible] केवलरात्रहीभासतीहै
३३॥ अस्मिन्ब्रह्मतटेनित्यमेकस्मिन्सर्वतःस्थिते नकिंचिन्म्रियतेनामनचकिंचनजीवति ३४॥ ब्रह्मस्वरूपएहआत्मतत्वअकलशनित्यएकसर्वत्रस्थि
तहै इसविषेंनकछुजीवताहैनकछुमरताहै ३४॥ यथोल्लासविलासेषुननश्यतिनजायते ३५ तरंगादिमहाम्भोधौभूतवृन्दंतथात्मनि॥ जैसेसमुद्रवि
षेंअनेकजलकेउछलनविलासहोतेतरंगादिकनष्टनहीहोताजनमतानही तैसेआत्माविषेंआकाशादिकभूतसमूहहैनष्टनहीउत्पननहीहोता
है ३५॥ इदंनास्तीदमस्तीतिभ्रान्तिर्नामात्मनात्मनि ३६ शक्तिर्विहरतिकेवान्तःस्फारितस्फटिकांशुवत्॥ जगत्रूपालंतामेवब्रह्मस्वात्मनिसंस्थितम् ३७ त
रंगकणजालेनपयसीवपयोनुम॥ एहवस्तुहै एहवस्तुनही एहभ्रान्तिरूपमायाशक्तिनिष्कारणआत्माविषेंफुरतीहैआत्माकरके जैसेस्फटिककीअ
नेकप्रतिबिंबोकीधारनेकीयोग्यताहोतीहै तिसकीकारणनिर्मलताहै सोनिर्मलताही अनेकप्रतिबिंबस्वरूपाकरकेप्रतिबिंबोकेअनेकगणक्रिया
दिरूपाकरकेभीफुरतीहै तैसेमायाशक्तिजगत्स्वरूपकरके तिसतिसवस्तुप्राप्तिकरकेभीफुरतीहै भासतीहै भासनाआत्माही सोआत्माब्रह्मअपु
ग्ररूपस्वात्माविषेंहीस्थितहै जैसेतरंगकणसमूहकरजलविषेंहैजलहीस्थितहै ३७॥ शरीरनाशेनकथंब्रह्मणोमृतताभवेत् ३८ ब्रह्मणोव्य
तिरिक्तंहिशरीरादिनविद्यते पयसोव्यतिरेकेणतरंगादिमहार्णवे ३९ शरीरनाशकरकेब्रह्मकीनाशकैसेहोवे ब्रह्मतेंभिन्नशरीरादिकनहीहै।
जैसेमहासमुद्रविषेंजलसेंभिन्नतरंगादिकनहीहै ३९ यःकणोयाचकणिकायावीचिर्यस्तरंगकः यःफेनोयाचलहरीतद्यथावारिवारिणि ४० यो
ह्याचकल्पनायहूपयोस्तयाश्चयो याभावरचनायोपि [illegible] तथातद्ब्रह्मब्रह्मणि ४१ जोजलविंदुहै जोसूक्ष्मविंदुहै जोसूक्ष्मतरंगहै जोतरंगहै जोफे
नहै जोलहरीमहातरंगहै सोसबजलविषेंजलहीहै ऐसे जोरेहहै जोकल्पनाइन्द्रियांकीवृत्तिहै जोहरषभोगयोग्यहै जोतयुविपतहै जोअनन्तपद
है जोभावहै हर्षशोकादिकें सोब्रह्मविषेंब्रह्महीहै ४१ संस्थानरचनाचित्राब्रह्मणःकनकादिव नान्यरूपाविभूतानांभवेद्भिवभावना ४२ विचित्रजो
हैस्थावरजंगमोंकीआकाररचना सोब्रह्मसेंहोतीहै ब्रह्मसेंभिन्नरूपानही जैसेसुवर्णसेंकंकणकुंडलादिकआकाररचनासुवर्णसेंभिन्ननहीहै तभाव
नामिथ्याहीहै ४२ मनोबुद्धिरहंकारस्तन्मात्राणीन्द्रियाणिच ब्रह्मैवसर्वमेतानात्मसुखदुःखंत्वसविद्यते ४३ मन बुद्धि अहंकार सूक्ष्मपंचमहाभूत इन्द्रिया
एहसबमायातेंअनेकरूपब्रह्महीहै सुखदुःखनहीहै ४३ अयंसोहमिदंचित्रमित्याद्यर्थात्मिकागिरा शाहःप्रतिपत्तिविवातुआत्मनिजृम्भते ४४ जैसेए
कसीशाहपर्वतकेनिकटप्रतिध्वनिरूपकरके दोवेरीकहियाऐसाभासताहै तैसे एहसो हों एहचित्रइत्यादिकपदार्थोकेनामोंकरकेएकआत्माहीआप
विषेंफुरताहै ४४ ब्रह्मैवात्तानमनन्तमभ्यागतमिवस्थितम् यथाहिहपयतेस्वप्नेचेतसात्मात्मनात्मनि। ४५ ब्रह्महीअनंत अनुभवकोंजीवजगत्भावको
प्राप्तहोआजैसास्थितहै जैसेस्वप्नविषेंआत्माहीचित्तकरकेआपविषेंआपकरकेविचित्ररूपदेखीताहै ४५ अभावितंब्रह्मतयाब्रह्माज्ञानमलंभवेत् अभावि
तहेमतयायथाहेमचुमृद्भवेत् ४६ ब्रह्मरूपकरकेनहीजान्याब्रह्मअविनअज्ञानरूपभासताहै जैसेसुवर्णसुवर्णरूपकरकेनहीजान्या पीलीमृत्तिकाभासती
है ४६ स्वयंप्रभंमहात्मैवब्रह्मब्रह्मविदोविदुः अपरिज्ञातमज्ञानामज्ञानमितिकथ्यते ४७ ब्रह्मकोंजाननेहारे स्वयंप्रभमहात्माहीब्रह्मकोंजाणतेहैं अ
ज्ञानियोकोंअज्ञातब्रह्मअज्ञानभासताहै ऐसीकहीताहै ४७ ज्ञातंब्रह्मतयाब्रह्मब्रह्मैवभवतिक्षणात् ज्ञातंहेमतयाहेमहेमैवभवतिक्षणात् ४८ ब्रह्मरू
पकरकेज्ञातब्रह्म क्षणमात्रतेंब्रह्मही भासताहै जैसेसुवर्णरूपकरकेज्ञातसुवर्ण क्षणमात्रतेंसुवर्णहीहै ऐसेभासताहै ४८ ब्रह्मात्मासर्वशक्तिर्हित

शुक्र॰ मह॰ तैसे॰ जोभोगेहैं इहुपा यसोग॰ भिन्नजैसा॰ ३४४

तद्यथाभावयाप्यलम् निर्हेतुकः स्वयं शान्तात्तथाभ्युपपश्यति ४९ आत्मा स्वयं ब्रह्म से जैसे जीव जगत्‌रूप करके अथवा ब्रह्मरूप करके जैसी भाव
ना करता है माया शक्ति करके तैसे सो ही हुई देखता है हेतु जो है प्रयोजन तिस रहित ४९ अकर्तृकर्मकरणमकारणमनामयम् स्वयंप्रभं महात्मानं ब्र
ह्म ब्रह्मविदो विदुः ५० कार्य से भिन्न कर्त्ता से भिन्न क्रिया से भिन्न साधन से भिन्न है कर्म कर्त्ता क्रिया साधन जिसविषे नहीं विकाररहित स्वरूपके बोधतें अपने स्वरू
पके पावनेको समर्थ व्यापक आत्मा ब्रह्मको ब्रह्मज्ञानी जानते हैं ५० अपरिज्ञातमज्ञानामज्ञानमिति कथ्यते परिज्ञातं भवेज्ज्ञानमज्ञानपरिनाशनम् ५१ अज्ञा
त ब्रह्म अज्ञानिओंको अज्ञानरूप है एह कहीता है शास्त्रोंविषे ज्ञात ब्रह्म ज्ञानीओंका ज्ञानरूप है अज्ञानका नाश करता है ५१ अमुरिवाघ[illegible] बन्धुरिति क
थ्यते परिज्ञातो भवेद्बन्धुर्बन्धुभ्रमनाशनात् ५२ अपना बन्धु ही नहीं पछान्या अबंधु है ऐसे कहीता है पछान्या बंधु होता है अबन्धुभ्रमको नाशतें ५२ इदं ब्रह्मकमि
त्यन्तर्निते सोदेतिभावना यस्माद्दृश्याद्दृश्याद्या किल विरज्यते ५३ एह जीव जगत ब्रह्मरूप अयुक्त है विचार विना भासता है एह अन्तर निश्चित होए सो ब्रह्मभावना उद
य होती है जिससे हेतुतें अयुक्त मिथ्या स्रुक्‌रजतादिकोंतें विरसता प्रसिद्ध है जिसविचार करके जगततें भोगोंतें पुरुष विरक्त होता है ब्रह्मभावना होती है ५३ हैते
त्वसत्यमिति संतर्क्य ततो सोदेतिभावना तस्माद्दैताद्वैरस्याद्या किल विरज्यते ५४ हैत ता असत्य है एह अन्तर ज्ञान होए सो ब्रह्मभावना उदित होती तिसअसत्य हैततें विरस
ता होती है तिससें भोगोंतें विरक्त होता है एह प्रसिद्ध है ५४ अयं नाहमिति ज्ञातेस्फुरे सोदेतिभावना मिथ्याहंकारतातस्माद्यान्नविरज्यते ५५ एह देह स्थूलसूक्ष्म
पहीं नहीं ऐसे प्रकट ज्ञान होए सो ब्रह्मभावना उदय होती है तिस ज्ञानतें अहंकारस्वरूप मिथ्याभासता है जिस मिथ्यात्व विचार करके नामरूपतें विरक्त होता
है ५५ ब्रह्मैवाहमिति ज्ञानसये सोदेतिभावना तस्मिन्सत्ये निजे रूपे यया न्तःपरिलीयते ५६ ब्रह्म ही मैं हों ऐसे सत्यस्वरूप ज्ञान होए सो ब्रह्मभावना उदय होती
है जिस ब्रह्मभावना करके तिस अपने सत्यस्वरूप विषे जीव जगत भाव लीन होता बाधित होता ५६ सति विस्तार जे नास्मिन्ब्रह्मैवमिति विद्ध्यम् [illegible]
दिवायेन सदि सा द्विजगद्गतम् ५७ अतेड महावाक्यार्थ अपरोक्षितसत्स्वभाव करके प्रकट होए एह जगत ब्रह्म है एह मैं जाणता हों तिसभाव अभाव का
बाध होए सो प्रसिद्ध सत प्रिय भासन नाम रूप एह पंच जगत विषे स्थित सर्व वस्तु ब्रह्म ही है एह मैं जाणता हों ५७ सर्वं सर्वप्रकाराढ्यं ब्रह्मैवमिति विद्य
हम् न मे दुःखं न कर्माणि न मोहो न च वाञ्छितम् ५८ सर्वप्रकार युक्त एह जगत सत्य ब्रह्म है एह हों जाणता हों मुझको नहीं दुःख है न कर्म है न मोह है न इच्छा है ५८
समः स्वस्थो विशोकोऽस्मि ब्रह्माहमिति सत्तया कलाकलंक मुक्तोऽस्मि सर्वमस्मि निरामयः ५९ सम स्वरूप विषे स्थित शोक रहित हों ब्रह्म हों ऐसे सत्य स्वभाव हों
संकल्पादि कलंक रहित हों सर्वरूप हों निर्दुःख हों ५९ न त्याज्यमिन वाञ्छामि ब्रह्माहमिति सत्तया अहं रक्तमहंमांस महमस्थीन्यहं वपुः ६० न त्यागता हों न च्या
हता हों ब्रह्म हों एही सत्यता है लोहरूप हों मांस हों अस्थी हों शरीर हों मुझतें भिन्न कछु नहीं ६० चिदहं चेतनं चाहं ब्रह्माहमिति सत्तया द्यौरहं ख
महं सार्कमहं भूमावा प्यहम् ६१ शुद्ध चिन्मात्र हों चिदाभास हों ब्रह्म हों एही सत्यता है स्वर्ग हों आकाश हों सूर्यसहित हों एवीं दिक दिशा हों भू
ने कभूमिका हों ६१ अहं बटपटाकारो ब्रह्माहमिति सत्तया अहं तृणमहं चौर्वी गुल्माहं काननादृहम् ६२ हों बाटपटाकार हों ब्रह्म हों एही सत्यता है हों
तृण हों हों पृथिवी हों हों झाड हों हों वन आदिक हों ६२ शैलसागरसार्थोऽहं हन्त स्मैरन्तुकिल स्थितम् आदानदानसंकोचविकासौ भूतशक्तयः ६३
पर्वत सागर प्राणिसमूह हों हां ब्रह्मकी एकता निश्चयकरके स्थित है लेणा देणा संकोच न देणे की इच्छा इत्यादिक प्राणिओं किओ शक्ति अ हों हां ६३
सर्वमेव चिदात्मास्मि ब्रह्माहमिति सत्तया लतागुल्माङ्कुरादीनामहं सम्भवते स्थिताम् ६४ चिदात्मा न्नगतेशान्तं परब्रह्मरसात्मकम्। सर्वरूप चिदात्मा व्याप
क रूप धारी ब्रह्म विषे अभेद करके स्थित हों हां लता झाड अंकुरादिक हैं को चाहते हैं इनके अन्तर स्थित चिदात्मा शान्त परब्रह्मरसरूप हों हां ६४ यस्मिन्सर्वं
यतः सर्वं यः सर्वं सर्वतश्च यत् ६५ योमतः सर्वएकात्मा परब्रह्मेति निश्चयः। जिस विषे सब है जिसतें सर्व प्रकट होता आभास सर्वरूप है जो सर्वव्यापक है जो सर्वरूप ए
क आत्मा है सो परब्रह्म है एह ज्ञानिओंका निश्चय है ६५॥ चिदात्मा ब्रह्म सत्यमनन्तमानन्दमिति नाम भिः प्रोच्यते सर्वगं तत्त्वं चिन्मात्रं चेत्यवर्जितम् ६६॥ चित आत्मा ब्र
ह्म सत सत्य अनन्त प्रिय धर्म वचन ज्ञ सर्वज्ञ इत्यादि नामों करके सर्वव्यापक तत्त्व दृश्यरहित वेद पुराणादिकोंने कहीता है ६६॥ आभासमात्रममलं सर्वभूता
त्म बोधकम् ६७ सर्वत्रावस्थितं शान्तं चिद्ब्रह्मेत्यनुभूयते। प्रकाशमात्र निर्मल सर्व प्राणिओं का जो है आत्म जीव तिसका बोधक जो है सर्वत्र स्थित शान्त चित ब्रह्म ऐ
सा अनुभव करीता है ज्ञानवानोंने ६७॥ मनोबुद्धीन्द्रियव्रातसमस्तकलनान्वितम् ६८ भेदैरप्यक्षुभोभासं चिद्ब्रह्माहमनामयम्। मन बुद्धि इन्द्रियसमूह इनकि
आ जो सर्ववृत्तिआं तिनां विषे व्यवगत हां भेदको त्यागकर आत्मचैतन्य प्रकाश चित ब्रह्म निर्दुःख हों हां शब्दादिनामधेयाणांकारणानांजगत्स्थितेः ६९ तत्राव
काशकस्वच्छचिद्व्योमास्मि मनसयः। शब्दस्पर्शादिक इनके कारण आकाशादिक इनकी किर जो जगतकी स्थिति है इन सबनां का अवकाशप्रकाश स्वरूप निर्मल है

निर्वाण
भाषा
२३

93

मा — आनंद= — काष्ठकेस्तंभपातिवें॥

चैतन्यब्रह्म हौं हां हैंगा विनाशनहीं ६९॥ अनारतगलत्स्वच्छचिद्धारागहनात्मकम् ७० आलोकः स्वमनौमौनं चिद्व्योमास्म्यहं तपरम्। अग्निके लाप
शेजेसें निरंतर निकलतियां जो अंतःकरणवृत्तिरूप उपाधि थां तिविषें शुद्ध चितधारा तिनांकी खोलरूप आकाश स्वरूप प्रकाश अंह चित्त योगियां
कामौन है अनुभव करतेंभी है कहनेकों नहीं समर्थ होते हैं ऐसा चैतन्यब्रह्म परम अमृत हौं हां ७०॥ अनारतगलद्रूप निःसंचारानुभवामृतम् ७१ अहं निःशे
षचक्रालि चिद्व्योमाहमलेपकम्॥ अहंकाररूप जो है सब भोक्तावर्गके समूह हैं तिनांकि आं जो हैं अनेक भोगवृत्तियां तद्रूप उपाधिआकारके निरंतर प्रकट रूपक
रस्य तिसका अनुभवानंदैकरस चित्तब्रह्म हौं हां ७१॥ सुषुप्तस्य दशाशान्तमालोकविमलात्मकम् ७२ संभोगानन्दमाभासं चिद्व्योमास्म्यपवासनम्। सुषुप्त आनंदके
तुल्य शांत प्रकाश अज्ञानमलरहित स्वरूप मानुषआनंद आदिलेकर शतगुण अधिक अधिक जो है हिरण्यगर्भके विषयसुखपर्यंत जो है आनंद तिनांसेभी
उत्तम सर्वतःप्रकाशमान निर्वासन चित्त ब्रह्मानंद हौं हां ७२॥ खण्डादिस्वादुसंवित्तिरीदृग्मात्रान्तनिश्चिता(?) विज्ञादिदृष्टवस्त्वेषु ततश्चिद्व्योमाहमच्युतः ७३॥ रसनाक
रके खंड मिसरी शाकर गुड़दा स्वादका स्फुरण रसनातें कंठपर्यंत अल्पदेश क्षणमात्र रहता है आनंदस्फुरणकेभेदका रण जो हैं चित्त चिंतनयोग्य चिंतनक
ता पदआनंदरूप करसदृश पकरके जाणे होए भेदोपाधि दूर होएभी अविनाशी परमानंद सो ब्रह्म हौं हां ७३॥ कालासंसक्तचित्तस्य चन्द्रस्योदितेसति ७४ चन्द्रश
स्यसत्कान्ति चिद्व्योमाहमनामयम्। कांतासंयोगविषें आसक्त है चित्त जिसका ऐसा जो पुरुष है चंद्रके उदय हुए चंद्राकार प्रतीतिपर्यंत कांताचंद्रकेमध्य आका
प्रदेशविषें अखंड सत्तारूप कांताचंद्रस्वरूपविषयरहित चेतनब्रह्म निर्दुःख सुखस्वरूप ब्रह्म हौं हां ७४॥ भूमिष्ठनरदृष्टीलोलनाना खेनिशाकरे यावत्स्थानन्तु
तिच्छे कित्तांश्चिद्व्योमास्मि निर्मलम् ७५॥ पृथिवीविषें स्थित जो है नर तिनकि आंख दृष्टिआ आकाशस्थित चंद्रविषें लगतीआं है भूमिचंद्रकेमध्य आकाशविषें स्थि
तजो है चित्त शक्ति सो चित्त ब्रह्म विषयमलरहित हौं हां ७५॥ सुखदुःखादिकलनाविकलो निर्मलस्तथा ७६ समानुभवरूपात्म चिद्व्योमास्मि सुशाश्वतः। उदासी
नावस्थाविषें सुखदुःखादिरहित निर्मल समअनुभवरूप चित्त ब्रह्म आत्मा नित्य हौं हां ७६॥ अमस्तनाथगलालोकमनस्यन्तर्मस्थितेः याशी निरवगाम्कान्त

निरपराध

चिद्व्योमास्मि सर्वगः ७७॥ उत्तरदेशविषें स्थित जो है पुरुष तिसका मन दूरदक्षिणदेशविषें स्थित जो है रामनाथ तिसविषें स्थित होए कैसा है मन सा
मीकपदार्थोंका चिंतन करके स्फुरणरूप प्रकाश नहीं किआ ऐसे मन होए रामनाथपर्यंत जे मध्यविषें देश हैं तिनांविषें विषयसंगरूप अपराध
रहित जो प्रतीति चिन्मात्ररूपा है सो चित्त ब्रह्म सर्वव्यापकरूप मैं हां ७७॥ भूवार्यनिलवीजानां संबन्धेङ्कुरकर्मसु शक्तिर्जमनी यास्तु चिद्व्योमाहमा
ततम् ७८॥ भूमि जल पवन वीज इनांका मेल होए अंकुर उत्पन्न कार्यविषें जो है चित्तशक्ति जिसकरके बाहर ऊर्ध्व वृद्धि होती है सो चित्त ब्रह्म व्याप
क हौं हां ७८॥ खर्जूरबिल्वनिम्बानां स्वघनाफलितिष्ठताम् ७९ यास्वादसत्तालीनानां तत्सत्ता चिदहं समः॥ खजूर निंब बिंब फल आपने जनु स्वभावविषें
स्थित है इनांफलांके जो हैं नानारस तिनांके अंतर्लीन जो है स्वाद सत्ता रसनेंद्रियवृत्तिकरके प्रकट होती स्फुरणरूपा सो चित्त ब्रह्म सम हौं हां ७९॥ खेदानन्द
विमुक्तान्तःसंविन्निर्मननोदया ८० लाभालाभविधौतल्पाचिद्व्योमास्मि निरामयम्। जो चेतनता इष्टलाभ होए आनंदवृत्ति होती है अनिष्टलाभ होए खेदवृत्ति होती
है सोई चेतनता वेदांतशास्त्रके मननके उदय करके शोधित किई होई खेदानंदरहित सम चित्त निर्दुःख ब्रह्म हां ८०॥ यावद्भूम्यर्कमेतावद्बहिःसंततंदा
ततम् तन्मध्यमसदृशांशं निर्मलं चिदहंततम् ८१॥ भूमिस्थपुरुषका भूमितें सूर्यपर्यंत जो है दृष्टिरूप सूत्र विस्तीर्ण होए सूत्रका जो है मध्यभाग नेत्र सूर्य साथ
नहीं लगा है चैतन्य सो विषयप्रकाशनकों समर्थभी है विषयसंबंधरहित जैसा है तैसा सर्व शांत विषयमलरहित चैतन्य हां ८१॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तेषु
तत्स्वप्नोदितम् ८२ तुर्यरूपमनुस्यूतं चिद्व्योमाहमनामयम्॥ जो जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिविषें असंग उदित है जाग्रदादिक अवस्थारहित तुर्यरूप आर्यंत रहि
त निर्दुःख चित्त ब्रह्म हौं हां ८२॥ पृथासैन्यस्यातोयानामिक्षूणां स्वादुवत्स्थितम् सर्वेषामेकरूपं तच्चिद्व्योमास्मि समःस्थितः ८३॥ सउदेतें ईखसें उत्पन्न होए जो गन्ने हैं
तिनांविषें जैसे मधुररस स्थित है तैसे सर्व नामरूपोंविषें अंतर एकरूप जो चेतन ब्रह्म है सम स्थित सो हौं हां ८३॥ सर्वगासक्तता स्वच्छरूपा भानोरिवप्रभा ८४
आलोककारिणी शान्ता चिद्व्योमाहमहं ततम्॥ सर्वत्र अशेष निर्मलरूप प्रभा सूर्यकी जैसी प्रकाशकारिणी है तैसी चित्स्वभाव व्यापक स्वप्रकाशका
रिणी हौं हां ८४॥ संभोगानन्दलवदंशन्तस्वादशक्तिवत् ८५ स्पातःस्पेकमात्रयचिद्व्योमास्मि दवायुम्॥ संभोगानंददशा जैसे अमृत स्वाद शक्ति जैसे अप
नेअनुभवमात्रकरके जाणीता है तैसे चेतनब्रह्म अविनाशी अनुभवप्रमाणकरके जानीता जो है सो हौं हां ८५॥ … विसेयथा ८६।
केदेपे दे स्फुरद्रूपं चिद्व्योमाहमनामयम्॥ भेदविषें सत्तातें सर्वअंगांविषें पुरी यीमी … स्फुरतरूपा है जैसे तैसे चित्तब्रह्म सर्वनांअंगांवि
षें … देहकेंके देहविषें स्फुरत स्वरूप अच्छेद्य अभेद्य निर्दुःख हौं हां ८६॥ आक्रान्तभुवनाभ्राभ्रमालेवस्यन्दशालिनी ८७ तुलेत्यागमयाकार

चिच्छक्तिरहमाततः। जैसे मेघपंक्ति जलोंकों धारती है पवनकर चलती है दुर्लक्ष्यसूक्ष्मजलकणमय आकारधारिणी है तैसी चित्शक्ति है जगतकी
धारिणी अंतःकरण इंद्रियादिकके क्रियाकरणेवाली है दुर्लक्ष्य सूक्ष्मजीवमय है कल्पितआकार जिसका ऐसी चित्शक्ति व्यापिका हों हं ८७॥ अनुभू
तिमयानांस्थास्तोहं मात्रोपलालिता दीपाद्भुतस्यसज्जेव चिदहं तयावर्जिता ८८॥ अनुभवमात्रकरजाणनेमें है बुद्धिके अंतरस्थित है परमप्रेमकरकेलालित होती पा२०
है जो चेतनता अनुरूपसो हों हं जैसे अद्भुतके अंतरस्थित हुतसमा स्नेह चिकणाईकरकेलालित होती है ८८॥ कटकाङ्गदकेयूररचना तदनन्यमयी हेम्नीव
सुस्थिता देहेचिद्भासि सर्वगः ८९॥ सुवर्णविषेंस्थित जो है कंकण अंगद केयूर भुजाकेभूषण तिनकी रचना सुवर्णमयीभी है सुवर्णसें भिन्नभी हुई भा
ते भासती है भूषणा तिन्होंको तैसे देहविषें स्थित चितरूप आत्मा सर्वव्यापक हैं हं आत्माविषें आरोपित देहादिक भिन्नसे भासतें हैं वास्तवभिन्ननहीं हैं ८९
पदार्थौघस्पालादेवहिरन्तश्चसर्वदा ९० सत्तासामान्यरूपेणाचिन्तोहमलेपकः। पदार्थादिक जो है पदार्थसमूह तिसके अंतरवाहर सदा सत्तामात्ररूप करके जो
चेतनतासेस्थित है निर्लेपसोहोंहं ९०॥ सर्वासामनुभूतीनामादर्शोयोस्वकृत्रिमः ९१ अगुणोमलनेत्याणांतं चिन्तनमहमहत। सर्वपदार्थोंके जो अनुभव है तिसका
का स्वतःसिद्ध दर्पण है मलनरेखाओंरहित है जो सर्वव्यापक चितत्त्वसो होंहं ९१॥ सर्वसंकल्पफलदं सर्वतेजःप्रकाशकम् ९२ सर्वोपादेयसीमान्तं चिदात्मा
नमुपास्महे। सर्वसंकल्पोंका फलदायक है सर्वतेजोंका प्रकाशक है सर्व जो हैं पावनेयोग्य श्रेष्ठवस्तु हैं तिनकी हद है जिससे होरश्रेष्ठवस्तु पावनेयोग्य न
ही ऐसा जो चितआत्मा है तिसका अभी निरंतरध्यान करतेहां ९२॥ सर्वावयवविश्रान्तसमस्तावयवातिगम् ९३ अनारतकचद्रूपं चिदात्मानमुपास्महे। सर्व
अंगविषें विश्राम करता है सर्वसर्व अंगोंसेपरे है निरंतरस्फुरतरूप जो है चेतन्यआत्मा तिसका अभी निरंतरध्यान करतेहां ९३॥ इंद्रियपदेतदेकरूपं सानन्दमानं
सदाततो ९४ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तस्थं चिदात्मानमुपास्महे। हृदयपटनीरूप इंद्रियविषें सत्तारूपकरस्थित है शरीरविषें चेष्टाका निमित्त चेतन्यरूप है जा
ग्रतअवस्थाविषेंभी सुषुप्तके जैसे निर्विकाररूपकरकेस्थित है जो चिदात्मा तिसकों अभी उपासते हां ९४॥ उष्णमग्नौ हिमे शीतं मृष्टमन्ने शितं क्षुरे
९५ कृष्णं ध्वान्ते सितं चन्द्रे चिदात्मानमुपास्महे। अग्निविषें उष्णता बरफविषें शीतलता अन्नविषें मधुरता पछनेविषें तीक्ष्णता अंधकारविषें श्या
मता चंद्रमाविषें श्वेतता इत्यादिक पदार्थोंके स्वभावसत्तारूपकरके जो स्फुरता चिदात्मा तिसकों अभी उपासते हां ९५॥ आलोकं बहिरन्तःस्थं स्थित
वस्त्वालमवस्तुनि ९६ आदूरमपिदूरस्थं चिदात्मानमुपास्महे। सर्वके अंतरबाहरस्थित चितप्रकाश अपने सरूपविषेंस्थित है आत्मस्वरूपकरके निकरभी है
अज्ञानकरके दूरस्थित है ऐसे चिदात्माकी अभीउपासना करते हां ९६॥ माधुर्यादिषु माधुर्यं तीक्ष्णादिषु च तीक्ष्णताम् ९७ गतं पदार्थजातेषु चिदात्मान
मुपास्महे ९७॥ मधुरादिकवस्तुविषें मधुरतादिरूपकों तीक्ष्णादिपदार्थोंविषें तीक्ष्णतादिरूपकों आप्त हां आजो चिदात्मा तिसकों अभी ध्यावते हां ९७। जाग्रत्स्व
प्नसुषुप्तेषु तुर्यातीते पदे ९८ समं सदैव सर्वत्र चिदात्मानमुपास्महे। जाग्रत स्वप्न सुषुप्त इनविषें इनअवस्थाकासाक्षी तुर्यापदविषें जिसपदविषें अव
स्थाका अत्यंताभाव है सो साक्षितारहित तुर्यातीतपद है तिसविषें सर्वत्र सदाही सम जो चिदात्मा है तिसकों अभी ध्यावते हां ९८॥ प्रशान्तसर्वसंकल्पं निगता
खिलकौतुकम् ९९ विगताशेषसंरम्भं चिदात्मानमुपास्महे। अत्यंत शान्त हुआ सर्वसंकल्प जिसविषें अत्यंत नष्ट हुआ सर्व कामना जिसविषें अत्यंत नष्ट हुआ ए
सर्वक्रोध जिसविषें ऐसा जो चिदात्मा है तिसकों अभी उपासते हां ९९॥ निःकौतुकं निरारम्भं निरीहं सर्वमेव च १०० निरंशं निरहंकारं चिदात्मानमुपास्महे। कौतुकी
उत्कंठा रहित यत्नरहित चेष्टारहित सर्वरूप अंशरहित अहंकाररहित चिदात्माकों उपासते हां १००॥ सर्वस्यान्तःस्थितं सर्वव्यापारैकरूपिणम् १०१ अपर्यन्त
चिदारम्भं चिदात्मानमुपागताः। सर्वके अंतरस्थित सर्वरूपभी है अपार एकरूपभी है अनंतप्रतिबिंब चेतन्योंके होते हैं आरंभ जिससे ऐसे चिदात्माकों
हों प्राप्तहोआ हां १०१॥ त्रैलोक्यदेहमुक्तानां तन्तुं सन्ततमाततम् १०२ प्रचारसंकोचकरं चिदात्मानमुपागताः। त्रिलोकीविषें स्थित जो है देहरूप मोती तिनको वि
सुशमि दें ऊचाविस्तीर्णतंतरूप है प्रचारसंकोचजो है जाग्रत्स्वप्न तिनकोंकरताजो है चिदात्मा तिसकों प्राप्तहोआ हां १०२॥ लीनमन्तर्बहिःस्पन्दक्रीडीकृतजग
त्त्वगत विश्वेन्द्रजालमिव चिदात्मानमुपागताः १०३। अंतरबाहर आपकरके व्याप्त किए जो है जगतस्वरूप पक्षी हैं तिनकों अपने अंतरकरके गुप्त है आश्चर्यरूप म
हाजाल जैसा जो है चिदात्मा तिसकों प्राप्त होआ हां १०३॥ सर्वं यत्रेदमस्त्येव नास्त्येव च न चापि १०४ सदसद्रूपमेकं तं चिदात्मानमुपागताः। जिसविषें सर्व जग
त स्थित है स्वल्पभी संस्काररूपभी जगत जिसविषें नहीं सृष्टिसमयविषें सर्वकों सत्तादेनेकरके सत्रूप है प्रलयविषें सर्वकों स्थान नहीं देता है तिसतें असत्
रूप है ऐसा जो चिदात्मा है तिसकों हों प्राप्त होआ १०४॥ परमप्रसर्पयत्प्रीमास्वदं सर्वसंपदाम् १०५ सर्वाकारविहारस्थं चिदात्मानमुपागताः। चेतन्यपकरस है
अंत्य चापरमाविश्रामस्थान जो है सर्वसंपदाके सुखविंदूकास्थानसमुद्र है सर्वाकारविहारविषें स्थित जो है चिदात्मा तिसकों हों प्राप्त होआ हां १०५॥

सेहाधारमथाऽशान्तं जडवातान्हतिभ्रमैः युक्तमुक्तं चचिद्दीपं बहिरन्तरुपास्महे १०६॥ चैतन्यरूपदीपककों देहके अंतरबाहर अभ्यासी उपासते हैं।
कैसा है चैतन्यदीपक स्नेह जो परमप्रेम तिसका आधार है जडदेहादिकाके प्राणपवनोंके अभ्यासभ्रमोंकर नए नहीं होता औ तह छिकर प्राणभ्रमोंकर
युक्त है तत्त्वदृष्टिकर रहित है अन्यदीपक देहके बाहर होते हैं अंतर नहीं जडवात जो है सजलवात तिनके वेगकर जो भ्रमण है तिनाकर युक्त है रहित
नहीं १०६॥ हृत्सरःपद्मिनीकन्दं तन्तुं सर्वाङ्गसुन्दरम् १०७ जन्तुजीवनोपायं चिदात्मानमुपागतः। हृदयसरविषे कमलिनीकंद जो मेरुदण्ड है सबजो हस्त
पादादिकअंग हैं तिनाका हदधारणेतार सुंदर तन्तु जैसा है सर्वजनोंके जीवनेका उपाय है ऐसे चिदात्माकों हौं प्राप्त भया १०७॥ अतीतं सर्वसंभ्रम
मशाशांकमुपस्थितम् १०८ अहार्यमस्तं सम्यचिदात्मानमुपास्महे॥ क्षीरसमुद्रसे नहीं उतपन्न होया चंद्रमासे नहीं प्रकट होया गरुडादिकोंसे हरिया नहीं जाता ऐसा
जो सत्य अमृत चिदात्मा तिसकों अभ्यासी उपासते हैं १०८॥ शब्दरूपरसस्पर्शगन्धैराभासमागतम् १०९ तैरेव रहितं शान्तं चिदात्मानमुपागतः। शब्दरूपरसस्प
र्शगंधाकार दृष्टिआकार प्रकटताकों प्राप्त होता है आप शब्दस्पर्शादिकों कर रहित है ऐसे चिदात्माकों हौं प्राप्त भया १०९ आकाशकोशाविशदं सर्वलोकस्यञ्जन
म् ११० न व्यञ्जनं न चाकाशं चिदात्मानमुपागतः। आकाशमध्यभाग जैसा निर्मल है अपनी व्याप्तिकर सबलोककों प्रकट करता है वस्तुतः नरंजन है न आकाश है
ऐसे चिदात्माकों प्राप्त भया हौं ११०॥ महामहिम्ना सहितं रहितं सर्वभूतिभिः कर्तारमप्यकर्तारं चिदात्मानमुपागतः १११॥ महामहिमाकर सहित है सबजो हैं ए
श्वर्यादिकर रहित है सर्वका भी अकर्ता है ऐसे चिदात्माकों हौं प्राप्त भया हौं १११ अखिलमिदमहं ममैव सर्वं त्वहमपि नाहमथेतरन्न नाहम् इति वि
दितवतो जगत्कृते मे स्थिरमथवास्तु गतज्वरो भवामि ११२॥ इति मोक्षोपाये जीवन्मुक्तनिश्चययोगोपदेशो नामैकादशः सर्गः ११ तादात्म्य अध्यारोपदृष्टिक
र सर्वरूप हौं हौं संसर्ग आरोपदृष्टिकर मेरा ही सब है अपवाददृष्टिकर तो अहंभावके आरोपका निमित्त अहंकार भी नहीं हौं हौं अहंकारसे भिन्न जो देहादि
क सो तो अतिशयकर नहीं हौं इस प्रकार आरोप अपवाद दृष्टीकर तत्त्वकों जानता भया जो हौं सो कृतकों जगत् कृत्रिम मायामय है अथवा स्थिर रहो कृत्रिम
आत्मा ही हौं दोनों प्रकारोंकर मेरेकों भी ज्वररहित हौं ११२॥ निर्वाणभाषायां जीवन्मुक्तनिश्चयप्रकाशः सर्गः ११। श्रीवसिष्ठ उवाच इति निश्चयवन्तो ये म
हात्मानो विगतैनसः सत्याः सत्यपदे शान्ताः समे स्वमेव स्थिताः १ श्रीवसिष्ठ उवाच हे राम ऐसे निश्चयधारी सो जनकादिक जीवन्मुक्त महात्मा पापरहि
त सत्यरूप हैं मायारहित समता सत्यपदविषे स्वरूपकर स्थित हैं। १ इति सुधियो धीराः समनीरागचेतसः न निन्दन्ति न नन्दन्ति जीवितं मरणं तथा
२ ऐसे सुबुद्धी धीरजवंत वीतराग समता रहित चित्त जिनका सो जीवनकों तथा मरणकों न ही निंदते न ही स्तुति करते हैं २ अत्यन्तलीलाचमत्कार
नारायणभुजा इव ऋजवः सललिताकारा अपरा इव मेरवः ३ जैसे नारायणकि भुजा अलत्य अतिसुन्दर जो है निशाण तिसके तरणकरवे धने
के चमत्कारवालिआं हैं जैसे अतिसुन्दर लक्षजो है आलातिसका अखड्ग कारवृत्तीकर जानते रूपजो है वे धन चमत्कार रति सै समस्तुरूप हैं। कोधारते
सरल हैं नम्रस्वभाव हैं दूसरे सुमेरुपर्वत जैसे स्थिर हैं ३ रेमिरे वनखण्डेषु द्वीपेषु नगरेषु च देवोपवनमालासु स्वर्गेषु च सुराद्रिव ४ जीवन्मुक्तोंका
समदृष्टिकर विहार वर्णनकरते हैं वसिष्ठमुनि जीवन्मुक्त वनखण्डोंविषे द्वीपोंविषे नगरोंविषे भी रमतेभए देवोंके आवागमनकी आजो पंक्तिआं हैं तिनों
विषे तथा स्वर्गोंविषे देववासजैसे रमतेभए ४ मेरुशृङ्गेषु मत्तेषु दोलान्दोलचलासु च विचित्रवनलेखासु मेरुकूटेषु वासु च ५ मुख्याकार सर्मजो है तिनो वि
षे वनपंक्तिआं जी देखुटने करके चंचल जो हैं तिनोविषे भ्रमतेभए जैसे सुमेरुके शृङ्ग तिलकआंजो पिछोक ऊर्ध्वभाग हैं तिनोविषे भी भ्रमतेभए ५ चक्रुर्विजितश
त्रुणि चामरव्यञ्जनानि च विविधार्थानि राज्यानि चित्राचारमयानि च ६ ऐसे राज्यकरते भए कैसे जीते हैं शत्रु जिनोविषे चामरव्यञ्जनवाले विचित्र धर्मअर्थ
काम जिनोविषे विचित्र हैं आचारप्रधान जिनोविषे ६ अनुजग्मुः स्मार्तपदं यथाचारविचेष्टितान् श्रुतिस्मृतिनिदितान् स्मार्तकर्मप्रयुक्तानि ७ ...
विधुप्रसिद्ध जो हैं नाना आचार तिनोंकरके साधे जोहै वैदिक अथ पुरुषार्थ तिनोंके अनुसार चलतेभए वेदधर्मशास्त्रोंने कहे हैं निश्चय करके कर्तव्य
ल जिसकोएसी जो कर्तव्यता है तिसकोंकरते हैं सो णकर्मकरते हैं ७ रेमिरे रमणीयेषु ललनाहारस्पहारिषु विहाराहाररम्येषु भोगाभोगेषु भूमिषु ८
विलासोगादिरहित शरीरधन पुत्रादि सुख सम्पदाकर सुन्दर वनरस्त्रिआंके हस्सनेकरमनोहर मंदिरोंकर आहाराकरसुंदर ऐसेजोहै भोगोंकेसमू
ह तिनोंकर शोभित होते हैं ८ सचराचरभूतेषु विश्रान्ताः खिलजन्तुषु यज्ञक्रियाकलापेषु गार्हस्थ्येषु यथाक्रमम् ९ चर अचर प्राणिआं सहित जो
सब भुवन हैं तिनोंविषे सुखी होते हैं सबजीवजिनो करि ऐसे जो हैं अग्निहोत्रादिक यज्ञक्रियाके समूह तिनोंविषे होर जो है गृहस्थोंके धर्म तिनो
हु जाजपादिक नियमनेम किरिकाय रहस्य धर्म तिनोंविषे यथाक्रम वर्ततेभए ९ ते हृष्टगजेन्द्रासु भ्रान्तधर्माशिवासु च भेरीभाङ्कारभीमासु सङ्ग्रामालीषु वीर

शिषु ११ युद्धसमुद्रपंक्तिआंकेपार करतेभए कैसीआंहैंयुद्धसमुद्रपंक्तिआं नष्टहोपहेंगजराज जिनांविषें भ्रमतेभइआंबहुतगिद्धांजिनांवि
षें मेरिआंहैंभांकारशब्दकरभयंकरहोतिआंभइआं ११ तस्युःपरुषवित्रासुहृदविनोदतासच संरम्भलोभसौहृदसमर्थासुहृन्दरीतिषु १२ सबदुः
खरागद्वेषादिक जोहैंसबद्वंद्वरीतिआं विपत्तआदिकतिनांविषेंस्थितहोतेभए कैसिआंहैंद्वंद्वरीतिआं क्रूरक्लेशकेसहनेकोंसमर्थहोतेहैंचित्तजिनां
विषें क्रोधवेगकेतोभकरघोररूपतिआंभइआं १३ मनस्तेषाततीरागमनुपापितमतभ्रमम् असक्तसत्कमायायांत्परमसत्वपदंगतम् १४ ऐसेभ्रमनेकाव्यवहार।
विषेंवर्ततेभएजोजीवन्मुक्तिनकामन रागरहित उपाधिरहित भ्रमरहित असंग मुक्त परमशांत रजतमकेलेपरहित परमसत्वपदकोंप्राप्तहोताभया
१३ नमग्नःकचिदपिसंकटेषुमहत्स्वपि महत्स्वपुण्यातेष्वभ्रमशैलाःसरस्स्विव १४ महासंकटप्राप्तहूएभी किसेदेशकालविषेंभीशोकसमुद्रविषेंन
हीडूबतेभए महाऐश्वर्यकोंप्राप्तहोएभीहर्षविषेंनहीडूबतेभए जैसेकुलपर्वतहिमाचलादिकसरोविषें नहीडूबतेहैं १५ नोल्लासविलासिन्याश्रि
याप्येममनन्यया परिपूर्णोनुलक्ष्म्यैवजलराशीरिवेंदुना १५ हेरघुकुलकेउद्धारकरणेहारे जीवन्मुक्तपुरुषविलासिनीपरमसुंदरस्त्रीदर्शनकरकेअरु
लक्ष्मीकरकेहर्षकोंनहींप्राप्तहोताहै जैसेसमुद्रपरिपूर्णचन्द्रमाकोंपाकरकेउछलताहै तैसेजीवन्मुक्तनहींउछलताहै १५ नमम्लौदुःखशोकेन
ग्रीष्मेणेववनस्थलम् जहर्षचनभोगौघैराघवपादपैरिवौषधी १६ जैसेग्रीष्मऋतुकरवनस्थलमलिनहोताहै तैसेजीवन्मुक्तदुःखशोककरनहीमलिन
होताभया जैसेरात्रिकेओसबिंदुकरओषधिन्हीहर्षकोंप्राप्तहोतीहै तैसेजीवन्मुक्तबहुतेभोगसमूहकरनहीहर्षकोंप्राप्तहोताहै १६ तेहिकेवलम
व्यग्रःकुर्वन्नःकाममंजरीः इष्टानिष्टफलत्यागमनाभिलषन्नततुजः १७ सोजीवन्मुक्तसावधानकुरकेअभिमानरहितकेवल भोगरूपमंजरिआंका
अनुभवकरतेहोए इष्टफलकोंनहींचाहतेभए अनिष्टफलकोंनहीत्यागतेभए १७ नोद्वेगःकार्यसंपत्ताःवाक्रान्तानात्ममायया जहर्षनसुखप्राप्तोमम्लौ
नैतचसंकटे १८ शत्रुजयादिकार्यसिद्धिहोतेमहिमाकोंनहीप्राप्तहोतेभए शत्रूनेजितेहोएहीनताकोंनहीप्राप्तहोए सुखप्राप्तिहोएहर्षकोंनहीप्राप्तहो
संकटविषेंमलिननहींहोएजीवन्मुक्त १८ मुमुक्षुनेविमोहेषुनमग्नःविपत्सुकेषु नजहर्षसुखेशोकेरुरुदुर्नमवानिव १९ मोहकेकारणप्राप्तहोएजीवन्मु
क्तमोहितनहीहोतेभए विपदाकेप्राप्तहोएशोकविषेंमग्ननहीहोतेभए आभांकरकेहर्षकोंप्राप्तनहीहोए शोकांकरजेसेतुम्ररोतेभएतैसेजीवन्मुक्त
नहीरोतेभए १९ प्राकृताचारसंप्राप्तेकुर्वन्नःकर्मकेवलम् स्थितावितनसंरम्भमपतादेवमेरवः २० अपनेअपनेवर्णयोग्यजोआचारहैतिसकरप्राप्तजोहो
याकार्यतिसविषेंकेवलनिरभिमानहोएकर्मकरतेस्थितक्रोधादिवेगरहितनिश्चलहूएसवेसमेरुकेजैसेहैं २० तातेइमिमवष्टभ्यएवतेवाताविनाशि
नीम् अनहंकृतसंस्कारविहरस्वयथाक्रमम् २१ हेराघव पापांकेनाशकरणेवालीकहीजोजीवन्मुक्तांकीज्ञानदृष्टि तिसकोंतुमदृढधारकरअहंका
ररहित शुद्धचिन्मात्रविषेंआत्मबुद्धिकर शास्त्रक्रमकरसंसारविषेंविहारकर २१ यथाभूतामिमामेवमपरस्पर्गपरंपराम् मेरुस्थितोविगम्भीरःसमपा
त्सुगतभ्रमः २२ जैसेस्थितहैसर्गपरंपरातैसीइसकोंसाक्षीहोकरदेखतारोया सुमेरुजेसास्थिरस्वच्छजेसागंभीरभ्रमरहित समताअमररहो २२ चिन्मा
त्रसर्वमेवेदमित्यमाभासतांगतम् नेहसत्यमसंत्याकविद्यतेनकिंचन २३ सबहीएहजगतूस्थावरजंगमप्रकारकरजोभासताहैसोचेतन्यमात्रहीहै
इसजगत्विषें किसीदेशकालविषेंसत्यअसत्यवाअसत्यनहीहै तिसतेंनानारूपकछुभीवस्तुनहीं २३ महतामलमालम्ब्यपदमेवहेलया असक्तबु
द्धिःसर्वत्रभवभव्यभवतधी २४ एहनामरूपअनादरहष्टिकरत्यागकरआत्माकीपूर्णताधारकर हेभव्यमंगलस्वरूपहेराम सर्वत्रअसंगबुद्धिहो जन्मादि
कोंकातरयकातीहो २४ किंरोदिषिहेनोद्वेगमूढवज्ज्ञानुशोचसि भ्रमसन्नानचिन्त्यसोम्यावर्तेतृणंयथा २५ हेराम तुमबडेवेगकरकिउंरोतेहो मू
होजैसेकिउंशोककरतेहो हेशीतलस्वभाव जैसेजलकेभ्रमणविषेंतृणभ्रमताहैतैसेबहुतभ्रांतचित्तहुआकिउंभ्रमतेहो २५ श्रीरामउवाच अहोनुभ
गवन्नूनंसंप्राप्तोमलतयः त्वत्प्रसादादप्यनुदितस्सूर्येणादिवान्बुजम् २६ श्रीरामउवाच हेभगवन्निश्चयकरकेभलीप्रकारअविद्यामलकात्यागहु
वा तुमहारेप्रसादमात्रकरयत्नविनाही प्रबोधयुक्तहूआहौं पद्मआश्चर्यहोया जैसेसूर्यप्रकाशकेसंगसेंकमलप्रफुल्लितहोताहै २६ भ्रान्तिरस्तंगतानूनमि
हिकाशारदीवमे संशान्ताखिलसंदेहःकरिष्येवचनंतव २७ जैसेआश्विनकार्तिकविषेंमेघांकाकियादिशांकाअंधकारदूरहोताहै तैसेमेरीभ्रांतिनिश्चय
करनष्टहोईहै सर्वसंदेहशांतहोएहैं तुम्हारावचनकरोंगा २७ बापगतमदमोहोमानमात्सर्यमुक्तस्थिरतरमुदितात्मामाप्तशोकःस्थिरेस्तप्रबनरसुखमग
छन्नरछ्येकानतद्वायादिहवदसि साधोनतकारिषोविशंकम् २८ मोक्षोपायेनिर्वाणप्रकरणेजीवन्मुक्तसंशयनिराकरणंनामद्वादशःसर्गः १२ हेसाधोगुरोहैं
मदमोहसेंरहितहूआ मानमत्सरसेंछूटा आधिचिरसदामेराआत्माप्रकरहूआ चिरसेंशोकशांतहूआ एकआत्माविषेंनिश्चयजिसकाऐसीनिर्मलबुद्धि

करदेहाभिमानकृत दुःखकों [illegible] बहुतु कोंनहींप्राप्तहोउंगा जोतुमज्ञानकेदृढताकासाधन अथवाराज्यपरिपालनादिककार्यकरहोगे सोहमशं
काररहितसबकरोगे २८ इतिनिर्वाणभाषायांद्वादशःसर्गः १२। श्रीरामउवाच सम्यग्ज्ञानविलासेनवासनाविलयोदये जीवन्मुक्तपदेब्रह्मन्नंत्वेवि
श्रान्तवानस्म्य् १ प्राणस्पन्दनिरोधेनवासनाविलयोदये जीवन्मुक्तपदेब्रह्मन्नंत्वविश्रान्तवानपम् २ श्रीरामउवाच हेब्रह्मन यथार्थज्ञानविलासकरवा
सनाकेविनाशकाउदयहोते जीवन्मुक्तपदविखेंहो विश्रामकोप्राप्तहुआ निश्चयकर १ प्राणहेंगतिनिरोधकरवासनाकेविनाशकाउदयहोतेजीव
न्मुक्तपदविखेंकिसप्रकारविश्रामकरीताहै यहकहो २ श्रीवसिष्ठउवाच संसारोत्तरणेयुक्तिर्योगशब्देनकथ्यते तंविद्धिद्विप्रकारंत्वंचित्तोपशमधर्मि
णीम् आत्मज्ञानंप्रकारोस्यएकःप्रकटितोभुवि द्वितीयःप्राणसंरोधःश्रृणुयोगमिमोच्यते ४ श्रीवसिष्ठउवाच हेराम संसारसमुद्रतरणेकीयुक्ति योगशास्त्रक
रकहीतीहै सोतरणेकीयुक्तिदोप्रकारतुमजाण चित्तकीशांतिकरणाहैस्वभावजिसयुक्तिका ३ इसयोगकाएकप्रकारआत्मज्ञानहै सोपृथिवीवि
खेंप्रसिद्धहै दूसराप्रकारप्राणायामहै जोयहप्राणांकारोकणाहै सोइसकूकहीताहै तुमसुणो ४ श्रीरामउवाच सुलभत्वाद्दुःखत्वात्केनरःपोमनोव
योः येनावगतमात्रेणभूयःक्षोभोनबाधते ५ ज्ञानप्राणनिरोधइनादोनोंविखेंकोनश्रेष्ठहै जोसुखसाध्यहोवे दुःखनहींहोवे जिसकेप्राप्तिमात्रकर
बहुडविक्षेपदुःखनहींदेवे ५ श्रीवसिष्ठउवाच प्रकारौद्वावपिप्रोक्तौयोगशब्देनयद्यपि तथापिरूढिमायातःप्राणयुक्तावेवभृशम् ६ योगशास्त्रकरदोप्र
कारयद्यपिकहेहैं एकज्ञान दूसराप्राणनिरोध तथापिप्राणनिरोधविखें यहयोगशास्त्र बहुतप्रसिद्धहैजगतविखें ६ एकोयोगस्तथाज्ञानंसंसारोत्त
रणक्रमे समावुपायौद्वावेवप्रोक्तावेकफलप्रदौ ७ संसारसमुद्रतेउतरणेकेक्रमविखेंउपायदोंहीसमहैं एकयोग दूसराप्राणनिरोध निष्कामको
परमपदप्राप्तिरूपएकहीफलदेणहारेदोंहीहैं ७ असाध्यःकस्यचिद्योगःकस्यचिज्ज्ञाननिश्चयः ममत्वभिमतःसाधोसुसाध्योज्ञाननिश्चयः ८ प्राण

निरोधकेदुःखकोंजोनहींसहसकताहै ऐसाजोकोमलचित्तपुरुषहैतिसकोहठयोगअसाध्यहै कठोरचित्तजोहैविचारकरणेकोअसमर्थजिसकों
ज्ञाननिश्चयअसाध्यहै शुद्धचित्तजोहैविचारविखेंचतुरतिसकोंज्ञाननिश्चयसुखसाध्यहै यहमेरामतहैदृढ ८ अज्ञानंपुनरज्ञातंस्वप्नेष्वपिनन
श्यति ज्ञानंसर्वासुतस्यासुनित्यमेवप्रवर्तते ९ अज्ञानंसाक्षीचैतन्यसदाहीहै जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिविखें अज्ञानकोंअनुभवकरताहै अज्ञानअ
नजाण्याहुवा अवस्थाविखेंभीनहींहोताहै ज्ञानस्वरूपसाक्षीआपहीप्रकटहैनित्य ९ धारणासनदेशादिसाध्यत्वेनसमाध्यताम् नायातियोगोहायता
विकल्पोनैवशोभना १० योगदुःखकरसाध्यहै चित्तकेधारणाकादेशबाह्यपर्वतशिखरादिक अंदरकादेशहृदयकेतालुमूल
भ्रुवोंकामध्यइत्यादिक आसनकादेशसमपवित्र रोडरेतअग्निरहितशब्दरहितजलाशयरहित मनकेंकोप्रसन्नकरणेवाला ऐसास्थान
विखेंयोगसिद्धहोताहै शुभदेशकालविनायोगविनायोगनहींसिद्धहोताहै इसतेंकष्टसाध्ययोगहै अथवासुखसाध्यकहसाध्ययहविकल्प
चित्तानहींशुभहै धीरअधिकारीयत्नवानकोसवसुखसाध्यहै १० द्वावेवकिलसंप्रोक्तौज्ञानयोगौरघूद्वह तेनात्रभवतेज्ञानमनुःस्पन्दयेनिरु
लम् ११ हेरघूद्वहराम दोंहीशास्त्रविखेंमुक्तिकेसाधनकहेहैं एकज्ञान दूसरायोग तेरेताईज्ञानकथनकियाहै कैसाहैज्ञान जिसकेअंदरजाणने
जोगआत्माहैतिसकरनिर्मलहै ११ प्राणापानतयाऽदेहदेहगुहाशयःअनन्तसिद्धिदःप्रणोयोगोयदुच्छिदःस्मृतः १२ प्राणापानपवनकीसमतासि
द्धिरूपकरशरीरदेहरूपगुफाविखेंस्थितहै सिद्धिकामीकोंअनंतसिद्धिदाताहै ज्ञानकामीकोंआत्मसाक्षात्कारज्ञानदाताहै ऐसायोगहै सोतुमसुणो
१२ मरुदानिलस्फुरणनिरोधसंभवस्थितिंगतोनरपसन्तचेतसाऽस्ये समाहितस्थितिरिहयोगयुक्तिरूपयेपदेप्रगलितगीर्निवस्यसि १३ मोक्षोपायेज्ञा
नयोगविचारस्त्रयोदशःसर्गः १३ हेराजपुत्रराम उद्यमयुक्तचित्तकरप्रत्यक्षविखेंजोचलतेहैंप्राणतिनांकीगतिकेरोककरसिद्धहोतीस्थिरस्थिति
कोंप्राप्तहोराम इह आत्मस्वरूपअत्यन्तपरमपदविखें चित्तवृत्तिनिरोधरूपजोहैयोगतिसकेअभ्यासयुक्तितें निर्विकल्पसमाधिविखेंस्थितहोया
वाणीसेंनहींकहिआजाएऐसापरमानंदस्वरूपहोकरपरमपदविखेंनिवासकरेगा १३ इतिनिर्वाणभाषायांज्ञानयोगविचारयोगोपदेशस्त्रयोद
शःसर्गः १३ श्रीवसिष्ठउवाच अस्तितावदनन्तस्यतस्यक्वचिदयंकिल जगद्रूपःपरिस्पन्दोमृगतृष्णामराविव १ श्रीवसिष्ठउवाच हेराम अनंतपर

मात्माजोहैतिसकेकिसीअंशविखेंयहजगदाकारविवर्तहै जैसेमरुदेशविखेंमृगतृष्णाहै १ तत्रकारणतायातोब्रह्मलोकपितामहः स्थितःपितामहत्वेनसर्वलो
कप्रभुः २ तिसब्रह्माण्डविखेंमनुप्रजापतीकेकारणभावकोंप्राप्तहुआ आपविष्णुकेनाभिकमलसेंप्रकटहुआब्रह्मा लोकसमूहरूपप्रभुसवनकिआहैलोकों
केपितामहभावकरकेस्थितहै २ तस्मात्स्मानसःपुत्रोवसिष्ठःश्रेष्ठचेष्टितः अहंतत्रैवभुवनेनिवसामियुगस्थिति ३ तिसब्रह्माकेमनसेउत्पन्नहुआहोंवसिष्ठश्रेष्ठचे

हाधारी ध्रुवने धारिआ जो तारा चक्र तिसविषे वैवस्वत मन्वन्तर पर्यंत निवास करता है मन्वंतर प्रमाण ७१ चतुर्युग ३ सोहं कदाचिदास्थाने
स्वर्गे त्रिदशनायकेः श्रुतवानाखुरादिभ्यः कथाः सुचिरजीविनाम् ४ सो हों एक समय विषे स्वर्ग तिषे इंद्र की सभा विषे स्थित होता भया स
भा विषे नारदादिक सुनिआं ते अरु जी विआं की कथा को हों सुनता भया ४ कथाप्रसंगकसिंश्चिदयं तत्राभवाचह शातातपो नाम मुनि
मौनीमानी महामतिः ५ तिस सभा विषे नारदादिकों के वचन उपरंत किसी कथा प्रसंग विषे शातातप नामा मुनि वचन कहता भया कैसा है मुनि
सत्यभाषी प्रमाणों विषे चतुर मान ते योग्य महाबुद्धिमान् ५ मेरोरीशानकोणस्थे पद्मरागमये दिवि अस्ति कल्पतरुः श्रीमानुच्छ्रुतेरथिश्रुत: ६
एक कहता भया मुनि सुमेरु के ईशान कोण विषे पद्मरागमणिमय शिखर है तिस विषे चूतनामा कल्पवृक्ष प्रसिद्ध है आकाश विषे ऊंचा शोभ
ता है ६ तस्य कल्पतरोर्मूर्ध्नि दक्षिणस्कन्धकोटरे कलधौतलताजाले नीडोस्ति विहगालयः ७ तिस कल्पवृक्ष के मस्तक ऊपर दक्षिण पासे डाला है तिस
के होडर विषे पक्षिआं का घर है कैसा है होडर स्वर्णरूप बेलिआं कर लपटा है ७ तस्मिन्निवसति श्रीमान्भुशुण्डो नाम वायसः वीतरागो
वह लोक ब्रह्मवत् निजपर्क जे ८ तिस पक्षिआं के घर विषे शोभावान् भुशुण्ड नामा काक निवास करता है राग रहित जैसे ब्रह्मा वृद्ध है पद्मभाग जि
सका ऐसे अपने कमल विषे निवास करता है ८ न स यथा जगतां कोशे जीवतीह खगेश्वरः चिरंजीवी तथा स्वर्गे न भूतो न भविष्यति ९ सो भुशुण्ड प
क्षी जगत के मध्य विषे चिरकाल जीवता है जैसे तैसे स्वर्ग विषे चिरंजीवी न होता भया न होवेगा ९ महीबायुः स्तीरागः सश्रीमान्सम्महामतिः ।
स विश्रान्तमतिः शान्तः सकान्तः कालकोविदः १० सो भुशुण्ड चिरंजीवी है वीतराग है सो शोभावान है सो महाबुद्धि है सो आत्मा विषे विश्रांत बुद्धि है श
सी ते शान्त है सो सुंदर है सो काल गति का ज्ञाता है १० स यथा जीवति खगस्सपर्ययदि जीवति तदवजीवितं श्लाघ्यं पदं चैव दयमेव च ११ सो पक्षी जैसे जीवता है तैसे
जब जीवे जैसा चिरजीवनां साधन कराविषे पुण्य होवे फल दशा विषे परम पुरुषार्थ के उदय युक्त होवे ११ इति तेन भुशुण्डोसो भूयः पृष्ठनवर्णितः यथावद्दे
व देवानां सभायां सत्यमुक्तवान् १२ फिरी भी हम ने सत्य शातातप मुनि तिस ने प्रथम जैसे कथन किया है तैसे ही देव सभा विषे यथावत पक्षि
भुशुण्ड का वर्णन किआ है सत्य ही कहता भया सत्य तिमा ब्रवीति १२ कथावसरसंजातावधतातेमरक्षे जे भुशुण्ड विहङ्गमः स्यात् ...
१३ कथाप्रसंग के निवृत्त उपरंत देवों का समूह चलेगया ते कौतुक ते भुशुण्ड पक्षी के देखने निमित्त गया हों १३ भुशुण्डः संस्थितो यत्र मेरोः शृङ्गे त
त्र गमम् सम्प्राप्तवान्स्तोतारं पद्मरागमयं हरत् १३ जिस सुमेरु के शिखर विषे स्थित है भुशुण्ड सो उत्तम तिस लील पद्मरागमणिमय शिखर है तिस को देख
ता मात्र कर प्राप्त हुआ १४ रत्नमेरिककान्तेन तेजसा वह्निवर्चसा मध्या सर्वरसेनेव रञ्जयत्ककुभां गणम् १५ रत्नों कर शोभित आकारसुंदर अग्नि के तेज के
तुल्य जो तेज है तिस कर दिशा के समूह को लाल रंग करता है शिखर मदिरा सब के मद कर के जैसे लाल रंग होता है १५ कल्पान्तज्वलनोज्वालापिण्डा
भि विवस्थितम् इन्द्रनीलशिलाधूममालाकारालितांबरम् १६ कल्पान्त के अग्नि ते उपरंत निकलिआ जो ज्वाला का पिंड सोही मानो पर्वत ऊंचा शोभावाला
है इन्द्रनीलमणिआं की शिला जैसी जो ऊर्ध्व प्रभा सो है सजी सो विषे प्रकाशकर लाल किआ है अंबर जिसने ऐसा शिखर है १६ सर्वतामिव रागाणां राशिम
द्वाविवस्थितम् सर्वसंध्याभ्रजालानां चैनमेकमिवाकरम् १७ सब जो लाल रंग है सब का वास सर्व जो लाली है तिस कि आजो दर्शन की इच्छा है तिन का समू
ह जैसा शिखर सुमेरु पर्वत विषे स्थित है सब जो संध्या समय के लाल मेघ समूह है तिन की खानी तो न जैसा शिखर है १७ ऊर्ध्वाग्निरूप वनो भेरीरूपनाद
जैव निर्गतम् सर्वाग्निमानि कान्ते बाड वज्ञावरनलम् १८ सुषुम्ना नाडी के योग कर के ब्रह्मरन्ध्र को भेद कर निकलने को रक्षा करता जो सुमेरु है ति
स के उदर ते निकली जो है अग्नि सिर विषे प्राप्त होई बडवाग्नि के तुल्य चमकती सोई मानो शिखर है १८ सुमेरुवनदेवीनां लीलाकन्दुककल्पितम्
लीलयाऽऽरोपितं इन्दुलेखनीत हस्तशिलाङ्गुलिम् १९ सुमेरु वन देवी ने लीला कर चंद्रमा के लेने निमित्त आकाश विषे पसारिआ हाथ का मिला जैसे मि
लित अंगुलिआं का समूह रत्न ज्वाला ता रस कारण किआ मानो एह शिखर है १९ ज्वालामिरिव मालाभिर्दहन्तीभिः ... सुगत सिवसस्पन्दप्रोतस्य
मिव शाश्वतम् २० ... के यत्र की अग्नि माला जैसी आ ज्वाला कर चलिआं आकाश को ... ऊपर चढिआं ऊंचा सोही मानो एह
शिखर है कैसा है अग्नि होता दिस वधिआ ... विषे जिस के ... विषे भी ... है २० तारा: सत्कुसुमिताकाशमध्ये सोपितैव
त्रिभिः ककद्भन्यदौ ... परिचुम्बद्दिवाकरम् २१ कैसा है शिखर चमकते जो हर ... के किरण सोही है ... नखों के अग्र भाग जिन के वे सिआं जो है सूर्य
के अग्र भाग सो ही जो है अंगुलिआं तिनों कर तारा के स्पर्श करने निमित्त आकाश को व्याप्त हुआ जैसा ऊंचा है २१ गर्जज्जीमूतमुरजं भूभृत्तानान्तमण्डपम्
माने।

निर्गमनं:

२०

ब्राह्मण:

अग्नि:

ससत्कुसुमगुच्छाढ्यं धनसत्पुटपेटकम् २२ गर्जते हैं मेघ हीं सुरजना मे बाजे जिसविषे वनभूमिका नेत्र हकिआ जो वल्लतदमी आं तिनको नृत्यकाभंडपरे हस ते जो गुच्छ गुच्छे हैं तिनों कर युक्त है पाहू कर ते हैं भ्रमर समूह जिसविषे ऐसा शिखर है २२ दन्तताल दलावल्यापरिहासाद्विवस्फुरत दोलालोलासरोवृन्दं सुदावसदसन्नगम् २३ दन्तपंक्ति जैसी जो तालपत्रों की पंक्ति हैं विकसित तिसकर हास्यक्रीडा ते मानों फुरते हैं पीत विवेजूट तिस्तुंजे अप्सरोकासमूहसो जिसविषे हैं वज ते हो ते हैं मदअंर कामजिसविषे २३ शिलाविश्रान्तविबुधमिथुनाप्तिनर्वदरम् वराम्बरा जितं गंगा जयश्रीपवीतिव २४ तापसं पिङ्गलं शिववेत्तुदं दण्डथ धार्यिनम् गजानि करनिर्द्धीत लतागृहगतामरम् २५ शिलाविषे विश्राम में को प्राप्त हो ए जो देवस्त्री पुरुष तिनों ने प्राप्ति किआ है कंदरा जिसविषे रूयके पास रह्ता जो है पिंगल नाम तपसी तिसजैसा है श्रेष्ठ जो है आकाशसो नग्न चर्मधारिआ है निर्मल गंगाही यज्ञोपवीत धारिआ है वे लुदंड धारी स्थितहे गणधारावलके ध्वनिसाहित तल्ल ताम दिर्ते विवेस्थित हैं देवता जिसविषे ऐसा शिखर है २५ गन्धर्वगीतसुभगमामोदि मधुरानिलम् फलहेमास्तु जो गेसनारत्नविभूषितम् २६ आमूः पाराभिवशापिङ्गलमेरुशिरः गंधर्वाके गीत कर सुंदर है सुगंधि मधुर है पवन जिसविषे फलेजो हैं सुवर्णकमल सो हैं शिरके भूषण जिसके तारा रत्नों कर विशेष करशोभित है २६ आकाश के पार मानो जा पहा यहे वे साऊं चा पीला सुमेरु का शिखर है सितहरितपीतपाटलधवलैवनकुसुमराशिनवभैः दिवि विहिता मल चित्रलीलाचलमभरसुवितिवसस्य २७ सोतो पाये अपुड्डोणमाधवोने मेरुशिखर वर्णनं नाम चतुर्दशः सर्गः १४
२८ श्रीवसिष्ठउवाच कुसमादुर्लोक कल्याण कुनलेल सः मूर्धनि कल्पद्रुम महमद्राक्षं शालोपक्रत सफेद हरिआ पीला को मल अतिसुफेद जो हैं उस के समूह हों के सदा नवें रंग निर्माकर आकाश लिखे लिखे हैं निर्मल चित्र जिसने ऐसा जो है देवता के स्त्रिया का क्रीडा पर्वत सुमेरु का शिखर ऋतिसकों हों जोक्षम भया है तम २८ इति निर्वाण भाषा पंचदशः सर्गः १५ श्रीवसिष्ठउवाच जलधरोकल्याण अन्तलेन समूर्धनि कल्याणमहमद्राक्षं शाखोचकलितं स्थितम् १ उत्तुंक रचारिओर सतीजो है कल्याण का मेघ सो है लतामानके पास जिसके ऐसा जो है तिस शिखर का मस्तक तिस विषे हों कल्पवृक्ष को स्थित देखत भया कैसा है कल्पवृक्ष इट है अंग जिसके चक्राकार समहै शाखा जिसकी आ १ पुष्पारेण भूवलितं रत्नास्तवकदन्तुरम् उत्सेधनिर्जिताकाशं कृष्णं सिवासितम् २ कल्पवृक्ष के विशेष वारह से योजन पर्यंत ऊंचा है कैसा है कल्पवृक्ष पुष्पों की जो है रज सो ही मेघ है तिसकर रचा पडे रत्नों के गुच्छे ही कुचे ऊंचे हैं जिसके ऊंचिआई कर जीति आ है आकाश जिसने सुमेरु के शृंगविषे शृंग जैसा विधाता ने स्थापित किआ है २ ताराद्विगुणपुष्पौघं मेघद्विगुणपल्लवम् रश्मिद्विगुणोरव मंतर द्विगुणमञ्जरीम् ३ आकाश के तारे ते द्विगुणे हैं पुष्पों के समूह जिसविषे मेघसों द्विगुण हैं पत्र जिसविषे किरणों से द्विगुणे हैं पुष्परेणु मेघ जिस विषे बिजलीआं से द्विगुणिआं हैं मंजरिआं जिसविषे ३ स्कन्धेषु किन्नरीगीतद्विगुणभ्रमरस्वनम् दोलालोलाप्सरोलोकद्विगुणीकृतपल्लवम् ४ शाखों के संधिआं विषे स्थित जो हैं किन्नरिआं तिनों के गीत से द्विगुणा है भ्रमरों का शब्द जिसविषे डीगा विषे फूल विआं जो अप्सरा लोक तिनों के जो हैं ओठ हाथ पैर हीं पत्र तिनों ते द्विगुणे हैं पत्र जिसविषे ४ सिद्धगन्धर्वसंहारद्विगुणोद्यविटङ्कम् रत्नकान्तच्छन्नीहार द्विगुणाव गृहतास्तुकम् ५ विद्याविहारवाले ध्याय आहें पुरी आकाश रूप जिनो ने ऐसा जो है सिद्ध गंधर्व समूह तिनों से हुआ स्थित देवदी जिसविषे निर्मल नीहार ते द्विगुण जो रत्नों की कांति रूप त्वचा सोही मानो पहरिआ है वस्त्र जिसने ५ चन्द्रविम्बसमाश्लेषद्विगुणाङ्कर फलम् मृतमलीनकल्याण द्विगुणीकृतपर्वकम् ६ ऊंचाई कर चंद्रमंडल ताप जो हैं सयोग तिसने मानो अमृतरस कर भरे हुए द्विगुणे हैं अंकुर जिनके रस तो वडे हैं फल जिसके एतावा के मूल विषे स्थित जो हैं कल्याण के मेघ तिनों ने द्विगुण किआ है अंकुर जिसविषे ५ सुरसंवलितस्कन्धपत्रविश्रान्तकिन्नरम् निकुञ्ज [illegible] कक्षसमस्तविकसम् ७ देवताकर संयुक्त है स्कन्ध पत्र विश्राम करते हैं किन्नर जिसविषे वडे वडे जो है कुंज विषे स्थित हैं मेघ जिसविषे वृक्ष तल जलपुष्प स्थान विसेसने हैं देवादिक जिसविषे ७ साकार विपुल भङ्गानृत्ताय वलयस्वनैः अप्सरो भ्रमरी भिश्च दीनकुसुमान्तरम् ८ अप्सरों ने आकार करके वडे विलास वाला है अप्सरा रूप जो हैं भ्रमरिआं तिनों ने कंकणों के शब्द कर भ्रमरों को उडावकर लिआ है पुष्पों का रस जिसका ८ सुरकिन्नरगन्धर्वविद्याधरवरान्वितम् अग्रजलमिवानन्तदशाशाकाशपूरकम् ९ देवकिन्नरगंधर्व विद्याधरों विषे जो हैं श्रेष्ठ तिनों कर युक्त है ब्रह्माण्ड जैसा स्थित है अन्तरहित जो है दशदिशाएं आकाश तिनों के पूर्ण करने हारा है ९ नीरन्ध्रकलिकाजालं नीरन्ध्रमृदुपल्लवम् नीरन्ध्रविकसत्पुष्पं नीरन्ध्रवनमालिनम् १० नवी है कलिआं दासमूह जिसविषे नवे हैं कोमल पत्र जिसविषे नवे फूले हैं पुष्प जिसविषे नवी वनमाला युक्त है १० नीरन्ध्रमञ्जरीपुञ्जं नीरन्ध्रमणिगुच्छकम् नीरन्ध्राम्बुकरन्ताद्युलताविलसनाकुलम् ११ नवमंजरीआं युक्त है नवे मणि गुच्छाकार युक्त है नवे दिव्य वस्त्र लताकार युक्त है लतावन कर युक्त है ।
सर्वर्तुकुसुमापूरैः सर्वत्रफलपल्लवैः सर्वामोदरजःपुञ्जैः परैर्विविधमानतम् १२ सर्व ऋतु पुष्प समूहाकार सर्वत्र फल नव दलाकार सर्वसुगंधिरजःसमूहाकर परमविचित्र शोभा को प्राप्तहुआ

वांसः

स्त्राभाकुकैः

हे कल्पवृक्ष २२ तस्य कंदेषु कन्देषु लतापत्रेषु पर्वसु पुष्पेषु आलयं संलीनान्विहगान्दृष्टवानहम् २३ जिस कल्पवृक्ष के कुंजां विषें शाखा के पत्रां विषें गांठियां विषें पुष्पां वि
षें किर रहे हैं आह्लादित तिनां विषें बैठे पक्षियां को हौं देखता भया २३ निशानाथकलाखण्डमृणालशकलैर्धितान् अर्जुनाम्भोजिनीकन्दकवलाकुलमानसान् २४ ब्रह्मा के
वाहन हंसां को हौं देखता भया कैसे हैं हंस श्वेतके खंड जैसे जो हैं चंद्रकला के खंड तिनां करके दिये कौ ग्रास भये हैं सफेद जो है कमलिनियां के मूल तिनां को भी ग्रास करते हैं २४ विरिञ्चिरथहं
सानां पठता सामगाथिनः ओंकारवेदसंदेहे ब्रह्मविद्यानुशासनान् २५ ब्रह्मा के रथ के हंसां के बालक साम वेद गाते हारे ओंकार के वेदों के मित्र तिनां के तात्पर्य जानते हैं सगुण निर्गुण ब्रह्म
विद्या का अध्ययन गुरु मुख से किया है जिनां ने तिनां को हौं देखता भया २५ उच्चैर्मन्त्रनिचयान्स्वाहाकारनिमन्त्रणान् अस्थिनेकतडिद्गुञ्जनीलमेघसमोपमान् २६ अग्नि के वाहन जो तो
ते हैं तिनां को भी हौं देखता भया शुक्ल प्रकार किया है मंत्रसमूह जिनां ने स्वाहा के उच्चारण के ध्वनि जैसी ध्वनि जिनां की पांख अग्र अनेक बिजलियां के समूह नीलमेघ जैसे हैं रंग जिनां के २६
देवैर्निरीतितानग्नित्ययनवेदिलतादलान् शुकान्काशीनवाक्स्पामाशिखाशिखिशिखोशिखान् २७ कैसे हैं शुक देवां ने निमदिखी ने हैं यज्ञवेदिका विषें विषकाइयां जो हरियां कौ
शल तातिनां के दलां जैसे हरे रंग हैं जिनके ० सौमयूरबालकां को भी देखता भया कैसे हैं अग्नि की शिखा जैसी चमकती है शिखा जिनकी २७ गौरीरचितवर्हाणान्कोपाकान्वर
वर्हिणः स्कन्दापन्नकान्तिः शेषशेषविज्ञानकोविदान् २८ गौरी ने रचित किए हैं पंखों के समूह जिनके ऐसे जो स्वामिकार्तिके वाहन श्रेष्ठ मयूर तिनां को हौं देखता भया कैसे हैं स्वा
मिकार्तिक के ये नके हैं जो संकल्पे शिवशास्त्र तिनके जानने विषें चतुर हैं २८ श्रोत्रे तज्जानतन्तुशानामहता श्रमपक्षिणाम् वन्धनावद्दुनिलयाञ्चिरं च समाकृतीन् २९ आ
काशविषें ही उत्पन्न होते हैं आकाश विषें ही नष्ट होते हैं मरणपर्यन्त पृथिवी विषें नहीं उतरते हैं ऐसे जो आकाशपक्षी हैं तिनां के बच्चों को देखता भया कैसे हैं
बांधे हैं घर जिनां ने कार्तिक से बलय हैं आकार स्थान जिनके २९ चिरिञ्चिहंसजानुस्थानन्याशिष्य कोऽश्वान् कोमारवर्हिजानन्यानुन्यानस्वापलिजान् ३० ब्रह्मा
के हंसां ते उत्पन्न होए हैं सारे होरं अग्नि के शुकां ते उत्पन्न होए कार्तिक के मयूरों ते उत्पन्न होए ऐसे होरं आकाश पक्षियां ते उत्पन्न होए पक्षियां को हौं देखता भ
या ३० हितएकांश्च भरद्वाजान्हंसचूडान्विहङ्गमान् कलविंकवकान्गृध्रान्कोकिलान्क्रौञ्चकुक्कुटान् ३१ दोनों जो वाले भरद्वाज पक्षी सव की शिखा वाले हे मुरड
पक्षी चिड़े वगुले गृध्र कोकिल क्रौंच कुक्कुट इनां पक्षियां को हौं देखता भया ३१ भासचाषवलाकाटीन्वहून्नानाविधराघव भूतान्बुज्जगामीवाहहहष्टवास्तत्रपक्षिणः ३२
हे राघव तिस कल्पवृक्ष विषें वासे टिटिहे वलाका दिक पक्षी अरु और पक्षियां को भी हौं देखता भया जैसे जगत विषें शास्त्रियां का समूह है तैसे तिस कल्पवृक्ष विषें हैं ३२ दक्षि
णस्कन्धशाखायास्थितायावेदवीयसि अधोदृष्ट्वान्स्वपत्रायामम्वरस्थिताः ३३ काले कालवलयमञ्जरीजालमालितम् लोकालोकाचलस्तुपकल्पाश्चविमिवस्थित
म् ३४ हे राघव सके उपरांत दक्षिण पासे विषें स्थित जो है स्कन्ध शाखा पृथ्वी स्थित पुष्पपत्रांवालीनि तिस विषें स्थित जो है मंजरी समूह माला कार तिसकर संयुक्त द्रोणाकाकां देखे म
डल को दक्षिण पास दर्शन के उपरांत समय विषें देखता भया हौं कैसे हैं काक मंडल लोकालोक पर्वत के वनविषें कल्पांत के मेघसमूह जैसा स्थित है ३४ नवपत्रस्यास्यहयाव
देकाको स्कन्ध कोटरे विचित्रकुसुमा सारीतिविविधामादपालिनि ३५ पुल्पकुरुधीविताम्रगेप्रियुस्तवकुवासिताः अपरिदृष्टमिताकाराः सभार्यावायसाः स्थिताः ३६ तिमेहमेहावाने
न समेतेनवापसारिताः दक्षिण स्कंध के मध्य विषें जो है सभा तिस विषें निश्चलाकार काक स्थित है कैसे है काक वातने मेहां सम भाग खंड खंड करके मानो स्थापित किए हैं
कैसा है स्कंध का मध्य भाग विचित्र पुष्पां का वृक्ष उत्पन्न जिस विषें नानाप्रकार सुगंधा करशोभना है पुष्पक आंके स्त्रियां का स्वर्ग है सब वसते हैं ऐसे हैं काक प्रिय पुष्पगुं
च्छां करसुगंधित हैं ३५ ३६ तेषांमध्ये स्थितः श्रीमान्भुशुण्डः श्रान्तनामकृतिः ३७ मध्ये चकाचक्रवण्डानामिन्द्रनीलइवोत्थितः परिपूर्णमनामानीसमः सर्वाङ्गसुन्दरः ३८ प्राणस्प
न्दावधानेन निस्पन्दमनाः स्वः सच्ची चिरंजीवीतिविख्यातश्चिरजीवितयानया ३९ तिनां काकां के मध्य विषें स्थित शोभावान् शान्ति आकार भुशुण्ड काक है काचखंडां के म
ध्य विषें इन्द्रनीलमणि जैसा ऊंचा शुभ था है परिपूर्ण है मन जिसका सर्व का मान्य है समहै सर्व अंग हैं सुंदर जिसके प्राणस्पंदके निश्चलता कर निस्पंद मनवृत्ति स
ती है अति प्रसिद्ध चिरजीवने कर चिरंजीवी ऐसे प्रसिद्ध है ३९